इत्मामुल हुज्जत

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

Itmamul Hujjat
(in Hindi)

by

Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani[as]
The Promised Messiah and Imam Mahdi

इत्मामुलहुज्जत

(समझाने का अंतिम प्रयास पूर्ण करना)

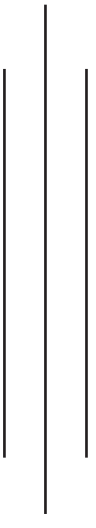

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

नाम पुस्तक	: इत्मामुलहुज्जत
Name of book	: Itmamul Hujjat
लेखक	: हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम
Writer	: Hazrat Mirza Ghulam Ahmad Qadiani Masih Mau'ud Alaihissalam
अनुवादक	: डा अन्सार अहमद पी.एच.डी आनर्स इन अरबिक
Translator	: Dr Ansar Ahmad, Ph.D, Hons in Arabic
संस्करण तथा वर्ष	: प्रथम संस्करण (हिन्दी) अगस्त 2018 ई०
Edition. Year	: 1st Edition (Hindi) August 2018
संख्या, Quantity	: 1000
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर (पंजाब)
Publisher	: Nazarat Nashr-o-Isha'at, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur, (Punjab)
मुद्रक	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस, क़ादियान, 143516 ज़िला-गुरदासपुर, (पंजाब)
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian, 143516 Distt. Gurdaspur (Punjab)

प्रकाशक की ओर से

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब क़ादियानी मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम द्वारा लिखित पुस्तक का यह हिन्दी अनुवाद श्री डॉ० अन्सार अहमद ने किया है और तत्पश्चात मुकर्रम शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री (सदर रिव्यू कमेटी), मुकर्रम फ़रहत अहमद आचार्य (इंचार्ज हिन्दी डेस्क), मुकर्रम अली हसन एम. ए., मुकर्रम नसीरुल हक़ आचार्य, मुकर्रम मोहियुद्दीन फ़रीद एम्. ए. और मुकर्रम इब्नुल मेहदी लईक़ एम्. ए. ने इसकी प्रूफ़ रीडिंग और रीवियु आदि किया है। अल्लाह तआला इन सब को उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

इस पुस्तक को हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ (जमाअत अहमदिया के वर्तमान ख़लीफ़ा) की अनुमति से हिन्दी प्रथम संस्करण के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

विनीत

हाफ़िज़ मख़दूम शरीफ़

नाज़िर नश्र व इशाअत क़ादियान

पुस्तक परिचय

इत्मामुल हुज्जत

यह पुस्तक हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मौलवी रुसुल बाबा अमृतसरी पर हुज्जत पूरी करने के लिए जून 1894 ई० में प्रकाशित की। इस पुस्तक का कुछ भाग अरबी भाषा में है और कुछ उर्दू में। इसके लिखने का कारण मौलवी रुसुल बाबा अमृतसरी की पुस्तक हयातुल मसीह हुई जिसमें हज़रत मसीह नासरी अलैहिस्सलाम के आसमान पर पार्थिव शरीर के साथ जीवित सिद्ध करने की नाकाम कोशिश की गई थी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस पुस्तक में क़ुर्आन करीम और हदीसों और अइम्मा और सल्फ़े सालिहीन के कथनों से मसीह अलैहिस्सलाम की मृत्यु पर संक्षिप्त परंतु व्यापक बहस की है। मौलवी रुसूल बाबा ने अपनी पुस्तक में उनकी दलीलों को रद्द करने वाले के लिए 1000 रुपए इनाम देने का भी ऐलान किया था। इसका वर्णन करके हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने लिखा:-

"कि वह जून 1894 ई० के अंत तक हज़ार रुपया ख्वाजा यूसुफ शाह साहिब और शेख़ गुलाम हसन साहिब और मीर महमूद शाह साहिब के पास अर्थात इन तीनों की सहमति से उनके पास जमा कराकर उनकी हस्तलिखित तहरीर के साथ हम को सूचित करें जिस तहरीर में उनका यह इक़रार हो कि 1000 रूपया हमने वसूल कर लिया और हम इक़रार करते हैं कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अर्थात इस

लेखक के विजयी सिद्ध होने के समय यह हज़ार रुपया हम अविलंब मिर्ज़ा साहिब को दे देंगे और रुसूल बाबा का इससे कुछ संबंध न होगा। (इत्मामुल हुज्जत, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 8, पृष्ठ 305)

और फैसला करने वाले के बारे में फरमाया कि हम इस बात पर राज़ी हैं कि शेख मुहम्मद हुसैन बतालवी या ऐसा ही कोई ज़हरनाक माद्दे वाला फैसला करने के लिए नियुक्त हो जाए। फैसले के लिए यही पर्याप्त होगा कि शेख़ बतालवी मौलवी रुसुल बाबा साहिब की पुस्तक को पढ़कर और ऐसा ही हमारी पुस्तक को आरंभ से अंत तक देखकर एक सामान्य जलसा में क़सम खा जाएं और क़सम का यह विषय हो कि- हे उपस्थित जनों ख़ुदा की क़सम मैंने आरंभ से अंत तक दोनों पुस्तकों को देखा और मैं ख़ुदा तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि वास्तव में मौलवी रुसूल बाबा साहिब की पुस्तक वास्तविक और विश्वसनीय तौर पर हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का जीवित होना सिद्ध करती है और जो विरोधी की पुस्तक निकली है उसके उत्तर से उसकी दलीलों का खंडन नहीं हुआ और अगर मैंने झूठ कहा है या मेरे दिल में उसके विरुद्ध कोई बात है तो मैं दुआ करता हूं कि एक साल के अंदर मुझे कोढ़ हो जाए या अंधा हो जाऊं या किसी और बुरे अज़ाब से मर जाऊं। तब तमाम उपस्थितजन तीन बार ऊंची आवाज़ से कहें- आमीन, आमीन, आमीन, और जलसा समाप्त हो।

फिर अगर एक साल तक वह क़सम खाने वाला उन बलाओं से सुरक्षित रहा तो निर्धारित कमेटी मौलवी रुसूल बाबा साहिब का हज़ार रुपया सम्मान पूर्वक उसको वापस दे देगी। तब हम भी इक़रार प्रकाशित करेंगे कि वास्तव में मौलवी रुसूल बाबा ने हज़रत ईसा

अलैहिस्सलाम का जीवित होना सिद्ध कर दिया है परंतु एक वर्ष तक बहरहाल वह निर्धारित कमेटी के पास जमा रहेगा और अगर मौलवी रुसूल बाबा साहिब ने इस पुस्तक के प्रकाशित होने से दो सप्ताह तक हज़ार रुपया जमा न करा दिया तो उनका झूठ और धोखा सिद्ध हो जाएगा। (इत्मामुल हुज्जत, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 8, पृष्ठ 305 306)

यह पुस्तक अमृतसर के रईसों और मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी और स्वयं मौलवी रुसूल बाबा साहिब को रजिस्ट्री करके भिजवा दी गई परंतु मौलवी रुसूल बाबा साहिब ने अपने हज़ार रुपए वाले इनाम के ऐलान का लिहाज़ न करते हुए चुप्पी साध कर अपना झूठा और बेईमान होना सिद्ध कर दिया।

मौलवी रुसल बाबा साहिब अमृतसरी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के कट्टर विरोधियों में से थे। आपने अपनी पुस्तक 'अन्जाम-ए-आथम' में उनकी गणना नौ प्रसिद्ध फ़साद फैलाने वाले विरोधियों में की है और अंतत: 8 दिसम्बर 1902 ई० को प्लेग से अमृतसर में उनका देहान्त हुआ।

ख़ाकसार

जलालुद्दीन शम्स

इत्मामुलहुज्जत

(समझाने का अंतिम प्रयास पूर्ण करना)

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡم

الحمد لله الذى يقيم حجته فى كل زمان، و يجدّد ملّته فى كل أوان، و يبعث مصلحا عند كل فساد، و ينتاب الخَلْقَ منه هادٍ بعد هادٍ، و يمنّ على عباده بإرائة طرق سَداد، و يسوّى الصراط للمتأهّبين. يهدى الخَلق بكتابه إلى أسراره، و لا يُسمَح عقل بكشف أستاره، يُلقى الروح على من يشاء من عباده، و يفتح على من

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

समस्त प्रशंसा अल्लाह के लिए है जो हर युग में अपनी हुज्जत स्थापित करता है। हर पल अपनी मिल्लत का नवीनीकरण करता और हर फसाद के अवसर पर सुधारक अवतरित करता और उसकी ओर से प्रजा में बार-बार एक पथ-प्रदर्शक के बाद दूसरा पथ-प्रदर्शक आता है वह सीधा मार्ग दिखाकर अपने बन्दों पर उपकार करता और तत्पर रूहों के लिए मार्ग प्रशस्त करता है। वह अपनी किताब के द्वारा प्रजा का मार्ग-दर्शन अपने रहस्यों की ओर करता है और बुद्धि की उसके अनावरण तक पहुँच नहीं। वह अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है अपनी रूह (कलाम) डालता है और जिन पर चाहे अपनी सच्चाई और हिदायत के दरवाज़े खोल देता है जिसके कारण उस व्यक्ति को न कोई मैल प्रदूषित कर सकता है और न कोई

يشـاء أبـواب إرشـاده، فـلا يغشـاه درنٌ ولا ينتطحـه قـرنٌ، ويُدخـله في الطيبـين. يدعـو مـن يشـاء، ويطـرد مـن يشـاء، ويُخيّـب مـن يشـاء، ويُعطـي مـن يشـاء مـن نعمـاء عظمـى، ويجعـل رسـالاته حيـث يشـاء، ويعلـم مَـن بهـا أحـقّ وأولى. النـاس كلّـهم ضالّـون إلّا مـن هـداه، وكلـهم ميّتـون إلا مـن أحيـاه، وكلـهم عُمـيٌ إلّا مـن أراه، وكلـهم جيـاع إلّا مـن غـذّاه، وكلـهم عِطـاش إلا مـن سـقاه، ومـن لـم يهـده فـلا يكـون مـن المهتديـن. والصـلاة والسـلام عـلى رسـوله ومقبـوله محمـد خـير الرسـل وخاتـم النبيـين، الذى جـاء بالنـور المنـير، ونـجّى الخلـق مـن الظـلام المبـير،

उसके बराबर का उससे टक्कर ले सकता है। ऐसे व्यक्ति को वह पवित्र लोगों में सम्मिलित कर लेता है। वह जिसे चाहे अपने हुज़ूर (सानिध्य)में मान्यता प्रदान करता है और जिसे चाहे धिक्कार देता है, जिसे चाहे असफल करता है और जिसे चाहे अपनी महान नेमतें प्रदान कर देता है। वह जहां चाहे अपनी रिसालत रख देता है और वह जानता है कि उसका सर्वाधिक अधिकारी तथा पात्र कौन है। (सच यह है कि) सब के सब लोग मार्ग से भटके हुए हैं सिवाये उनके जिन्हें वह हिदायत दे और सब मुर्दा हैं सिवाये उनके जिन्हें वह जीवित करे, और सब अंधे हैं सिवाये उनके जिन्हें वह दृष्टि प्रदान करे। और सब भूखे हैं, सिवाये उनके कि जिन्हें वह भोजन उपलब्ध करे और सब प्यासे हैं सिवाये उनके कि जिन्हें वह पिलाए, और जिसे वह हिदायत न दे वह हिदायत प्राप्त नहीं हो सकता। और दरूद एवं सलाम उसके रसूल और मक्बूल मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर जो खैरुर्रुसुल और ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं, जो उज्ज्वल प्रकाश लाए और

وخلّص السالكين من اعتياص المسير، وهيّأ لهم زادًا غير اليسير، وآتى صُحُفًا مُطهَّرة كشجرة طيّبة، اغتذى كل طالب بجَنى عُودها، ورغبت كل فطرة سليمة فى استشارة سعودها، وما بقى إلا الذى كان شقيَّ الازل ومن المحرومين۔ والسلام علىٰ آله الطيبين الطاهرين، الذين أشرقت الارض بنورهم، وظهر الحق بظهورهم، ولا شك أنهم كانوا بُدورَ الإمامة، وجبال طرق الاستقامة، ولا يُعاديهم إلّا من كان مورد اللعنة، وزائغا عن المحجّة، ورحِم الله رجلا جمَع حُبّهم مع حبّ الصُحبة أجمعين۔ وعلى أصحابه وصفوة أحبابه الذين كانوا له أتبَعَ مِن

जिन्होंने सृष्टि को तबह कर देने वाले अंधकारों से मुक्ति प्रदान की और धर्म के पथिकों को मार्ग की कठिनाइयों से मुक्ति दी तथा उनके लिए पर्याप्त मात्रा में रास्ते का खाना एवं खर्च उपलब्द किया और उन्हें पवित्र वृक्ष के समान ऐसे पवित्र धर्मग्रन्थ प्रदान किए जिन से हर सत्याभिलाशी ने उस वृक्ष के ताज़ा फलों से भोजन प्राप्त किया और हर सौम्य स्वभाव उसकी बरकतों को प्राप्त करने की ओर प्रेरित हुआ और सदैव के अभागे एवं वंचित के अतिरिक्त कोई भी (उन बरकतों से) वंचित न रहा और सलामती हो आप सल्लम की उस पवित्र और शुद्ध सन्तान पर कि जिन के प्रकाश से सम्पूर्ण पृथ्वी प्रकाशमान हो गयी और जिनके प्रकटन से सच प्रकट हुआ। निस्सन्देह ये लोग इमामत के पूर्ण चन्द्रमा और दृढ़ता के मार्गों के भारी पर्वत थे। इन लोगों से केवल वही व्यक्ति शत्रुता रखता है जो ला'नत का पात्र और अत्याचारी हो। अल्लाह दया करे उस व्यक्ति पर जिसने उन (अहले बैत)

ظِـلّه، وأطـوَعَ مـن فعـله۔ تركـوا بـروق الدنيـا وزينتهـا برؤيـة لَعْـلِه؛ ونهضـوا إلى مـا أُمـروا بإذعـان القلـب وسـعادة السـيرة، وجاهـدوا فى الله عـلى ضعـف مـن المريـرة، ومـا كانـوا قاعدين۔تبتّلـوا إلى الله تبتيـلا، وجمعـوا خزائـن الآخـرة ومـا ملكـوا مـن الدنيـا فتيـلا، ومـا مالـوا إلى امـتراء المِـيرة، وبذلـوا أنفسـهم لإشـاعة الملّة، وقَفَـوا ظـلالَ رسـول الله صـلى الله عليـه وسـلم حـتى صـاروا مـن الفانـين۔ شـرَوا أنفسـهم ابتغـاء مرضـاة الـربّ اللطيـف، ورضـوا لمرضاتـه بمفارقـة المألـف والإليـف، وأنحـوا

के प्रेम को समस्त सहाबा के प्रेम के साथ एकत्र किया और सलामती हो आप के सहाबा और आप के निष्कपट प्रेमियों पर जो आप के साए से भी बढ़कर आप के पीछे-पीछे चलने वाले और आपके पैर के जूते से अधिक आज्ञाकारी थे। उन्होंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बहुमूल्य पद्मराग रत्न को देख कर संसार की चमक और सज-धज को त्याग दिया और पूर्ण हार्दिक आज्ञापालन तथा फितरती सौभाग्य के साथ हर दिए गए आदेश का पालन करने के लिए उठ खड़े हुए और निर्बल हालत के बावजूद उन्होंने ख़ुदा के मार्ग में जिहाद किया और वे बैठे रहने वाले नहीं थे। उन्होंने अल्लाह के लिए पूर्ण रूप से एकांतवास ग्रहण किया और आख़िरत के ख़ज़ाने एकत्र कर लिए और संसार के माल से कुछ भी न लिया और भण्डार एकत्र करने की ओर न झुके। धर्म के प्रचार के लिए उन्होंने अपने प्राण दे दिए तथा रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सायों के पीछे-पीछे ऐसे चले कि बस लीन हो गए। उन्होंने उत्तम रब्ब की प्रसन्नता-प्राप्ति के लिए स्वयं को बेच दिया और उसकी खुशी के लिए अपने घर बार तथा प्रिय मित्रों के पृथक होने पर राज़ी हो गए।

أبصارهم عن الدنيا وما فيها، وأخذتهم جذبةٌ عظمى فجُذبوا إلى الله ربّ العالمين۔

أما بعد فاعلم أن أُخُوّة الإسلام يقتضى النصح وصدق الكلام، ومن أُعطىَ علمًا من علوم فأخفاه كسرٍّ مكتوم فهو أحد من الخائنين۔ وإن العلوم لا تنتهى دقائقها، ولا تُحصى حقائقها، ولا مانع لظهورها، ولا محاق لبدورها، وكم من علم تُرِك للآخرين۔ وقد علّمنى ربّى من أسرار، وأخبرنى من أخبار، وجعلنى

उन्होंने संसार और सांसारिक वस्तुओं से अपनी आंखें फेर लीं और उन पर एक बहुत बड़ा आकर्षण ऐसा छाया कि वे समस्त संसारों के प्रतिपालक अल्लाह की ओर खींचे चले गए।

तत्पश्चात्- तू जान ले कि इस्लामी भ्रातृ-भाव हमदर्दी और सच बोलने की मांग करता है और जिस व्यक्ति को कोई ज्ञान दिया गया फिर उसने उसे एक गुप्त रहस्य की भांति छिपाया तो वह एक बेईमान व्यक्ति है। ज्ञानों की बारीकियों का कोई अन्त नहीं तथा उनकी वास्तविकताएं असंख्य हैं। उनके प्रकटन में कोई बाधक नहीं और न ही उनके चन्द्रमाओं के लिए अन्धकारमय रातें हैं। बहुत से ज्ञान ऐसे भी हैं जो बाद में आने वालों के लिए छोड़ दिए गए हैं। वास्तविकता यह है कि मेरे रब्ब ने मुझे बहुत से रहस्य सिखाए हैं तथा (ग़ैब की) ख़बरों से सूचित किया है और उसने मुझे इस सदी का मुजद्दिद बनाया तथा अपनी विधाओं में बड़े विस्तार एवं विशालता के साथ मुझे विशिष्ट किया और मुझे अपने रसूलों का वारिस बनाया। यह उस (स्रष्टा) की शिक्षा की दानशीलता और समझे के अनुदानों में से है कि

مجـدّد هــذه المائــة، وخصّــنى فى علومــه بالبســطة والســعة، وجعلــنى لرســله مــن الوارثــين۔ وكان مــن مفائــح تعليمــه، وعطايــا تفهيمــه، أن المســيح عيســى بــن مريــم قــد مــات بموتــه الطبعــىّ وتُــوفّى كإخوانــه مــن المرســلين۔ وبشّــرنى وقــال إن المســيح الموعــود الذى يرقبونــه والمهــدى المســعود الذى ينتظرونــه هــو أنــت، نفعــل مــا نشــاء فــلا تكونــنّ مــن الممتريــن۔ وقــال إنّــا جعلنــاك المســيح ابــن مريــم، ففَــضَّ خَتْــمَ سِــرِّه وجعلــنى عــلى دقائــق الامــر مــن المطّلعــين۔ وتواتــرت هــذه الإلهامــات، وتتابعــت البشــارات، حــتى صــرتُ مــن المطمئنــين۔ ثــم تخــيّرتُ طريــق الحزامــة، ورجعــتُ إلى كتــاب الله خفــيرِ طــرق الســلامة، فوجدتُــه

मसीह इसा इब्ने मरयम अपनी स्वाभाविक मौत से मृत्यु को प्राप्त हुए और अपने दूसरे अवतार भाइयों के समान मृत्यु पा चुके हैं और उसने मुझे ख़ुशख़बरी दी और फ़रमाया कि मसीह मौऊद जिसकी वे राह देखते हैं और महदी मसूद जिसकी वे प्रतीक्षा कर रहे हैं वह तू ही है। हम जो चाहते हैं, करते हैं। इसलिए तू सन्देह करने वालों में से हरगिज़ न बन। और फ़रमाया : कि हमने तुझे मसीह इब्ने मरयम बनाया है। इस प्रकार उसने अपने रहस्य की मुहर को तोड़ा और इस बात की बारीकियों से मुझे अवगत कराया और ये इल्हाम इतनी निरन्तरता से हुए तथा ये ख़ुशख़बरियां बार-बार हुईं कि मैं पूर्ण रूप से संतुष्ट हो गया। फिर मैंने सावधानी और दूरदर्शिता का मार्ग अपनाया तथा सलामती के मार्गों की रक्षक अल्लाह की किताब की ओर लौटा तो मैंने उसको इस पर सबसे पहला गवाह पाया तथा

عليه أوّلَ الشاهدين۔ و أيُّ بيان يكون وضح من بيانه يَاعِيسٰى إِنِّي مُتَوَفِّيكَ؟ فانظُرْ، هداك الله قبلَ تَوَفّيك وجعَلك من المستبصرين۔

وأكّده الله بقوله فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي، ففَكِّرْ فيه يا من آذيتني، وحسبتني من الكافرين۔ وهذا نصّ لا يردّه قولُ مُبارٍ بآثار، ولا يجرحه سهمُ مُمارٍ في مضمار، ولا ينكره إلّا من كان من الظالمين۔ والذين غاض دَرُّ أفكارهم، وضعفت جوازل أنظارهم، لا ينظرون إلى كتاب الله وبيّناته، ويتيهون كرجل تبِع جهلاته، ويتكلمون كمجانين۔ يقولون إن لفظ التوفّي ما وُضِع لمعنى خاص بل عمّت معانيه، وما أُحكمتْ مبانيه، و كذلك يكيدون كالمفترين۔ وإذا قيل لهم إن هذا اللفظ ما

उसके वर्णन يَاعِيسٰى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ (अर्थात हे ईसा निस्सन्देह मैं तुझे मृत्यु दूंगा) से बढ़कर और कौन सा वर्णन स्पष्टतम हो सकता है? विचार कर! अल्लाह तआला तुझे तेरी मृत्यु से पूर्व हिदायत दे और तुझे प्रतिभाशाली बनाए।

अल्लाह तआला ने अपने कथन فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ (अर्थात जब तूने मुझे मृत्यु दे दी) से (मसीह की मृत्यु की आस्था) को पक्का कर दिया है। इसलिए हे वह व्यक्ति, जिसने मुझे कष्ट पहुंचाया और मुझे काफिरों में से शुमार किया। तू इस संबंध में विचार कर। और यह वह स्पष्ट आदेश है जिसे किसी विरोधी का कथन हदीसों से रद्द नहीं कर सकता और न ही मैदान में किसी विरोधी का बाण (तीर) उसे घायल कर सकता है, अत्याचारी के अतिरिक्त इसका कोई इन्कार नहीं कर सकता। वे लोग जिनके चिन्तन के झरने सूख चुके हों और उनकी दृष्टियां कमज़ोर और

جاء في القرآن كتاب الله الرحمن إلّا للإماتة وقبضِ الارواح المرجوعة، لا لقبضِ الاجسام العنصرية، فكيف تصرّون على معنى ما ثبت من كتاب الله وبيان خير المرسلين صلى الله عليه وسلم؟ قالوا إنّا ألفَينا آباء نا على عقيدتنا ولسنا بتاركيها إلى أبد الآبدين۔

ثم إذا قيل لهم إن خاتم النبيين وأصدق المفسرين فسّر هكذا لفظ التوفّي في تفسير هذه الآية؛ أعني تَوَفَّيْتَنِي، كما لا يخفى على أهل الدراية، وتبِعه ابن عباس ليقطع

खोटी हों वे ख़ुदा की किताब और उसके स्पष्ट तर्कों पर दृष्टि नहीं डालते और वे उस व्यक्ति की भांति भटके हुए हैं जो अपनी मूर्खतापूर्ण बातों का अनुयायी हो और पागलों जैसी बातचीत करते हैं। वे कहते हैं कि शब्द तवफ़्फ़ा विशेष अर्थों के लिए नहीं बनाया गया बल्कि उसके अर्थ सामान्य हैं और उसकी बुनियादें सुदृढ़ नहीं, और वे झूठ गढ़ने वालों की भांति छल करते हैं। और जब उन से यह कहा जाए कि कृपालु ख़ुदा की किताब क़ुर्आन में यह शब्द जहां भी आया है वहां इसके अर्थ केवल और केवल मारने और रूह की अन्तिम साँस को क़ब्ज़ करने को होते हैं न की पार्थिव शरीरों के क़ब्ज़ करने के। फिर तुम किस प्रकार उन अर्थों पर आग्रह करते हो कि ख़ुदा की किताब और खैरुर्रुसुल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बयान से सिद्ध नहीं? तो वे इसके उत्तर में कहते हैं कि हमने तो अपने बाप-दादों को अपनी इस आस्था पर पाया और हम उसको अनन्तकाल तक नहीं छोड़ सकते।

फिर जब उनसे कहा जाए सबसे बढ़कर सच्चे मुफ़स्सिर ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लम ने इस आयत की तफ्सीर (व्याख्या) में शब्द

عرق الوسواس، وقال متوفّيك مميتُك، فلِمَ تتركون المعنى الذى ثبت مِن نبىّ كان أوّل المعصومين، ومِن ابن عمّه الذى كان من الراشدين المهديين؟ قالوا كيف نقبل ولم يعتقد بهذا آباؤنا الاوّلون؟ وما قالوا إلّا ظلمًا وزورًا ومن الفِرْية ولم يحيطوا آراءَ سلفِ الامّة إلّا الذين قربوا منهم من المخطئين، وما اتبعوا إلا الذين ضلّوا من قبل من فَيْجٍ أعوَجَ ومن قوم محجوبين. فما زالوا آخذين بآثارهم حتى حصحص الحق، فرجع بعضهم متندّمين. وأمّا الذين طبَعَ الله على قلوبهم فما كانوا أن يقبلوا الحق وما نفعهم وعظ الواعظين. والعلماء

'तवफ्फा' अर्थात 'तवफ्फयतनी' की यही व्याख्या की है जैसा कि बुद्धिमानों से छिपा हुआ नहीं और हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने इनका अनुकरण किया है ताकि वे इस प्रकार के भ्रमों की जड़ काट दे। और उन्होंने 'मुतवफ्फीका' के अर्थ 'मुमीतुका' के किए है, तो फिर तुम क्यों उन अर्थों को छोड़ते हो जो प्रथम श्रेणी के मासूम नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के चाचा के बेटे से जो उच्च स्तर के शिक्षा-दीक्षा और हिदायत प्राप्त थे सिद्ध हैं? तो कहते हैं कि हम कैसे स्वीकार करें जबकि हमारे गुज़रे हुए बाप-दादे इस पर आस्था नहीं रखते थे। उन्होंने जो कुछ कहा है वह केवल अन्याय, असत्य और झूठ गढ़ना है। और उन्होंने उम्मत के पूर्वजों की रायों को परिधि में नहीं लिया सिवाए उन ग़लती खाए हुए लोगों के जो उनसे अधिक निकट थे और उन्होंने केवल फैजे आ'वज के उन लोगों का अनुकरण किया जो पहले ही गुमराह हो गए और वे क़ौम के वंचित लोगों में से थे। वे उन लोगों के कथनों को ग्रहण करते चले गए यहां

الراسخون يبكون عليهم ويجدونهم على شفا حفرة نائمين۔
يا حسرة عليهم! لِمَ لا يفكّرون في أنفسهم أن لفظ
التوفّي لفظٌ قد اتضح معناه من سلسلة شواهد القرآن، ثم
من تفسير نبيّ الإنس ونبيّ الجانّ، ثم مِن تفسير صحابيّ
جليل الشان، ومَن فسّر القرآن برأيه فهو ليس بمؤمن بل
هو أخ الشيطان، فأي حجة أوضحُ من هذا إن كانوا مؤمنين؟
ولو جاز صرفُ ألفاظ تحكُّمًا من المعاني المرادة المتواترة،
لارتفع الأمان عن اللغة والشرع بالكلية، وفسدت العقائد
كلها، ونزلت آفات على الملّة والدّين۔ وكل ما وقع في كلام

तक कि सच स्पष्ट हो गया। फिर उनमें से कुछ ने तो शर्मिन्दा होकर रुजू कर लिया। हाँ जिन के दिलों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी थी तो वे न तो सच्चाई को स्वीकार करने वाले हुए और न ही उपदेशकों के उपदेश ने उन्हें कोई लाभ पहुंचाया। हाँ ज्ञान में अटल विश्वास रखने वाले उलेमा इनकी हालत पर रोते हैं और उन्हें (विनाश के) गढ़े के किनारे पर सोए हुए पाते हैं।

हाय अफ़सोस उन पर! वे अपने दिलों में क्यों नहीं सोचते कि 'तवफ्फी' के शब्द के अर्थ क़ुर्आनी गवाहों की निरन्तरता, इन्सान और जिन्नों के नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के महामना सहाबी की तफ्सीर के द्वारा स्पष्ट हो गए हैं और जो क़ुर्आन की मनमानी तफ्सीर करता है वह मोमिन नहीं बल्कि शैतान का भाई है। यदि वे वास्तव में मोमिन हैं तो इससे बड़ा और कौन सा स्पष्ट तर्क हो सकता है और अगर शब्दों में उनके वांछित, निरन्तरतापूर्ण अर्थों से अधिकारिक तौर पर तसर्रुफ करना वैद्य हो तो

العرب من ألفاظ وجب علينا أن لا ننحت معانيها من عند أنفسنا، ولا نقدِّم الاقلّ على الاكثر إلا عند قرينة يوجب تقديمه عند أهل المعرفة، وكذلك كانت سُنن المجتهدين.

ولما تفرقت الامّة على ثلاث وسبعين فِرقة من الملّة، وكلٌّ زعم أنه من أهل السنّة، فأيُّ مخرج من هذه الاختلافات، وأيّ طريق الخلاص من الآفات من غير أن نعتصم بحبل الله المتين؟ فعليكم معاشر المؤمنين باتباع الفرقان، ومن تبِعه فقد نجا من طرق الخسران. ففكِّروا الآن، إن القرآن يتوفَّى المسيح ويكمل فيه البيان، وما خالفه

फिर शब्द कोश और शरीअत से पूर्णतया विश्वास उठ जाएगा और सब आस्थाएं बिगड़ जाएंगी और मिल्लत एवं धर्म पर आपदाएं उतरेंगी। और जब भी अरब के कलाम में कोई शब्द आए तो हम पर अनिवार्य है कि अपनी ओर से उसके अर्थ न बनाएं और कम प्रयोग होने वाले अर्थों को अधिक प्रयोग होने वाले अर्थों पर प्राथमिकता न दें। सिवाए इसके कि कोई ऐसा लक्षण मौजूद हो जो मारिफत वालों (अध्यात्मज्ञानियों) के नज़दीक उस अर्थ की प्राथमिक करता को अनिवार्य कर दे और यही कार्य-प्रणाली प्रयास करने वालों की रही है।

और जब उम्मत आस्थाओं की दृष्टि से तिहत्तर फ़िर्कों में विभजित हो गयी और हर एक ने यह समझा कि वह अहले सुन्नत में से है तो इन मत भेदों से निकलने का कौन सा मार्ग है और इन आपदाओं से छुटकारा प्राप्त करने का कौन सा उपाय है सिवाए इसके कि हम अल्लाह की मज़बूत रस्सी को दृढ़ता पूर्वक पकड़ लें। अत: हे मोमिनों के गिरोहो! तुम पर क़ुर्आन (हमीद) का अनुसरण अनिवार्य है और जिसने उसका

حديث فى هذا المعنى بل فسّره وزاد العرفان، وتقرأ فى البخارى والعينى وفضل البارى أن التوفّى هو الإماتة، كما شهد ابنُ عبّاس بتوضيح البيان، وسيّدُنا الذى إمام الإنس ونبىّ الجانّ، فأىّ أمرٍ بقى بعده يا معشر الإخوان وطوائف المسلمين؟

وقد أقرّ المسيح فى القرآن أن فساد أمّته ما كان إلا بعد موته، فإن كان عيسى لم يمت إلى الآن، فلزمك أن تقول إن النصارى ما أفسدوا مذهبهم إلى هذا الزمان. والذين نحتوا معنى آخر للتوفّى فهو بعيد عن التشقّى، وإن هو إلا من أهوائهم، وفساد آرائهم، ما أنزل الله به من سلطان،

अनुकरण किया तो वह निस्सन्देह घाटे के मार्गों से मुक्ति पा गया। इसलिए अब विचार करो कि पवित्र क़ुर्आन मसीह अलैहिस्सलाम को मारता है और उसके बारे में अपने वर्णन को पूर्ण करता है। कोई हदीस भी इस अर्थ में क़ुर्आन की विरोधी नहीं बल्कि वह इसकी तफ्सीर करती और इर्फान बढ़ाती है। तुम बुख़ारी, ऐनी और फज़लुलबारी में पढ़ते हो कि 'तवफ्फी' के अर्थ मारने के हैं, जैसा कि (हज़रत) इब्ने अब्बास रज़ि. और हमारे सरदार (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने जो समस्त इंसानों एवं जिन्नों के इमाम और नबी हैं, स्पष्ट वर्णन में साथ इसकी गवाही दी है। तो फिर हे भाइयो और मुसलमानों के गिरोहो! इसके बाद अन्य कौन सी बात शेष रह जाती है?

क़ुर्आन में मसीह का यह इक़रार मौजूद है कि उनकी मृत्यु के बाद ही उनकी उम्मत में बिगाड़ प्रकट हुआ। फिर यदि ईसा[अलैहिस्सलाम] की अब तक मृत्यु नहीं हुई तो तुम्हें अनिवार्य रूप से यह स्वीकार करना होगा कि ईसाइयों ने अब तक अपने धर्म को नहीं बिगाड़ा और जिन लोगों ने

كما لا يخفى على أهل الخبرة وقلبٍ يقظان. وإن لم ينتهوا حقدًا، وأصرّوا على الكذب عمدًا، فليُخرجوا لنا على معناهم سندًا، وليأتوا من الله ورسوله بشرح مستند إن كانوا صادقين. وقد عرفتم أن رسول الله صلى الله عليه وسلم ما تكلَّمَ بلفظ التوفّ إلا فى معنى الإماتة، و كان أعمقَ الناس علما وأوّلَ المبصرين. وما جاء فى القرآن إلّا لهذا المعنى، فلا تحرّفوا كلمات الله بخيال أدنٰى، ولا تقولوا لما تصِف ألسنتُكم الكذبَ ذلك حق وهذا باطل، واتقوا الله إن كنتم متقين.

'तवफ्फी' के कोई अन्य अर्थ बना लिए हैं तो ऐसे अर्थ सन्तोषजनक नहीं हैं और यह केवल और केवल उनकी इच्छाओं तथा उनके विचारों का दोष है। जिसके संबंध में अल्लाह तआला ने कोई दलील नहीं उतारी। जैसा कि यह बात बुद्धिमान और बुद्धि-कुशल वालों पर छिपी नहीं। यदि वे बैर रखने के कारण न रुके और जान-बूझ कर झूठ पर आग्रह करते रहे तो उनको (अपने) अर्थों के लिए हमारे सामने कोई प्रमाण प्रस्तुत करना चाहिए या यदि वे सच्चे हैं तो अल्लाह और उसके रसूल की कोई प्रमाणित व्याख्या (शरह) सामने लाएं। और तुम यह तो जानते हो कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 'तवफ्फी' का शब्द केवल इमातत (मृत्यु देना) के अर्थ में बोला है। आप समस्त इन्सानों में सब से गहरा ज्ञान रखने वाले तथा प्रथम श्रेणी के प्रतिभावक थे। क़ुर्आन में भी शब्द 'तवफ्फी' उन्हीं अर्थों में आया है। इसलिए तुम अल्लाह के वाक्यों में (अपने) घटिया विचार से अक्षरांतरण (तहरीफ़, अक्षरों में परिवर्तन) न करो और तुम उन चीज़ों के बारे में जीनके संबंध में तुम्हारी ज़बानें झूठ

لِمَ تتبعون غلطًا ورجمًا بالغيب، ولا تبغون تفسير مَن هو منزّه من العيب وكان سيّدَ المعصومين؟ فاجتنبوا مثل هذه التعصّبات، واذكروا الموت يا دُودَ الممات، أتُتركون في الدنيا فرحين؟ فاذكروا يومًا يتوفّاكم الله ثم تُرجعون إليه فُرادى فُرادى، ولا ينصركم مَن خالف الحق وعادى، وتُسألون كالمجرمين۔

وأمّا قول بعض الناس من الحمقى أن الإجماع قد انعقد على رفع عيسى إلى السماوات العُلى بحياته الجسماني لا بحياته الروحاني، فاعلم أن هذا القول فاسد ومتاع كاسد، لا يشتريه

वर्णन करती हैं यह न कहो कि वह सच है और यह असत्य है। यदि तुम संयमी (मुत्तक़ी) हो तो अल्लाह से डरो।

तुम ग़लत और अटकलपिच्चु (आस्था) के पीछे क्यों लगे हुए हो और उसकी तफ्सीर को पसन्द नहीं करते, जो हर दोष से पवित्र और समस्त मासूमों का सदाचार है (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अत: इस प्रकार के पक्षपात से बचो। हे मौत के कीड़ो! मौत को याद रखो (क्या तुम समझते हो कि) तुम्हें संसार में यों ही हर्षोल्लास में छोड़ दिया जाएगा। उस दिन को याद करो जब अल्लाह तुम्हें मृत्यु देगा। फिर तुम उसकी ओर एक-एक करके लौटाए जाओगे और कोई भी सच्चाई का विरोधी और दुश्मन तुम्हारी सहायता न कर सकेगा और तुम से अपराधियों की भांति पूछताछ की जाएगी।

रहा कुछ मूर्ख लोगों का यह कहना कि ईसा अलैहिस्सलाम के रूहानी जीवन के साथ नहीं बल्कि शारीरिक जीवन के साथ बुलंद आकाशों की ओर रफ़ा पर इज्मा (सर्वसम्मति)हो चुका है। इसलिए तू

إلّا من كان من الجاهلين. فإنّ المراد من الإجماع إجماع الصحابة، وهو ليس بثابت في هذه العقيدة، وقد قال ابن عباس متوفّيك مميتُك، فالموت ثابت وإن لم يقبل عفريتُك. وقد سمعتَ يا من آذيتني أن آية فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي تدل بدلالة قطعية وعبارة واضحة أن الإماتة التي ثبتت من تفسير ابن عباس، قد وقعت وتمّت وليس بواقع كما ظن بعض الناس. أفأنت تظن أن النصارى ما أشركوا بربهم وليسوا في شُرُك كالاسارى؟ وإن أقررت بأنهم قد ضلوا وأضلوا، فلزمك الإقرار بأنّ المسيح قد ماتَ وفاتَ، فإنّ ضلالتهم كانت موقوفة على

जान ले कि यह कथन केवल एक व्यर्थ बात तथा एक घटिया सौदा है जिसे केवल मूर्ख ही ख़रीद सकता है। इज्मा से अभिप्राय सहाबा का इज्मा है और वह इस आस्था के बारे में सिद्ध नहीं है। हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. ने 'मुतवफ्फीका' के अर्थ 'मुमीतुका' के किए हैं। अत: मृत्यु तो सिद्ध है चाहे तेरा भूत उसे स्वीकार न करे। हे वह व्यक्ति जिसने मुझे कष्ट दिया है! तुम ने यह सुना है कि आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي ठोस तर्क और स्पष्ट इबादत से इस बात की ओर मार्ग-दर्शन करती है कि जो मृत्यु (वफ़ात) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. की तफ्सीर से सिद्ध होती है वह घटित हो चुकी और अपनी पूर्णता को पहुँच गई न यह कि वह घटित होने वाली है जैसा कि कुछ लोगों का विचार है। क्या तुम विचार करते हो कि ईसाईयों ने अपने रब्ब के साथ भागीदार नहीं ठहराया? और क्या वे कैदियों के समान उसके जाल में गिरफ्तार नहीं हैं? यदि तुम यह इक़रार करते हो कि वे गुमराह हो चुके हैं और दूसरों को भी उन्होंने गुमराह किया हुआ है तो फिर अनिवार्य तौर

وفاة المسيح، فتفكَّر ولا تُجادل كالوقيح۔ وهذا أمر قد ثبت من القرآن، ومن حديث إمام الإنس ونبيّ الجانّ، فلا تسمع رواية تخالفها، وإن الحقيقة قد انكشفت فلا تلتفت إلى من خالفها، ولا تلتفت بعدها إلى رواية والراوى، ولا تُهلك نفسَك من الدعاوى، وفكِّر كالمتواضعين۔ هذا ما ذكّرناك من النبى والصحابة لنزيل عنك غشاوة الاسترابة، وأما حقيقة إجماع الذين جاءوا بعدهم، فنُذكّرك شيئا من كَلِمِهم، وإن كنتَ من قبل من الغافلين۔

पर तुम्हें इसका भी इक़रार करना होगा कि मसीह की मृत्यु हो चुकी। क्योंकि उन (ईसाइयों) की गुमराही (पथ भ्रष्टता) मसीह की मृत्यु पर निर्भर थी। इसलिए विचार कर और निर्लज्ज लोगों की तरह व्यर्थ बहस न कर। और यह (मसीह की मृत्यु का) मामला क़ुर्आन और इन्सानों एवं जिन्नों के इमाम और नबी (हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) की हदीस से प्रमाणित है। इसलिए तुम्हें किसी ऐसी रिवायत पर कान नहीं धरने चाहिए जो इनके विरोधी हो। वास्तविकता तो खुलकर सामने आ चुकी। इसलिए तुम किसी ऐसे व्यक्ति की ओर ध्यान मत दो जो इनका विरोधी हो और न ही तुम इस के बाद किसी रिवायत और रावी (वर्णन करने वाला) की ओर ध्यान दो। उन दावों के कारण स्वयं को तबाह न कर। और विनम्र लोगों की भांति सोच-विचार कर। यह नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा आदरणीय सहाबा रज़ि. की वह (आस्था) है जो हमने तुझे याद दिलाई है ताकि हम तुझ से सन्देह का पर्दा हटा दें। सहाबा के बाद आने वाले लोगों के इज्मा की वास्तविकता का जहाँ तक संबंध है

فاعلم أن الإمام البخاری، الذی کان رئیس المحدّثین من فضل الباری، کان أول المقرّین بوفاۃ المسیح، کما أشار إلیہ فی الصحیح، فإنہ جمع الآیتین لہذا المراد، لیتظاہرا ویحصل القوۃ للاجتہاد. وإن کنتَ تزعم أنہ ما جمع الآیتین المتباعدتین لہذہ النیّۃ، وما کان لہ غرض لإثبات ہذہ العقیدۃ، فبیّنْ لِمَ جمع الآیتین إن کنتَ من ذوی العینین؟ وإن لم تبیّن، ولن تبیّن، فاتّق اللّٰہ ولا تُصرّ علی طرق الفاسقین.

ثم بعد البخاری انظروا یا ذوی الابصار، إلی کتابکم المسلّم "مجمع البحار"، فإنہ ذکر اختلافات فی أمر عیسی

तो उनकी कुछ बातों की चर्चा हम बाद में तुम से करेंगे। यद्यपि तुम इस से पहले लापरवाह मात्र थे।

जान लो कि इमाम बुख़ारी रह. जो अल्लाह की कृपा (फ़ज़्ल) से मुबाहिसों (हदीस विदों)के सरदार थे वह सर्वप्रथम मसीह की मृत्यु का इक़रार करने वाले थे। जैसा कि उन्होंने अपनी सही (बुख़ारी) में इसकी ओर संकेत किया है। उन्होंने इन दो आयतों (فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي - اِنِّي مُتَوَفِّيْكَ) को इस उद्देश्य से एकत्र किया था कि वे दोनों एक दूसरे को शक्ति दें और कोशिश सुदृढ़ हो। यदि तुम्हारा यह विचार है कि उन्होंने इन दो परस्पर दूरी वाली आयतों को इस नीयत से एकत्र नहीं किया था, तथा उनका उद्देश्य इस आस्था (मसीह की मृत्यु) को सिद्ध करने का नहीं था। तो फिर यदि तुम देखने वाली आँख रखते हो तो बताओ कि उन्होंने इन दो आयतों को क्यों एकत्र किया? और यदि तुम इसका स्पष्टीकरण न कर सको और तुम हरगिज़ नहीं कर सकोगे तो फिर अल्लाह से डरो और गुनहगारों के मार्गों पर चलने की हठ न करो।

علیہ السلام، و قدّم الحیاۃ ثم قال: و قال مالك مات۔ فانظروا "المجمع" یا أهل الآراء، و خذوا حظّا من الحیاء، هذا هو القول الذی تکفرون به و تقطعون ما أمر الله به أن یوصل و باعدتم عن مقام الاتّقاء، ألیس منکم رجل رشید یا معشر المفتتنین؟ و جاء فی الطبرانی و المستدرك عن عائشة قالت قال رسول الله صلعم إن عیسی بن مریم عاش عشرین و مائة سنة۔ ثمّ بعد هذه الشهادات، انظروا إلی ابن القیّم المحدّث المشهود له بالتدقیقات، فإنه قال فی "مدارج السالکین" إنّ موسٰی و عیسٰی لو کانا حیّین ما وسعهم إلا اقتداء خاتم

हे प्रतिभाशाली लोगो! तुम फिर बुख़ारी के बाद अपनी मान्य किताब 'मज्मउल बिहार' पर विचार करो। उसने (हज़रत) ईसा अलैहिस्सलाम के मामले में मत भेदों का वर्णन किया है और पहले उनके जीवित रहने का वर्णन किया है और फिर कहा है कि मालिक रह. फरमाते हैं कि वह मृत्यु पा गए। हे बुद्धिमानो! मज्मउल बिहार को देखो और कुछ शर्म से काम लो। यह है वह कथन जिसका तुम इन्कार कर रहे हो और वह चीज़ जिसके बारे में अल्लाह तआला ने मिलाने का आदेश दिया है उसे काटते हो और संयम के स्थान से दूर हट गए हो। हे लोगों को भड़का कर दंगा करने वालो! क्या तुम में एक भी बुद्धिमान नहीं? तिबरानी और मुस्तदरिक में (हज़रत) आइशा रज़ि. से रिवायत है, वह वर्णन करती हैं कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ईसा इब्ने मरयम एक सौ बीस वर्ष जीवित रहे। फिर इन गवाहियों के अतिरिक्त इब्नुल क़य्यिम अल मुहद्दिस की ओर दृष्टि डालो जिनकी दूरदर्शिता का एक संसार गवाह है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'मदारिजुस्सालिकीन' में

النبيّين۔ ثم بعد ذلك انظروا فى الرسالة "الفوز الكبير وفتح الخبير" التى هى تفسير القرآن بأقوال خير البريّة، وهى من ولى الله الدهلوى حكيم الملّة، قال متوفّيك مميتُك۔ ولم يقل غيرها من الكلمة، ولم يذكر معنى سواها اتّباعا لمعنى خرج من مشكاة النبوّة۔ ثم انظر فى "الكشّاف"، واتق الله ولا تَخُتَرّ طرق الاعتساف كمجترئين۔

ثم بعد ذلك تعلمون عقيدة الفِرق المعتزلة، فإنهم لا يعتقدون بحيات عيسٰى، بل أقرّوا بموته وأدخلوه فى العقيدة۔ ولا شك أنهم من المذاهب الإسلامية، فإن الامّة قد افترقت

फ़रमाया है कि यदि मूसा अलैहिस्सलाम और ईसा अलैहिस्सलाम जीवित होते तो उन्हें हज़रत ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुकरण के अतिरिक्त कोई चारा न होता। इसके बाद पुस्तक अलफौज़ुल कबीर व फ़त्हुलख़बीर पर विचार करो जो खैरुलबरिय्य: सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कथनों से ही क़ुर्आन की तफ्सीर है और हकीमुल उम्मत (हज़रत) शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी की पुस्तक है। वह फ़रमाते हैं 'मुतवफ्फीका'='मुमीतुका'। उन्होंने इस वाक्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा और मिश्कात-ए-नुबुव्वत से ग्रहण किए अर्थ का अनुकरण करते हुए न ही इसके अतिरिक्त किसी और अर्थ का वर्णन किया है। फिर (अल्लामा ज़मख़शरी की पुस्तक) क़श्शाफ़ को देख और अल्लाह से डर तथा ज़ुल्म के मार्गों को दुष्टों की भांति ग्रहण न कर।

फिर तुम इसके बाद मो'तज़िला के फ़िर्कों की आस्था जानते हो कि वे मसीह के जीवित रहने की आस्था नहीं रखते, बल्कि उन्होंने उनकी मृत्यु का इक़रार किया है और उसे अपनी आस्था में सम्मिलित किया है।

بعد القرون الثلاثة، ولا ينكر افتراق هذه الملّة، والمعتزلة أحد من الطوائف المتفرّقة. وقال الإمام عبد الوهاب الشعرانى المقبول عند الثقات، فى كتابه المعروف باسم "الطبقات" و كان سيدى أفضل الدين رحمه الله يقول كثير من كلام الصوفية لا يتمشى ظاهره إلا على قواعد المعتزلة والفلاسفة، فالعاقل لا يُبعادر إلى الإنكار بمجرّد عزاء ذلك الكلام إليهم، بل ينظر و يتأمل فى أدلّتهم. ثم قال ورأيت فى رسالة سيدى الشيخ محمد المغربى الشاذلى اعلم أن طريق القوم مبنى على شهود الإثبات، وعلى ما يقرب من طريق

इसमें कोई सन्देह नहीं की वह इस्लामी पंथों में से हैं क्योंकि तीसरी सदी के बाद उम्मत फ़िर्कों में विभाजित हो गयी थी और इस मिल्लत के गिरोहों में विभाजित होने से इन्कार नहीं किया जा सकता, और मो'तज़िला* भी उन विभिन्न फ़िर्कों में से एक है। इमाम अबुल वहाब शो'रानी रह. जो विश्वस्त उलेमा के यहां, बहुत सर्वप्रिय हैं। वह अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'अत्तबक़ात' में कहते हैं कि "मेरे बुज़ुर्ग अफ्ज़लुद्दीन रह. फ़रमाते थे कि सूफियों का अधिकतर कलाम प्रत्यक्ष में मो'तज़िल: तथा दार्शनिकों के नियमों पर ही चलता है। अत: कोई बुद्धिमान व्यक्ति केवल इस कारण से कि यह तर्कशास्त्र उन (मो'तज़ल:) की ओर मनसूब होता है इसके इन्कार में जल्दी नहीं करेगा, बल्कि वह उनके इन तर्कों पर पूर्ण रूप से सोच-विचार करेगा। फिर वह (इमाम शो'रानी रह.) फ़रमाते है कि सय्यिदी अश्शौख़ मुहम्मद अलमग़रिबी अश्शाज़ली की पुस्तक में मैंने

---

* **मो'तज़िला -** एक सम्प्रदाय (फ़िर्का) जो कहता है कि ख़ुदा दिखाई नहीं दे सकता, और मनुष्य जो कुछ करता है स्वयं करता है, ख़ुदा कुछ नहीं करता। (अनुवादक)

المعتـزلة فى بعـض الحـالات۔ هـذا مـا نقلنـا مـن لواقـح الأنـوار، فتدبّـر كالأخيـار، ولا تعـرض كالأشـرار، ولا تخـترٌ سـبيل المعتديـن۔

وإن قلتَ إن الإجماع قد انعقد على عدم العمل بالمذاهب المخالفة للأئمّة الأربعة، فقد بيّنّا لك حقيقة الإجماع، فلا تصُلْ كالسِّباع، وفكِّرْ كأولى التقوى والارتياع، واذكر قول الإمام أحمد الذى خاف الله وأطاع، قال من ادّعى الإجماع فهو من الكاذبين۔ ومع ذلك نجد كثيرا من الاختلافات الجزئية فى الأئمّة الأربعة، ونجدها خارجة من إجماع الأئمّة،

यह देखा है। जान लो कि क़ौम (सूफियों) का सच को सिद्ध करने का तरीक़ा विश्वास पर आधारित है और कुछ परिस्थितियों में वह मो'तज़िल: की पद्धति के निकट है। यह हमने 'लवाक़िहुल-अन्वार' से नक़ल किया है। अत: चुने हुए लोगों की तरह विचार कर और दुष्ट लोगों की तरह विमुख न हो तथा सीमा का अतिक्रमण करने वालों का मार्ग न अपना।

यदि तुम यह कहो कि चारों इमामों के विपरीत आस्थाओं पर अमल न करने पर इज्मा हो चुका है तो हम तुम्हारे लिए इस इज्मा (सर्वसम्मति) की वास्तविकता वर्णन कर चुके हैं। अत: तू दरिन्दों की भांति आक्रमणकारी न हो बल्कि मुत्त्कियों और संयमियों की भांति सोच। और इमाम अहमद रह. जो ख़ुदा का भय रखने वाले और उसके आज्ञाकारी थे उनके इस कथन को भी स्मरण रख। उन्होंने फ़रमाया कि जो इज्मा का दावा करे वह झूठों में से है। इसके अतिरिक्त हम चारों इमामों में बहुत से आंशिक मतभेद पाते हैं और उन्हें इमामों के इज्मा से बाहर पाते हैं। अत: इन मामलों तथा उनके

فما تقول فی تلك المسائل و فی قائلها؟ أأنت تقرّ بغوائلها، أو أنت تجوّز العمل علیها و التمسك بها و لا تحسبها من خیالات المتبدِّعین؟ و أنت تعلم أن الإجماع لیس معها و مع أهلها، و کل ما هو خارج من الإجماع فهو عندك فاسد و متاع کاسد، و تحسب قائلها من الملحدین الدجّالین. و إن کنتَ تزعم أن الإجماع قد انعقد علی حیات عیسی المسیح بالسند الصحیح و البیان الصریح، فهذا افتراء منك و من أمثالك، ألا لعنة الله علی الکاذبین المفترین. أیّها المستعجلون لِمَ تسعون مکذبین؟ و من أعظم المهالك تکذیب قوم کُشِف علیهم ما لم یُکشف علی غیرهم

मानने वालों के संबंध में तुम क्या कहते हो? क्या तुम इन मामलों की तबाही की शाबाशियों के इक़रारी हो या उन पर अमल करने और उन पर दृढ़तापूर्वक स्थापित हो जाने को वैध समझते हो? और उन्हें बिदअतों (धर्म में शरिअत से हटकर नई बातों का समावेश करना) के विचार नहीं मानते? और तुम जानते हो कि इज्मा इस आस्था का और इस आस्था के मानने वालों का साथ नहीं देता, बल्कि हर वह बात जो इज्मा से बाहर हो वह तुम्हारे नज़दीक खराब और बेकार माल है तथा इस आस्था के मानने वालों को तुम नास्तिक और दज्जाल समझते हो। और यदि तुम्हारा यह विचार है कि सही प्रमाण तथा स्पष्ट वर्णन से ईसा अलमसीह के जीवित रहने पर इज्मा हो चुका है तो यह तुम्हारा और तुम्हारे जैसों का बनाया हुआ झूठ है। स्मरण रखो कि झूठ गढ़ने वालों पर ख़ुदा की लानत है। हे जल्दी करने वालो क्यों झुठलाते फिरते हो। और सबसे बड़ी तबाही उन लोगों को झुठलाना है जिन पर सच और विश्वास के मार्गों की बारीकियों में से वे प्रकटन हुए जो उनके अतिरिक्त दूसरों

من دقائق سبيل الحق واليقين. وكم من أُناس ما أهلكهم إلّا ظنونهم، وما أرداهم إلا سبّ الصادقين. دخلوا حضرة أهل الله مجترئين، وما كان لهم أن يدخلوها إلا خائفين.

وإن المنكرين رموا كل سهم وتبعوا كل وهم، فما وجدوا مقاما في هذا الميدان، وجاهدوا كل جهد فما بقى عندهم سوى الهذيان، فلما انثلت الكنائن، ونفدت الخزائن، ولم يبق مفرّ ولا مآب، ولا ثنية ولا ناب، مالوا إلى السبّ والتكفير، والمكر والتزوير، لعلهم يغلبون بهذا التدبير، حتى اجترأ بعض الناس من وساوس الوسواس الخنّاس

पर नहीं हुए थे। कितने ही लोग हैं जिन्हें केवल उनकी कुधारणाओं ने ही तबाह किया (मारा) और सच्चों को गालियां देने ने तबाह किया। इन्होंने वलियों के यहां गुस्ताखी (घृष्टता) से प्रवेश किया, हालांकि उन्हें वहां डरते हुए प्रवेश करना चाहिए था।

इन्कार करने वालों ने हर तीर चलाया और हर भ्रम का अनुकरण किया, परन्तु वह इस मैदान में ठहर न सके तथा उन्होंने अत्यधिक प्रयास किया, परन्तु बकवास के अतिरिक्त उनके पास कुछ न रहा। अत: जब (उनके) निषंग (तरकश) ख़ाली हो गए और खज़ाने समाप्त हो गए तथा उनके लिए भागने और शरण लेने का कोई स्थान शेष न रहा और उनके न दांत रहे न कुचलियां। तो उन्होंने गाली-गलौज, काफ़िर कहना और छल-कपट की ओर मुख किया, इस आशा से कि वे इस उपाय से विजयी हो जाएंगे। फिर उनमें से एक व्यक्ति ने भ्रम डालने वाले शैतान के भ्रमों के प्रभाव के अन्तर्गत क़लम चला कर जन साधारण को धोखा देने का साहस किया तथा इस उद्देश्य से एक पुस्तक लिखी। किन्तु

عـلى أن يخـدع بعـض العـوام بصريـر الاقـلام، فألّـف كتابـا لهـذا المـرام، وقيّـض القـدر لهتـك سـتره أنـه أشـاع الكتـاب بشـرط الإنعـام، وزعـم أنـه سـكّتَنا وبكّتَنـا وأتى مراتـب الإفحـام، وصـار مـن الغالبـين. فنهضنـا لنعجُـم عُـودَ دعـواه، وماء سُـقياه، ونمـزّق الكـذّاب وبلـواه، ونُـرى جنـوده مـا كانـوا عنـه غافلـين.

فـإن إنعامـه أوحـشَ الذيـن هـم كالانعـام، وإعلامـه أوهـشَ بعـضَ العَيْـلام، ومـا علمـوا خبـث قـوله وضعـف صـوله، وحسـبوا سـرابه كمـاء معـين. وكنـتُ آليـتُ أن لا أتوجّـه إلّا إلى

ख़ुदा का प्रारब्ध कि इनाम की शर्त पर जो उसने पुस्तक प्रकाशित की वही उसके दोषों के प्रकट होने का कारण बनी। उसने दावा किया कि उसने हमें खामोश और गूंगा कर दिया है और निरुत्तर करने के समस्त सोपान तय कर लिए हैं और वह विजयी लोगों में से हो गया है। इस पर हम उठ खड़े हुए ताकि हम उसके दावे की वास्तविकता और उस के घाट के पानी को परखें और महा झूठे तथा उसके उपद्रव को टुकड़े-टुकड़े कर दें और उसकी सेना को वह कुछ दिखा दें जिस से वे लापरवाह थे।

उस व्यक्ति के इस इनाम ने जानवरों वाली विशेषता रखने वाले लोगों को वहशी (उजड्ड) बना दिया और उसकी घोषणा ने लगड़-बगड़ विशेषता रखने वाले लोगों को आश्चर्य के भंवर में डाल दिया तथा वे उसकी बातों की कमीनगी और उसके प्रहार की कमज़ोरी को न जान सके। और उन्होंने उसकी मृग-तृष्णा को जारी मधुर झरना समझा। मैंने यह क़सम खा रखी थी कि केवल अहम (मुख्य) मामले की ओर ही ध्यान

أمر ذي بال، ولا أضيع الوقت لكل مناضل ونضال، ورأيتُ تأليفه مملوّا من الجهلات، ومشحونا من الخزعبلات، ومجموعا من ديدن الغباوة، وموضوعا من قريحة الشقاوة، فمنعتني عزّةُ وقتي وجلالة همّتي أن ألطّخ يديّ بدم هذا الدود، وأبعد عن أمر المقصود، ولكني رأيت أنه يخدع كلَّ غمر جاهل بإراءة إنعامه وتُرّهات كلامه، ولو صمتنا فلا شك أنه يزيد في اجترامه، ويخدع الناس بتزوير إفحامه، وإنه ولَجِ الفخّ فنرى أن نأخذه ثم نذبحه للجائعين. وإنه يطير طيران الجراد، ليأكل زرع ربّ العباد، فرأينا لتائيد عين الحقيقة

दूंगा तथा बहस-मुबाहस: में समय नष्ट नहीं करूंगा। मैं ने उस व्यक्ति (रुसुल बाबा) की पुस्तक को मूर्खतापूर्ण बातों और बकवासों से भरा हुआ तथा मानसिक गिरावट की प्रकृति का संग्रह और दुर्भाग्यपूर्ण स्वभाव से मिश्रित पाया। और इसलिए मेरी फ़ुर्सत के अभाव और मेरे बड़े होसले ने मुझे इस बात से रोके रखा कि मैं इस कीड़े के ख़ून से अपने हाथों को गन्दा करने और मूल उद्देश्य से दूर हो जाऊं। किन्तु मैंने देखा कि यह व्यक्ति अपने इनाम के प्रस्ताव से और डींगे मारने से असम्य उजड्ड वर्ग को धोखा दे रहा है और यही कि यदि हम खामोश रहे तो निस्सन्देह अपने आराधों में और बढ़ जाएगा तथा निरुत्तर करके अपने झूठे दावे से लोगों को धोखा देगा और यह कि शिकार जाल में फंस चुका है, तो हमने यही उचित समझा कि उस (शिकार) को पकड़ कर भूखों के लिए ज़िब्ह कर दें और यह कि वह टिड्डी-दल की तरह उड़ रहा है ताकि वह लोगों के प्रतिपालक (रब्ब) की खेती चट कर जाए। तो मैंने सच्चाई के झरने और उसके जारी पानी के समर्थन में यही उचित समझा कि हम

ومجاريها، أن نصطاد هذه الجراد مع ذراريها، ونُنجّ الخلق من كيد الخائنين. فوالذي حبانا بمحبّته، ودعانا إلى تائيد أحبّته، إنّا لا نرغب في عطاء هذا الرجل وإنعامه، بل نحسبه فضولا كفضول كلامه، وما نريد إلا أن نُريه جزاء اجترامه، لئلا يغترّ بعض الجهلة من المتعصّبين.

فاعلم يا من ألّف الكتاب ويطلب منّا الجواب، إنا جئناك راغبين في استماع دلائلك، لننجيك من غوائلك، ونجيح أصل رزائلك، ونريك أنك من الخاطئين. وأنت تعلم أن حمل الإثبات ليس علينا بل على الذي ادّعى الحياة ويقول

उस टिड्डी तथा उसके बच्चों का शिकार करें और बेईमानी के कपट से ख़ुदा की प्रजा को मुक्ति (निजात) दें। अत: उस हस्ती की क़सम! जिसने हमें प्रेम से सम्मानित किया और अपने प्रियजनों की सहायता के लिए बुलाया। कि हमें इस व्यक्ति के अनुदान और पुरस्कारक में कोई रूचि नहीं बल्कि हम उसे उसके बेहूदा कलाम की तरह बेहुदा ही समझते हैं। हमतो केवल यही चाहते हैं कि उसको उसके अपराध का दण्ड दिखा दें ताकि कुछ पक्षपाती मुर्ख धोखा न खाएं।

अत: हे वह व्यक्ति जिसने यह पुस्तक लिखी है और जो हम से उत्तर मांगता है तुझे ज्ञात हो कि हम यह इच्छा लेकर तेरे पास आए हैं कि तेरे तर्कों को ध्यान पूर्वक सुनें और तुझे तेरी तबाही की शाबाशियों से बचाएं तथा तेरी कमीनगियों की जड़ काट के रख दें और तुझे बता दें कि तू दोषी है और यह तो तू जानता ही है कि सबूत देने का भार हम पर नहीं बल्कि उस पर है जो मसीह के जीवित रहने का दावेदार है और यह कहता है कि ईसा मरे नहीं और न ही मुर्दों

إن عيسى ما مات وليس من الميتين۔ فإن حقيقة الادّعاء اختيار طرق الاستثناء بغير أدلّة دالّة على هذه الآراء، أعنى إدخال أشياء كثيرة فى حكم واحد، ثم إخراج شيء منه بغير وجه الإخراج وسبب شاهد، وهذا تعريف لا ينكره صبى ولا غبى، إلّا الذى كان من تعصّبه كالمجنونين۔

فإذا تقرّر هذا فنقول إنّا اذا نظرنا إلى زمان بُعث فيه المسيح، فشهد النظر الصحيح أنه كل من كان فى زمانه من أعدائه وأحبّائه وجيرانه وإخوانه وخلانه وخالاته وأمهاته وعمّاته وأخواته، وكل من كان فى تلك البلدان والديار وا لعمران، كلهم ماتوا ومانرى

में सम्मिलित हैं। तर्कों के बिना अपवाद की पद्धति को ग्रहण करने के दावे की वास्तविकता ऐसी ही निराधार रायों का पता देतीं हैं। मेरा तात्पर्य यह है कि बहुत सी चीज़ों का एक आदेश में लाना और फिर उसमें से किसी चीज़ को बाहर करने और सबूत के कारण के बिना उस से बाहर कर देना यह ऐसी परिभाषा है जिसका न तो कोई बच्चा इन्कार कर सकता है और न ही मूर्ख, सिवाए उस व्यक्ति के जो उन्मादियों जैसा पक्षपात रखता हो।

फिर जब यह बात ठोस तौर पर सिद्ध हो गयी तो हम कहते हैं कि जब हम उस युग पर दृष्टि डालते हैं जिसमें मसीह अलैहिस्सलाम अवतरित किए गए तो हमारी सही दृष्टि इस बात की गवाही देती है कि आप के युग के समस्त लोग, चाहे आप अलैहिस्सलाम के शत्रु हों या मित्र हों, पड़ोसी हों, भाई हों, यार-दोस्त हों, खालाएँ (मासियाँ) हों, माएं हों, फुफियाँ हों और बहनें हों तथा वे सब जो उन क्षेत्रों, शहरों और आबादियों में रहते थे वे

أحدا منهم في هذا الزمان؛ فمَن ادّعى أنّ عيسى بقي منهم حيّا وما دخل في الموتى فقد استثنى، فعليه أن يُثبت هذا الدعوى۔ وأنت تعلم أن الأدلة عند الحنفيّين لإثبات ادعاء المدّعين اربعة انواع كما لا يخفى على المتفقهين۔ الأوّل قطعيّ الثبوت والدلالة وليس فيها شيء من الضعف والكلالة، كالآيات القرآنية الصريحة، والأحاديث المتواترة الصحيحة، بشرط كونها مستغنية من تأويلات المؤوّلين، ومنَزّهة عن تعارض وتناقض يوجب الضعف عند المحققين۔ الثاني قطعي الثبوت ظنّي الدلالة، كالآيات والأحاديث المأوَّلة مع تحقُّق الصحّة

सब के सब मर गए थे और उनमें से किसी को भी हम इस युग में (जीवित) नहीं देखते। अत: जो कोई यह दावा करे कि उनमें से ईसा जीवित बच गए थे और मुर्दों में सम्मिलित नहीं हुए तो उसने उन्हें अपवाद ठहराया। तो उस पर अनिवार्य है कि वह इस दावे का सबूत दे। और तुम जानते हो दावा करने वालों के दावे के सबूत के लिए हनफियों के नज़दीक सबूतों के चार प्रकार हैं जो विचारकों से छिपे नहीं।

प्रथम قَطْعِيُّ الثُّبُوْتِ وَالدَّلَالَةِ (ठोस सबूत और निशान)-जिसमें किसी प्रकार की कमज़ोरी और दोष न हो जैसे स्पष्ट क़ुर्आनी आयतें तथा सही एवं निरन्तरता वाली हदीसें। इस शर्त के साथ कि वे तावील (प्रत्यक्ष अर्थों से हट कर व्याख्या करना) करने वालों की तावीलों से नि:स्पृह तथा ऐसे वाद-विवाद एवं विरोधाभास से पवित्र हों जो अन्वेषकों के नज़दीक कमज़ोरी का कारण हो।

द्वितीय- ठोस सबूत قَطْعِيُّ الثُّبُوْتِ ظَنِّيُّ الدَّلَالَتِ जैसे वे आयतें और हदीसें जिन का सही और वास्तविक होना तो निश्चित हो

والإصالة. الثالث ظنّي الثبوت قطعيّ الدلالة، كالإخبار الآحاد الصريحة مع قلّة القوّة وشيء من الكلالة. الرابع ظنّيّ الثبوت والدلالة، كالإخبار الآحاد المحتملة المعاني والمشتبهة.

ولا يخفى أن الدليل القاطع القوى هو النوع الاول من الدلائل، ولا يمكن مِن دونه اطمينان السائل. فإنّ الظنَّ لا يُغْنى مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا، ولا سبيل له إلى يقين أصلا. ولم أزل أرقُب رجلا يدّعى اليقين في هذا الميدان، وأتشوّف إلى خبره في أهل العدوان، فما قام أحد إلى هذا الزمان، بل فرّوا مني كالجبان، فأودعتهم كاليائسين وانطلقت كالمتفرّدين، إلى أن جاءني بعد تراخي

परन्तु उनकी तावील की जा सकती हो।

तृतीय- ظَنِّيُّ الثُّبُوْتِ قَطْعِيُّ الدَّلَالَتِ जैसे वे एक रावी वाली हदीसें जो हों तो स्पष्ट परन्तु अधिक सुदृढ़ न हों और उनमें कुछ दोष पाया जाता हो।

चतुर्थ - ظَنِّيُّ الثُّبُوْتِ وَالدَّلَالَةِ ऐसी एक रावी वाली हदीसें जो कई अर्थों पर आधारित हों और संदिग्ध हों।

और यह बिल्कुल स्पष्ट है कि सबूतों में सबसे ठोस और सुदृढ़ सबूत प्रथम प्रकार के हैं तथा पूछने वाले को इसके बिना संतोष प्राप्त नहीं हो सकता, क्योंकि सच की तुलना में कल्पना की कोई वास्तविकता नहीं और वह अटल विश्वास की ओर गुंजायश नहीं पाता। और मुझे हमेशा ऐसे व्यक्ति की प्रतीक्षा ही रही जो इस मैदान में विश्वास का दावा करता। और प्रतीक्षक बना रहा कि शत्रुओं में से किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में मुझे सूचना मिल जाए किन्तु इस समय तक कोई भी मुकाबले पर नहीं आया, बल्कि वे कायरों की भांति मुझ से भाग निकले। अत: मैंने निराशा

الامد، تلك رسالتك يا ضعيف البصر شديد الرمد، ونظرت إليه نظرة وأمعنت فيه طرفة، فعرفت أنه من سقط المتاع، ومما يستوجب أن يُخفَى ولا يُعرض كالبَعاع۔ ولو غشِيك نور العرفان، وأمعنتَ كرجل له عينان، لسترتَ عوارك، وما دعوت إليه جارك، ولكن الله أراد أن يُخزيك، ويُرى الخلق خزيك، فبارزتَ وأقبلت، وفعلت ما فعلت، وزوّرت وسوّلت، وكتبت في كتابك الإنعام، لتُرضي به الانعام، ولكن رتَقتَ وما فتَقت، وخدعتَ في كل ما نطقت، وإنّا نعلم أنك لست من المتموّلين۔

लोगों की तरह उन्हें अलविदा कह दिया और मैं बिल्कुल अकेला ही चल पड़ा यहां तक कि कुछ समय के बाद हे अदूरदर्शी और बीमार आंख वाले तेरी यह पुस्तक मुझे मिली और मैंने इस पर दृष्टि डाली और पल भर विचार किया तो मैंने जाना कि यह तो रद्दी माल है तथा अनिवार्य है कि इस पर पर्दा ही पड़ा रहे और इसे बतौर सामान प्रस्तुत न किया जाए और यदि तुझे इर्फान रूपी प्रकाश प्राप्त होता तथा तूने एक आँखों वाले व्यक्ति के समान विचार किया होता तो तू स्वयं अपने दोषों को छिपा लेता और अपने पड़ोसी को अपनी कमज़ोरी की ओर न बुलाता। किन्तु ख़ुदा की इच्छा यही थी कि वह तुझे बदनाम करे और लोगों को तेरा अपमान दिखाए। इसलिए तू मुकाबला करने के लिए सामने आया और जो करना था वह तूने किया तथा छल-कपट से काम लिया और मूर्ख लोगों को प्रसन्न करने के लिए अपनी पुस्तक में इनाम का विज्ञापन दे दिया। परन्तु तूने उसे गाँठ बन्द ही रहने दिया और उसे न खोला तथा अपने हर वार्तालाप में धोखा दिया और यह तो

ومع ذلك لا نعرف أنك صادق الوعد ومن المتقين، بل نرى خيانتك في قولك كالفاسقين. فما الثقة بأنك حين تُغلب وترتعد ستفي بما تعد؟ وقد صار الغدر كالتحجيل في حلية هذا الجيل، فإن وردت غدير الغدر، فمن أين نأخذ العَين يا ضيِّقَ الصدر؟ وما نريد أن تُرجع الأمر إلى القضاة ونحتاج إلى عون الولاة، ونكون عرضة للمخاطرات. ونعلم أنك أنت من بني غبراء، لا تملك بيضاء ولا صفراء، فمن أين يخرج العَين مع خصاصتك وإقلالك وقِلّة مالك؟ ومع ذلك للعزائم بدواتٌ، وللعِدات معقّبات، وبيننا وبين النَجُز عقبات، ولا نأمن وعد كم يا

हमें मालूम ही है कि तू धनवान नहीं है।

इसके अतिरिक्त हम यह भी नहीं जानते कि तू वादे का सच्चा और संयमी है बल्कि हम तेरी बातों में पापियों जैसी बेईमानी (खियानत) पाते हैं। फिर इस बात का क्या विश्वास कि जब तू पराजित हो जाए और तुझ पर कंपन छा जाए तो तू अपना वादा अवश्य पूरा करेगा। और हाल यह है कि वादा भंग करना इस नस्ल की विशेषताओं में स्पष्ट विशेषता है। यदि तू स्वंय ही वादा भंग करने के तालाब में उतर जाए तो फिर हे कृपण (तंग दिल) बता हम यह रक़म कहां से लेंगे? हम नहीं चाहते कि यह मामला जजों तक जाए और हम शासकों की सहायता के मोहताज हों तथा हम खतरों का लक्ष्य बनें। हमें मालूम है कि तू दरिद्र है तेरे पास चांदी-सोना नहीं है फिर बता। तेरी दरिद्रता, तेरी मोहताजी, और धन की कमी के होते हुए यह नक़द माल कहां से निकलेगा। इसके अतिरिक्त नवीन रायें इरादों (संकल्पों) के आड़े आ जाती हैं और वादों के मार्ग में बाधक होती हैं। हमारे तथा वादों को पूर्ण करने

حزب المبطلين. فإن كنتَ من الصادقين لا من الكاذبين الغدّارين، وصدقت في عهد إنعامك وما نويتَ حنثًا في إقسامك، فالأمر الأحسن الذي يسر دغواشي الخطرات، ويجيح أصل الشبهات، ويهدي طريقا قاطع الخصومات، أن تجمع مال الإنعام عند رئيس من الشرفاء الكرام، ونحن راضون أن تجمع عند الشيخ غلام حسن أو الخواجه يوسف شاه أو المير محمود شاه قطعًا للخصام، ونأخذ منهم سندًا في هذا المرام، فهل لك أن تجمع عَينك عند رجلٍ سواي بيني وبينك، أو لا تقصد سبيل المنصفين؟ وإنّا لا نعلم مكنون طويّتك، فإن كنت كتبتَ الرسالة من صحة

के मध्य रोकें हैं। और हे झूठों के गिरोह! हम तुम्हारे वादों पर विश्वास नहीं करते। यदि तू सच्चों में से है और झूठों तथा वादा-भंग करने वालों में से नहीं और तू अपने इनाम की प्रतिज्ञा में सच्चा है और अपने निश्चय में प्रतिज्ञा-भंग करने की नीयत नहीं तो उत्तम बात जो खतरों के पर्दों को हटा दे और सन्देहों को जड़ से उखाड़ दे तथा ऐसे मार्ग की ओर मार्ग-दर्शन करे जो झगड़े को समाप्त कर दे तो वह यह है कि तू सुशील प्रतिष्ठित रईस के पास वह इनाम की राशि जमा करा दे और झगड़ा समाप्त करने के लिए हम इस बात पर सहमत हैं कि तू उसे शेख ग़ुलाम हसन या ख़्वाजा यूसुफ शाह या मीर महमूद शाह के पास जमा करा दे और इस उद्देश्य से हम उन से हस्तलिखित पत्र ले लें। क्या तू तैयार है कि उस राशि को ऐसे व्यक्ति के पास जो मेरे और तेरे बीच समान दर्जा (श्रेणी) रखता है, जमा करा दे या फिर तू न्याय करने वालों का मार्ग अपनाना ही नहीं चाहता? हमें मालूम नहीं जो तुम्हारे दिल के तहखाने में छिपा हुआ है। अगर तो तुम ने यह

نيّتك، لا من فساد طبيعتك، فقُمْ غيرَ وانٍ ولا لاوٍ إلى عدوان، واعمل كما أمرنا إن كنتَ من الصّادقين. وإنّا جئناك مستعدّين ولسنا من المعرضين ولا من الخائفين، بل نُسَرُّ بالإقدام ولو على الضِرغام، ولا نخاف أمثالك من الناس، بل نحسبهم كالثعالب عند البأس. وأزمعْنا أن نفتّش خباءتك، ونستنفض حقيبتك، ونحسر اللثام عن قربتك، وقلّما خلص كذّاب أو بورك له اختلاب، وقد بقينا عامًا لا نخشّن كلامًا، ولا نجيب مكفّرًا ولوّامًا، وصبرنا ورأينا الجُلِخْماما، حتى ألجأتْنا مرارةُ الكلمات إلى جزاء السيئات بالسيئات، وعلاجِ الحيّات بالعصيّ والصَّفاة، فقمنا لنهتك أستار الكاذبين.

पुस्तक सही नीयत से लिखी है और अपनी प्रकृति (फितरत) की खराबी से नहीं लिखी तो शक्तिपूर्वक खड़ा हो जा और अत्याचार की ओर न झुक और अगर तू सच्चा है तो जैसा हमने कहा है वैसा ही कर। हम पूरी तैयारी से तेरे पास आए हैं हम मुंह फेरने वाले नहीं और न डरने वाले हैं बल्कि हम आगे बढ़ेंगे चाहे वह शेर के मुक़ाबले पर हो। और हम तुझ जैसे लोगों से भयभीत होने वाले नहीं बल्कि हम युद्ध के समय उन्हें लोमड़ियों जैसा समझते हैं और हमने यह प्रण कर लिया है कि तेरे अन्त:करण की छान-बीन करे और तेरे थैले को अच्छी तरह से झाड़ दे तथा देंतेरी छोटी मश्क के बंध को खोलदे और ऐसा कम ही हुआ है कि कोई महा झूठा बच निकला हो। या धोखा उसके लिए लाभदायक हुआ हो। साल भर हमने न बुरा-भला कहा न किसी काफ़िर कहने वाले और अपमानित करने वाले को उत्तर दिया। हमने धैर्य धारण किया और उनका अहंकार देखा यहाँ तक कि उनके शब्दों की कठोरता ने हमें अपशब्दों की सज़ा देने पर विवश किया और सांपों का इलाज ठण्डे और पत्थर हैं। अत: हम झूठों के

فلا نلتفت إلى القول العريض، ونريد أن تبرز إلينا بالصُّفر والبِيض، وتجمع مبلغك عند أحدٍ من الرجال الموصوفين، وتأمرهم ليعطوني مبلغك عندما رأوك من المغلوبين. فإن لم تفعل فكذبك واضح، وعذرك فاضح، ألا لعنة الله على الكاذبين، ألا لعنة الله على الغادرين الناكثين، الذين يقولون ولا يفعلون، ويعاهدون ولا ينجزون، ولا يتكلمون إلا كالخادعين المزوّرين، فعليهم لعنة الله والملائكة والناس أجمعين. فاتّقِ لعنة الله وأَنجِزْ ما وعدتَ كالصادقين. وإن كنت لا تقدر على الإيفاء، وليس عندك مال كالأمراء، فاطلبْ

पर्दे उठाने के लिए उठ खड़े हुए।

हम लम्बी चौड़ी बात की ओर ध्यान नहीं देते। हम चाहते हैं कि तू अपना चाँदी सोना हमारे सामने प्रकट करे और अपनी रकम वर्णित व्यक्तियों में से किसी एक के पास जमा कराए। और तू उन से यह कहे कि जब वे तुझे पराजित देखें तो तेरी रक़म वे मुझे देदें। फिर यदि तूने ऐसा न किया तो तेरा झूठ स्पष्ट हो जाएगा और तेरा प्रतिज्ञा को भंग करना बदनामी का कारण होगा। सुनो झूठों पर अल्लाह की लानत होती है और सुनो-सुनो कि उन पर भी अल्लाह की लानत होती है जो अपनी प्रतिज्ञा भंग करने तथा अपने वादों से फिर जाने वाले हैं और जो कहते तो हैं परन्तु करते नहीं और समझौते तो करते हैं और उन्हें पूरा नहीं करते और धोखे बाज़ और षड्यंत्र करने वालों की भांति बातचीत करते हैं। अत: ऐसे लोगों पर अल्लाह, फ़रिश्तों और सब लोगों की लानत है। अत: तू अल्लाह की लानत से डर और सच्चों की तरह अपने वादे को पूरा कर और यदि तू वादा पूरा नहीं कर सकता और धनवानों की तरह तेरे पास

لعونك قوما يأسُون جراحك ويريّشون جناحك، فإن كانوا من المصدّقين المعتقدين، فيعينونك كالمريدين، مع أن دِين القوم جبرُ الكسير وفكُّ الأسير، واحترام العلماء واستنصاح النصحاء. على أنك لن تطالب بدرهم إلا بعد شهادة حَكَم، وأما الحَكَم فلا بد من الحَكَمَين بعد جمع العَين. ووكّلنا إليك هذا الخَطبَ، ولك كل ما تختار اليابس أو الرطبَ، فإن جعلتَ حَكَمَين كاذبَين، فنقبلهما بالرأس والعين، ولا ننظر إلى الكذب والمَين، بيد أننا نستفسرهما بيمين الله ذي الجلال، وعليهما أن يحلفوا إظهارًا الصدق المقال، ثم نمهلهما إلى عام، ونمدّ يد المسألة إلى خبير علام، فإن

माल नहीं है तो फिर अपनी सहायता के लिए ऐसे लोगों को तलाश कर जो तेरे ज़ख्मों का इलाज कर सकतें हों और तेरे हाथ और बाज़ू बन सकते हों। फिर अगर तो वे तेरा सत्यापन (तस्दीक़) करने वाले श्रद्धालु हुए तो मुरीदों की भांति तेरी सहायता करेंगे। क्योंकि क़ौम का कर्तव्य है कि वे आर्थिक तौर पर खराब हाल मनुष्य की सहायता, क़ैदी की आज़ादी, उलेमा का सम्मान और शुभचिन्तकों की शुभचिन्ता (भलाई) करें। यद्यपि तुझ से एक दिरहम की भी मांग नहीं की जाएगी परन्तु मध्यस्थों की गवाही के बाद, और जहां तक फैसले का संबंध है तो यह मध्यस्थता फैसला राशि जमा होने के पश्चात् दो मध्यस्थों की ओर से होगी। हम यह मामला तेरे सुपुर्द करते हैं और इसकी सब बातों का तुझे पूर्ण अधिकार है। यदि तुम दो झूठे निर्णायक भी नियुक्त करोगे तो हमें वे भी सहर्ष स्वीकार होंगे। और हम उनके झूठ और असत्य को अनदेखा कर देंगे। हां यद्यपि उन दोनों निर्णायकों से महा प्रतापी ख़ुदा की क़सम देकर पूछेंगे और उन दोनों निर्णायकों पर अनिवार्य होगा कि

لم تتبین إلى تلك المدّة أمارة الاستجابة، فنُشهد الله انّا نُقرّ بصدقك من دون الاسترابة، و نحسبك من الصادقین۔

وأعجبني لِمَ تصدّیتَ لتألیف الکتاب، وأیّ أمر کتبتَ کالنادر العجاب، بل جمعتَ فضلة أهل الفضول، واتبعتَ جهلات الجهول، وما قلت إلّا قولاً قیل من قبلك، ونُسج بجهل أکبر من جهلك، وما نطقتَ بل سرقت بضاعة الجاهلین۔ وما نری في کلامك إلا عبارتك التي نجد ریحه کسَهُكِ الحیتان المتعفنة، ونتنِ الجیفة المنتنة، ونراه مملوًّا من تکلّفات باردة رکیکة، وضحکة الضاحکین۔ وفعلتَ کل ذلك لرُغفان المساجد، وابتغاءِ مرضاة الخَلق کالواجد، لا للّٰه ربّ العالمین۔ یا من ترَك

वे खुल्लम खुल्ला शपथ उठाएं कि उन्होंने सच बात की है। फिर हम उन्हें एक वर्ष तक मोहलत देंगे और हम अत्यधिक खबर रखने वाले और महा विद्वान ख़ुदा के दरबार में दुआ के लिए हाथ फैलाएंगे फिर यदि इस अवधि में दुआ की स्वीकारिता का कोई स्पष्ट निशान प्रकट न हुआ तो हम अल्लाह तआला को गवाह ठहराते हैं कि (इस स्तिथि में) हम बिना किसी सन्देह एवं शंका के तुम्हारी सच्चाई का इक़रार कर लेंगे और तुन्हें सच्चों में से समझेंगे।

और मुझे आश्चर्य है कि तुम इस पुस्तक को लिखने पर तत्पर क्यों हुए और तुम ने इसमें कौन सी अनुपम और अनोखी बात लिखी है बल्कि तुम ने इसमें केवल बेकार लोगों का बचा-कुचा एकत्र कर दिया है और मूर्खों की मूर्खतापूर्ण बातों का अनुकरण किया है तथा इन बातों के अतिरिक्त तूने कुछ नहीं कहा जो पहले की जा चुकी हैं और तेरी मूर्खता से भी बढ़कर मूर्खता के ताने-बाने बुने थे और तूने स्वयं कुछ नहीं कहा बल्कि मूर्खों का सामान चुराया है। और हम तेरे कलाम में

الصدق ومانَ، قد نبذت الفرقان، ولا تعلم إلا الهذيان، وتمشى كالعمين، لا تعلم إلا الاختراق في مسالك الزور، والانصلات في سكك الشرور، ولا تتقى براثن الأسد وتسعى كالعُمى والعُور، وإنّا كشفنا ظلامك، ومزّقنا كلامك، وستعرف بعد حين. أتؤمن بحياة المسيح كالجهول الوقيح، وتحسبه كأنه استُثْنِيَ من الأموات، وما أقمت عليه دليلا من البيّنات والمحكمات، ولا من الأحاديث المتواترة من خير الكائنات، فكذبتَ في دعوى الإثبات، وباعدتَ عن أصول الفقه يا أخا الترهات. أيها الجهول العجول، المخطئ المعذول، قِفْ وفكِّرْ برزانة الحصاة، ما أوردتَ دليلا على دعوى الحياة،

ऐसी ही इबारत देखते हैं जिसकी गंध सड़ी हुई मछलियों और बदबूदार मुर्दार की दुर्गन्ध की तरह महसूस करते हैं और उसे हम तुच्छ और व्यर्थ दिखावा और हंसने वालों की हंसी के सामान से भरा हुआ पाते हैं। और यह सब कुछ तुमने लालची की भांति मस्जिदों की रोटियों तथा लोगों की खुशी प्राप्त करने के लिए किया है न कि समस्त लोकों के रब्ब के लिए। हे वह व्यक्ति जिसने सच को छोड़ा और झूठ से काम लिया, तूने फुर्कान-ए-हमीद को पीठ के पीछे डाल दिया और बकवास के अतिरिक्त तू कुछ नहीं जानता और अंधों की भांति चलता है। झूठ के मार्गों पर चलने तथा बुराई के विभिन्न कूचों में सरपट दौड़ने के अतिरिक्त तू कुछ नहीं जानता। तुझे शेर के पंजों का डर नहीं और तू अंधों एवं कानों की तरह दौड़ता-फिरता है। हम ने तेरे अंधकारों का पर्दा फाड़ दिया है और तेरे कलाम को टुकड़े-टुकड़े कर दिया है। और तुझे शीघ्र ही ज्ञात हो जाएगा। क्या तू एक निर्लज्ज मुर्ख व्यक्ति के समान मसीह के जीवित रहने पर ईमान रखता है तथा यह विचार रखता है कि जैसे वह (मसीह) मुर्दों से अलग

وما اتبعتَ إلا الظنيات، بل الوهميات. ونتيجة الاشكال لا يزيد على المقدّمات، فإذا كانت المقدّمتان ظنّيّتَين فالنتيجة ظنّية، كما لا يخفى على ذوى العينين. وإن كنتَ لا تفهم هذه الدقائق، ولا تدرك هذه الحقائق، فسَلِ الذين من أولى الابصار الرامقة، والبصائر الرائقة، وانظر بعينِ غيرك إن كنت لا تنظر بعينك فى سيرك، واستنزِلِ الريَّ من سحاب الاغيار، إن كنتَ محرومًا من دَرّ الامطار. ألا تعلم يا مسكين أن قولك يُعارض بيّنات القرآن، ويخالف مُحكمات الفرقان؟ وقد تبيّن معنى التوفّى من لسان سيّدِ الإنس ونبيِّ الجانّ، وصحابته ذوى الفهم والعرفان. وأىّ فضل لمعنى العوام، بعد ما حصحص المعنى من خير

हैं। तुम ने इस पर स्पष्ट और सुदृढ़ तथा न ही सरवरे कायनात (मुहम्मद स.अ.व.) की निरन्तरता वाली हदीसों से कोई सबूत प्रस्तुत किया। अत: हे झूठ के पुतले तूने अपने दावे को सिद्ध करने में झूठ से काम लिया और फिक: के सिद्धान्त से दूर हट गया। हे निपट मूर्ख, जल्दबाज़, दोषी, निन्दित मनुष्य! रुक और गंभीरता एवं बुध्दि से विचार कर! कि तूने मसीह के जीवित रहने के दावे पर कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया तथा तूने केवल कल्पनाओं बल्कि भ्रमों का अनुकरण किया है। जटिल समस्याओं का परिणाम (सुग़रा-कुब्रा) मुक़द्दमों से अधिक नहीं होता। जब मुक़द्दमा सुग़रा और कुब्रा काल्पनिक हों तो उनका परिणाम भी काल्पनिक होगा जैसा कि विवेकवानों पर छिपा हुआ नहीं। यदि तू उन बारीकियों को समझ नहीं पाता और तुझे उन वास्तविकताओं की समझ नहीं। तो उत्तम प्रतिमा एवं गहरा विवेक रखने वालों से पूछ! यदि तू अपने कर्तुतों (कृत्यों) को अपनी आंख से नहीं देख सकता तो दूसरों की आंख से देख और यदि तू

الانـام، ومَـن يأبـاه إلا مـن كان مـن الفاسـقين؟

فتنـدّم عـلى مـا فرّطـتَ في جنـب الله وبيّناتـه، واتبعـتَ المتشـابهاتِ وأعرضـتَ عـن محكمـاتـه، ووثَبْـتَ كخليـع الرسـن، وتركـتَ الحـق كعَبَـدةِ الوثـن. وإني نظـرتُ رسـالتك الفينـة بعـد الفينـة، فمـا وجدتُهـا إلا راقصـة كالقينة، ووالله إنهـا خاليـة عـن صـدق المقـال، ومملـوّة مـن أباطيـل الدجّـال، فعليـك أن تنقُـد المبلـغ في الحـال، لنريـك كذبـك ونوصلـك إلى دار النـكال. وعليـك أن تجمـع مالـك عنـد أمـين الذي كان ضمينـا بيقـين، وإلا فكيـف نوقـن أنّـا نقطـف جنـاك إذا أبطلنـا دعـواك، وأرينـاك شـقاك؟ يا أسـير المَتْرَبـة، لسـتَ مـن أهـل الثـروة، بـل مِـن عَجَـزة

मूसलाधार वर्षा से वंचित है तो दूसरों के बादलों से वर्षा की मांग कर। हे दरिद्र! क्या तू नहीं जानता कि तेरा कथन क़ुर्आन के स्पष्ट सबूतों का विरोधी तथा फ़ुर्कान (हमीद) के सुदृढ़ आदेशों का विरोधी है। 'तवफ्फी' के अर्थ इन्सानों और जिन्नों के सरदार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तथा आप के बुद्धिमान एवं अध्यात्म ज्ञानी सहाबा की ज़बान से स्पष्ट तौर पर वर्णन हो चुके हैं तो फिर खैरुल अनाम (सृष्टि के सर्वोत्तम) सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्पष्ट अर्थों के सामने लोगों के अर्थों की क्या हैसियत रह जाती है और पापियों के अतिरिक्त इन अर्थों का कौन इन्कार कर सकता है।

अत: तुम्हें शर्म आनी चाहिए जो तूने अल्लाह और उसके स्पष्ट आदेशों के बारे में लापरवाही की है तथा क़ुर्आन के अस्पष्ट आदेशों का अनुसरण किया है और सुदृढ़ आदेशों से मुंह फेर लिया है। तू बेलगाम की भांति आक्रमणकारी हुआ, तूने मूर्तिपूजकों की तरह सच को त्याग दिया है। मैंने यदा-कदा तेरी पुस्तक को देखा है और उसे एक गाने

الجهلة، فاترُكْ شِنْشِنة القِحَة، واجمعِ المال وجانِبْ طرق الفِرية والتَعِلّة، فواهًا لك إن كنت من الصادقين الطالبين، وآهًا منك إن كنت من المعرضين المحتالين. وقد أوصينا واستقصينا، ونقّحنا تنقيح من يدعو أخا الرشد ويكشف طرق السَّدَد، وأكملنا التبليغ لله الاحد، وننظر الآن أتجمع المال وتُرِى العهد والإيمان، أو تُرِى الغدر وتتبع الشيطان كالمفسدين.

ووالله الذى يُنزل المطر من الغمام، ويُخرج الثمر من الاكمام، إنى ما نهضتُ لطمعٍ فى الإنعام، بل لإخزاء اللئام، ليتبيّن الحق وليستبين

वाली (गायिका) के समान नाचते हुए पाया है। और ख़ुदा की क़सम वह पुस्तक सच्चाई से ख़ाली है और दज्जाल के कपटों से भरी हुई है। इसलिए यह तुझ पर अनिवार्य है कि तू तुरन्त उस राशि को नक़द अदा करे, ताकि हम तेरा झूठ तुझ पर प्रकट कर दें और तुझे इब्रत (सीख) के स्थान तक पहुंचाएं और तुझ पर यह भी अनिवार्य है कि तू अपने माल को ऐसे अमीन (अमानतदार) के पास जमा कराए जो निश्चित तौर पर गारन्टी देने वाला हो, अन्यथा हमें कैसे विश्वास आए कि जब हम तेरे दावे को झूठा कर देंगे और तेरे दुर्भाग्य को सिद्ध कर दिखाएंगे तो तेरे फल (इनामी राशि) को प्राप्त कर लेंगे। हे कंगाली के मारे हुए तू धनवान नहीं बल्कि असमर्थ मूर्खों में से है। अत: निर्लज्जा की आदत को छोड़ और माल जमा करा तथा झूठ गढ़ने के मार्गों से पृथक हो जा। बहाने बाज़ी करना छोड़! यदि तू सच्चा और सच का अभिलाषी है तो तुझे शाबाश और यदि तू मुँह फेरने वाला और बहाने तलाशने वाला है तो तुझ पर अफ़सोस है! हमने नसीहत की और नसीहत को चरम सीमा

سبيل المجرمين، وإن الله مع المتّقين۔ ووالله الذى أعطى الإنسان عقلًا وفكرًا، لقد جئتَ شيئًا نُكرًا، وأبقيتَ لك فى المخزيات ذكرا۔ وقد كتبنا من قبل اشتهارا، وواعدْنا للمجيبين إنعاما، وأقررنا إقرارا، فما قام أحدٌ للجواب، وسكتوا كالبهائم والدواب، وطارت نفوسهم شعاعا، وأرعدت فرائصهم ارتياعا، وأكبّوا على وجوههم متندّمين۔

أفأنت أعلم منهم أو أنت من المجانين؟ إنهم كانوا أشدَّ كيدًا منك فى الكلام، بل أنت لهم كالتِّلام، فكان آخر أمرهم خزى وخذلان وقهر رب العالمين۔ وإن الله إذا أراد خزى

तक पहुंचाया और ऐसे व्यक्ति के समान छान-बीन की जो सत्यनिष्ठ का अभिलाषी है तथा सीधे मार्गों को स्पष्ट करता है और हमने अद्वितीय ख़ुदा के लिए तब्लीग़ (प्रचार) को पूर्णता तक पहुंचाया। अब हम देखते हैं की क्या तू वह (इनामी) राशि जमा करता है और प्रतिज्ञा एवं ईमान का समर्थन करता है या प्रतिज्ञा भंग करने का समर्थन करता और उपद्रवियों के समान शैतान का अनुकरण करता है?

और ख़ुदा की क़सम जो बादलों से वर्षा करता और गुच्छों से फूल निकलता है कि मैं किसी इनाम के लालच के कारण से मुकाबले के लिए नहीं बल्कि कमीनों को अपमानित करने के लिए खड़ा हुआ हूँ ताकि सच स्पष्ट हो जाए और दोषियों का मार्ग भली भांति खुल कर प्रकट हो जाए। निस्सन्देह अल्लाह तआला संयमियों के साथ है और उस ख़ुदा की क़सम जिसने मनुष्य को बुद्धि और समझ से सम्मानित किया, तूने बहुत अप्रिय बात की है और अपने पीछे अपने लिए बदनाम करने वाली याद छोड़ी है। हमने इससे पहले एक विज्ञापन लिखा तथा उसका उत्तर

قوم فيعادون أولياءه، ويؤذون أحبّاءه، ويلعنون أصفياءه، فيبارزهم الله للحرب، ويصرف وجههم بالضرب، ويجعلهم من المخذولين. ألا تفكرون في أنفسهم أنّ الله يُنزل نُصرته لنا بجميع أصنافها، ويأتي الارض ينقصها من أطرافها، ويحفظنا بأيدي العناية، ويسترنا بملاحف الحماية، فلا يضرّنا كيد المفسدين؟ يعلم من كان له ومن كان لغيره، وينظر كل ماش في سيره، ولا يهدي قوما مسرفين، ويبير الفاسقين ويمحو أسماء المفترين من أديم الارضين. هو الغيور المنتقم، ويعلم عمل المفسد الفتّان، ويأخذ المفترين بأقرب الازمان،

देने वालों के लिए इनाम देने का वादा और ठोस इक़रार किया, परन्तु कोई भी उत्तर देने पर तैयार न हुआ और वह जानवरों तथा चौपायों की भांति खामोश हो गए। उनके प्राण हवा हो गए और भय से उनके पठ्ठों पर कंपन छा गया तथा शर्म से अपने मुंह के बल गिर पड़े।

क्या तुम इन सब लोगों से अधिक विद्वान हो या तुम पागल हो। वे लोग बातचीत में तुम से कहीं अधिक होशियार थे बल्कि तुम उन लोगों की तुलना में मदरसे में पढ़ने वाले बच्चे हो। अन्तत: उनका अंजाम समस्त लोकों के रब्ब का प्रकोप, बदनामी और अपमान हुआ। और जब अल्लाह किसी क़ौम की बदनामी का इरादा करता है तो (उस क़ौम के लोग) उसके वालियों से शत्रुता रखने लगते और उसके प्रियजनों को दु:ख देते तथा उसके चुने हुए बन्दों को बुरा-भला कहते हैं और अल्लाह युद्ध के लिए उनके मुकाबले पर आ जाता है और एक ही चोट से उनके मुंह फेर देता तथा उन्हें निराश्रय कर देता है। क्या तुम उन (विरोधियों) के बारे में विचार नहीं करते (कि उनका क्या अंजाम हुआ)। निसन्देह अल्लाह ने हमारे

فيُنزل رجزه أسرعَ من تصافُح الأجفان۔ فتوبوا كالذين خافوا قهر الرحمن، وأنابوا قبل مجیء يوم الخسران، وغيَّروا ما فی أنفسهم ابتغاء لمرضات الله، يا معشر أهل العدوان۔ اطلبوا الرحم وهو أرحم الراحمين۔ فتندّم يا مغرور علی جهلاتك، واعتذر من فرطاتك، وفكِّر فی خسرك وانحطاط عرضك وانكشاف سترك، وازدجِرْ كالخائفين۔

واعلمْ أنه من نهض ليستقری أثر حياة عيسی، فما هو إلا كجادع مارن أنفِه بموسی، فإن الفساد كل الفساد ظهر مِن ظنِّ حياة المسيح، واسودّت الأرض من هذا الاعتقاد القبيح، ومع

लिए अपनी हर प्रकार की सहायता उतारी और पृथ्वी को उसके चारों ओर से कम कर रहा है और अपनी कृपा से हमारी रक्षा करता है। और अपनी सहायता के लिहाफों में हमें ऐसे छिपाए हुए है कि उपद्रवियों की कोई युक्ति हमें हानि नहीं पहुंचा सकती। वह जानता है कि जो उसका है और जो उसके ग़ैर (अन्य) का है। वह हर चलने वाले की चाल पर दृष्टि रखता है और हद से बढ़ने वाली क़ौम को हिदायत नहीं देता। और पापियों का विनाश कर देता तथा झूठ गढ़ने वालों के नाम संसार से मिटा देता है। वह बड़ा स्वाभिमानी और प्रतिशोध लेने वाला है। वह फूट डालने वाले तथा उपद्रव फ़ैलाने वाले को जानता है और निकट के समय में ही वह झूठ गढ़ने वालों को पकड़ता है और आंख झपकने से भी शीघ्र अपना अज़ाब उतारेगा। हे शत्रुओं के गिरोह! उन लोगों की भांति तौबा करो जो कृपालु ख़ुदा के प्रकोप से डरते हैं तथा जो घाटे का दिन आने से पहले उसकी ओर झुके और अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए अपने नफ़्सों में परिवर्तन पैदा किया। दया मांगो, क्योंकि

ذلك لا تقدرون على إيراد دليل على الحياة، وتأخذون بأقوال الناس ولا تقبلون قول الله وسيد الكائنات. وتعلمون أنه من فسّر القرآن برأيه وأصاب فقد أخطأ، ثم تتبعون أهواء كم ولا تتقون مَن ذرأ وبرأ، وتتكلمون كالمجترئين. وإذا قُرِئَ عليكم آيات الفرقان فلا تقبلونها، وإنْ قُرِئَ نصف القرآن، وإنْ عُرِضَ غيره، فتقبلونه مستبشرين.

لا تلتفتون إلى كتاب الله الرحمن، وتسعون إلى غيره فرحين. وليت شعري كيف يجوز الاتكاء على غير القرآن بعد ما رأينا

वह दयावानों में सर्वाधिक दयालु है। हे दोखा खाए हुए व्यक्ति! अपनी मूर्खताओं पर शर्मिंदा हो और अन्यायों पर क्षमा मांग तथा अपनी हानि और अपने नैतिक पतन तथा अपने दोष प्रकट होने पर विचार कर और डरने वालों के समान स्वयं को डाँट-डपट कर।

जान ले कि जो भी ईसा (अलैहिस्सलाम) के जीवित रहने का कोई निशान ढूंढने के लिए खड़ा होता है तो वह उस व्यक्ति के समान है जो उस्तरे से अपनी नाक काटता है क्योंकि यह सारा फसाद मसीह के जीवित रहने की आस्था से खड़ा हुआ है। और इस बुरी आस्था के कारण पृथ्वी काली हो गयी है। इसके बावजूद तुम (मसीह) के जीवित रहने पर सबूत लाने की शक्ति नहीं रखते तथा लोगों की बातों को ले लेते हो। परन्तु अल्लाह और सरवर–ए–कायनात (सम्पूर्ण ब्रह्मांड के सरदार) के आदेश को स्वीकार नहीं करते। तुम जानते हो कि जिसने क़ुर्आन की तफ्सीर राय के साथ की, यदि वह सही भी हो तो उसने ग़लती की। फिर भी तुम अपने इच्छाओं का अनुकरण करते हो और उस हस्ती से नहीं डरते जिसने सब कुछ पैदा किया है तथा गुस्ताख (धृष्ट) लोगों के समान

بيّنات الفرقان؟ أتوصلكم غيرُ القرآن إلى اليقين والإذعان؟ فأْتوا بدليل إن كنتم صادقين. يا حسرة على أعدائنا إنهم صرفوا النظر عن صحف الله الرحمٰن، وما طلبوا معارفها كطلّاب العرفان، وأفنوا زمانهم وعمرهم في أقوال لا توصلهم إلى روضات الإذعان، ولا تسقيهم من ينابيع مطهّرة للإيمان، وما نرى أقوالهم إلا كصوّاغين باللسان. فيامعشر العُمى والعُور. اتقوا الله ولا تجترءوا على المعاصي والفجور، وتخيّروا طريقا لا تخشون فيه مسَّ حيفٍ ولا ضربَ سيف، ولا حُمَةَ لاسعٍ ولا آفةَ وادٍ واسع،

बातें करते हो। जब तुन्हारे सामने फ़ुर्कान (हमीद) (अर्थात्-क़ुर्आन) की आयतें पढ़ी जाएं तो तुम उन्हें स्वीकार नहीं करते चाहे आधा क़ुर्आन भी पढ़ दिया जाए और यदि क़ुर्आन के अतिरिक्त जो भी प्रस्तुत किया जाए उसे तुम प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लेते हो।

तुम अल्लाह रहमान की किताब की ओर ध्यान नहीं देते और उस (क़ुर्आन) के ग़ैर (अतिरिक्त) की ओर खुशी-खुशी लपकते हो। काश मुझे यह ज्ञात होता की जब हमने क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश देख लिए तो इसके बाद क़ुर्आन के अतिरिक्त किसी और चीज़ पर विश्वास करना कैसे उचित हो सकता है क्या क़ुर्आन के अतिरिक्त कोई अन्य चीज़ तुम्हें आज्ञा-पालन एवं विश्वास तक पहुंचा सकती है? यदि तुम सच्चे हो तो कोई प्रमाण लाओ। सैकड़ों अफ़सोस हमारे दुश्मनों पर कि उन्होंने कृपालु ख़ुदा के धर्म ग्रन्थों से अपनी निगाहें फेर ली हैं और इर्फान (अध्यात्म) के अभिलाषियों की भांति उन्होंने क़ुर्आनी मआरिफ की खोज नहीं की और अपना सारा समय तथा अपनी सम्पूर्ण आयु ऐसे कथनों में फ़ना (बरबाद) कर दी जो उन्हें आज्ञा पालन करने के बाग़ों तक नहीं पहुंचा सकते। और न वे उन्हें ईमान के पवित्र झरनों से सींचते हैं और हम

وقوموا للّٰه قانتين۔ وفكّروا فی قولی۔ هل صدقتُ فيما نطقتُ، أو ملتُ فيما قلتُ، وتفكروا كالخاشعين۔ مالكم لا تستعدّون لقبول الحجّة وتزيغون عن المحجّة، تركضون فی امتراء المیرة، ولها تتركون أقارب العشيرة۔ وما أرى فيكم مَنْ تَرَكَ لِلّٰه الأقارب والأحباب، وجدَّ فی الدّين ودأب۔ لم لا تتأدّبون بآداب الصلحاء، ولا تقتدون بطرق الأتقياء؟ أنكرتم الحق وما رأيتم سُقياه، وما وطأتم حصاه، وما استشرفتم أقصاه، وتركتم الفرقان وهُداه، وكنتم قوما عادين۔

उनके कथनों को झूठ गढ़ने वालों की बातों के समान देखते हैं। हे अंधे और काने लोगों के गिरोह! अल्लाह से डरो और पापों तथा दुराचारों पर बहादूरी मत दिखाओ और वह मार्ग अपनाओ जिसमें न अत्याचार करने की आशंका हो और न किसी तलवार की चोट का और न किसी डसने वाले के डंक का और न किसी विशाल घाटी के कष्ट की शंका हो। अल्लाह की ओर आज्ञाकारी बन कर खड़े रहो तथा मेरी इस बात पर विचार करो कि जो कुछ मैंने कहा है क्या वह सत्य है या जो कुछ मैंने कहा है उसमें सच्चाई से हट गया हूँ? और विनय करने वालों की भांति सोच-विचार करो। तुम्हें क्या हो गया है कि तुम प्रमाण स्वीकार करने में तत्परता प्रकट नहीं करते तथा सीधे मार्ग से हट रहे हो। भण्डार एकत्र करने में भाग-दौड़ करते हो और उसके लिए निकट संबंधियों को छोड़ रहे हो। और मुझे तुम में कोई ऐसा दिखाई नहीं दे रहा जिसने ख़ुदा के लिए निकट संबंधियों और दोस्तों को छोड़ा हो और धर्म में दौड़-धूप की और स्थायित्व ग्रहण किया। तुम क्यों सदाचारी (नेक) लोगों के आचरण ग्रहण नहीं करते और मुत्तक़ियों (संयमियों) के मार्गों का अनुकरण नहीं करते। तुमने सच्चाई

يـا أهـل الفسـاد و العنـاد۔ اتقـوا اللّٰہ ربّ العبـاد۔ أيـن ذهـب تقا كـم؟ و أضلّكـم علمُكـم و مـا وقا كـم۔ لا تفهمـون القـرآن و لا تمسّـون الفرقـان، فأيـن غـارت مزايا كـم، و أيـن ذهـب ريّا كـم؟ مـا أجـد كلامكـم مؤسَّسًـا عـلى التقـوى، و أجـد قلوبكـم متدنسـة بالطغـوى۔ فمـا بـال قـارب كان لها كمثلكـم المـلاحُ، و ما بـال أرض يحرثهـا كحزبكـم الفـلاحُ؟ و لا شـك أنكـم أعـداء الديـن و عِـدا الشـرع المتـين۔ و نعلـم أن قصـر الإسـلام منكـم و مـن أيديكـم عفـا، و لـم يبـق منـه إلا شـفا، و لـولا رحمـة ربّي لأحاطـه الدجى،

का इन्कार किया और तुमने उसकी सिंचाई को नहीं देखा, न ही उसके कंकड़ो पर चले हो और न तुम ने सम्पूर्ण मामले पर दृष्टि डाली। तुम ने फ़ुर्क़ान (हमीद) और उसकी हिदायत को त्याग दिया है और तुम हद से बढ़ने वाली क़ौम हो।

हे विकार, बैर और शत्रुता रखने वालो! तुम बन्दों के रब्ब ख़ुदा से डरो, तुम्हारा तक्वा (संयम) किधर गया? और तुम्हारे ज्ञान ने तुम्हें गुमराह (पथभ्रष्ट) किया तथा तुम्हें बचाया नहीं। न तुम्हें क़ुर्आन की समझ है और न तुम्हें फ़ुर्क़ान का कुछ ज्ञान है। तुम्हारी विशेषताएं कहां खो गईं और तुम्हारी तरोताज़गी कहां गई? मैं तुम्हारे कलाम की बुनियाद संयम पर नहीं पाता (बल्कि) तुम्हारे दिलों को उद्दण्ता से लिप्त पाता हूँ। उस नौका का क्या बनेगा जिसके मल्लाह तुम जैसे हों। और उस भूमि का हाल क्या होगा जिस पर तुम्हारे जैसे लोग खेती-बाड़ी करते हों। निस्सन्देह तुम धर्म और सुदृढ़ शरीअत के शत्रु हो। हम जानते हैं कि इस्लाम का महल तुम्हारे कारण से तथा तुम्हारे हाथों से मिट्टी में मिल गया है। और अब उसके केवल खण्डहर शेष रह गए हैं और यदि मेरे रब्ब की रहमत

و كان الله حافظه وهو خير الحافظين۔

ألا تنظرون أنكم كَمْ فَجٍّ سلكتم، و كم رجلٍ أهلكتم، و كم بِدَعٍ ابتدعتم، و كم قومٍ خدعتم، و كم عرضٍ اختلستم، و كم ثعلبٍ افترستم؟ أمّا الآن فالحق قد بان ورحم الربّ الرحيم، واستنار الليل البهيم، وأنار الدين القويم وظهر أمر الله و كنتم كارهين۔ إن لله فی كل يوم نظرةً، فنظر الدينَ رحمةً، ووجده غرضًا لسهام الاعداء، و كالوحيد الطريد فی البيداء، فأقامنی برحمة خاصة فی أيام إقلال و خصاصة، ليجعل

(दया) न होती तो अंधकार उसे घेर लेते। अल्लाह ही उसका रक्षक है और वही उत्तम रक्षक है।

क्या तुम नहीं देखते कि तुम कितने मार्गों पर चले तथा कितने लोगों को तुम ने मार डाला और कितनी बिदअतें तुमने अविष्कृत कीं और कितनी क़ौमों को धोखा दिया तथा कितने सम्मान रोंद डाले और कितने धोखेबाज़ों को तुम ने मात (पराजय) दी। परन्तु अब सच प्रकट हो गया है और दयालु रब्ब ने दया की तथा अमावस्या की घोर अंधकारमय रात प्रकाशमय हो गई और सुदृढ़ धर्म स्पष्ट हो गया तथा तुम्हारी अप्रियता के विपरीत अल्लाह की बात प्रकट हो गयी। अल्लाह की हर पल पर दृष्टि है अत: उसने अपने धर्म पर दया-दृष्टि डाली। उसने इस (धर्म) को दुश्मनों के तीरों का निशाना पाया तथा उसे ऐसी अवस्था में पाया कि वह एक छाया एवं जल रहित रेगिस्तान में अकेला और असहाय है। इस पर अल्लाह ने अपनी विशेष कृपा से इस गरीबी और बेबसी के युग में मुझे खड़ा किया ताकि वह मुसलमानों को समृद्ध करे और उन्हें वह कुछ दे जो उनके बाप-दादों को न दिया गया था। और निर्बलों पर दया करे तथा

المسلمين من المنعَمين، ويعطيهم ما لم يعط لآبائهم ويرحم الضعفاء، وهو أرحم الراحمين۔

وما قمتُ بهذا المقام إلّا بأمر قدير، يبعث الإمام ويعلم الإيام، حكيم عليم يرى أيام الغى والضلال، وصراصر الفساد فى النساء والرجال۔ تناهى الخَلق فى التخطى إلى الخطايا، وعقروا مطا المطايا، ودفنوا الحق فى الزوايا، ولمع الباطل كالمرايا، فرأى هذا كلّه ربُّ البرايا، فبعث عبدًا من العباد، عند وقت الفساد، أعَجِبتم من فضله يا جَمْرَ العناد؟ فلا تتكئوا على الظنون، ولله أسرار كالدرّ

वही हस्ती है जो समस्त दया करने वालों से अधिक दया करने वाली है।

मैं इस (इमामत के) पद पर शक्तिमान एवं शक्तिशाली ख़ुदा के आदेश से ही खड़ा हुआ हूँ जो इमाम अवतरित करता है और वह समय (की आवश्यकता) को जानता है। वह दूरदर्शी एवं सर्वज्ञ (ख़ुदा) पथ भ्रष्टता तथा गुमराही के युग को और स्त्रियों एवं पुरुषों में फसाद की तीव्र वायु (आंधी) को अच्छी तरह देखता है। गुनाहों में आगे बढ़ने में प्रजा अपनी चरम सीमा को पहुंच गई और अपनी सवारियों की पीठों को घायल कर दिया तथा सच को कोनों-खुदरों में दफ्न कर दिया और झूठ दर्पणों की भांति चमक उठा। यह सब सृष्टि के स्त्रष्टा ने देखा तब उसने अपने बन्दों में से एक बन्दे को इस उपद्रव के अवसर पर अवतरित किया। हे बैर और शत्रुता के अंगारो! क्या तुम उसके फ़ज़्ल (कृपा) पर आश्चर्य करते हो। अत: सन्देहों और कुधारणाओं पर भरोसा न करो। ख़ुदा के भेद गुप्त मोती की भांति हैं। वह हर युग में अपने बन्दों की परीक्षा लेता है। और उसकी हर समय एक शान है और मैं उस हस्ती की क़सम खाता हूं जो समस्त गुप्त बातों को भली भांति जानने वाली तथा सच्चे पुरुषों और स्त्रियों की सहायता करने वाली है कि मैं अल्लाह

المكنون يبلى عباده فى كل زمان، و كل يوم هو فى شان۔ و أُقسِم بعلّامِ المخفيّات، و مُعينِ الصادقين و الصادقات، أنى من الله رب الكائنات۔ ترتعد الارض من عظمته، و تنشق السماء من هيبته، و ما كان لكاذب ملعون أن يعيش عمرا مع فِريته، فاتقوا الله و جلال حضرته۔ ألم يبق فيكم ذرّة من التقوىٰ؟ أنسيتم وعظ كفّ اللسان و خوف العقبى؟ يا أيها الظانّون ظنِ السوء۔ تعالوا و لا تفرّوا من الضوء۔ يا قوم إنى من الله۔ إنى من الله۔ إنى من الله، و أُشهد ربى أنى من الله۔ أؤمن بالله و كتابه الفرقان، و بكل ما ثبت من سيّد الإنس و نبيّ الجانّ۔ و قد بُعثتُ على رأس المائة، لاِجدّد الدين

की ओर से हूं। जो कायनात का रब्ब है जिसकी प्रतिष्ठा से पृथ्वी थरथराती है और जिसके रोब से आकाश फट जाता है। किसी लानती झूठे के लिए यह संभव नहीं कि वह ख़ुदा पर झूठ गढ़ने के बावजूद एक लम्बी आयु पाए। इसलिए ख़ुदा और उसकी हस्ती के प्रताप से डरो। क्या तुम्हारे अन्दर संयम (तक्वा) का कोई कण तक शेष नहीं रहा, क्या तुम जीभ को लगाम देने की नसीहत और परलोक के डर को भूल गए हो? हे कुधारणा करने वालो! आओ और प्रकाश से मत भागो! हे मेरी क़ौम! मैं अल्लाह की ओर से हूं, मैं अल्लाह की ओर से हूं, मैं अल्लाह की ओर से हूं तथा मैं अपने रब्ब को गवाह बनाता हूं, निस्सन्देह मैं अल्लाह की ओर से हूं। मैं अल्लाह, उसकी किताब फ़ुर्क़ान हमीद (क़ुर्आन) और हर उस बात पर ईमान लाता हूं जो जिन्नों और इन्सानों के सरदार नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सिद्ध है और मैं सदी के सर पर अवतरित किया गया हूं ताकि मैं धर्म का नवीनीकरण (तज्दीद) करने और मिल्लत के चेहरे को प्रकाशमान करूँ। अल्लाह इस पर गवाह है और वह जानता है कि कौन दुर्भाग्यशाली है तथा कौन सौभाग्यशाली। हे जल्दबाजों के गिरोह! अल्लाह से डरो क्या तुम में कोई भी विनम्रता ग्रहण करने वाला नहीं। क्या तुम शेरों पर

وأُنوّر وجه الملّة، والله على ذلك شهيد، ويعلم من هو شقي وسعيد۔ فاتقوا الله يا معشر المستعجلين۔ أليس فيكم رجل من الخاشعين؟ أتصولون على الأسود ولا تميّزون المقبول من المردود؟ وفي الأمّة قوم يلحقون بالأفراد، ويكلّمهم ربهم بالمحبّة والوداد، ويُعادى من عاداهم ويوالى من والاهم، ويُطعمهم ويسقيهم، ويكون فيهم وعليهم ولهم، ويُحاطون من ربّ العالمين۔ لهم أسرار من ربهم لا يعلمها غيرهم، ويشرَبُ قلبهم هوى المحبوب ويُوصَلون إلى المطلوب۔ ينوّر باطنهم ويترك ظاهرهم في الملومين، فطوبى لفتى

आक्रमण करते हो? और सर्वप्रिय तथा बहिष्कृत के बीच अन्तर नहीं करते। उम्मते (मुस्लिमा) में एक वर्ग ऐसा भी है जो अद्वितीय लोगों में सम्मिलित है। उनका रब्ब उनसे प्रेम एवं प्यार के साथ वार्तालाप करता है और जो उन से दुश्मनी करे उनसे वह दुश्मनी करता है और जो उन से दोस्ती करे उनसे दोस्ती करता है और वह उन्हें खिलाता-पिलाता है और वह उनके साथ होता है और उन पर साया डालने वाला (सहायक) होता तथा उनका हो जाता है और वे समस्त संसारों (लोकों) के प्रतिपालक की गोद में आ जाते हैं। उन्हें अपने प्रतिपालक की ओर से ऐसे रहस्य मिलते हैं जिन्हें उनके अतिरिक्त कोई नहीं जानता। उनके दिल प्रियतम के प्रेम में उन्मत होते हैं और वे अपने बंधित एवं अमिष्ट का मिलन प्राप्त कर लेते हैं। उनके अन्त:करण को प्रकाशमान किया जाता है और उनके प्रत्यक्ष को निंदा किए जाने वालों में छोड़ दिया जाता है। अत: मुबारक हो उस नौजवान को जो उनके शिष्टाचार अपनाता है तथा जिसकी हर प्रकार की युक्ति उनके सामने समाप्त हो जाती है और वह (जवान) सत्यनिष्ठों की संगत के लिए सच्चाई के घोड़े पर सवार होता है।

يأتـمّ بآدابـهم، وتنكسـر جبائـر مكـرِه في جنابـهم، ويسـرج جواد الصـدق لصحبـة الصادقين۔

هـذا ما كتبنا وألّفنا لك الكتـاب، فإذا وصلك فأمّـلِ الجواب۔ وحاصـل الكلام أنّا قائمون للخصام، لنذيقك جزاء السـهام، ومن آذى الأحرار فأبادنفسه وأبار۔ فاسمَعْ مني المقال، إني أرقُب أن تجمع المـال، فـإذا جمعـتَ وأتممـت السـؤال، فاعلـم أن أحمـد قد صـال وأراك الوبـال والنـكال۔ يـا مسـكين إن مـوت عيسـى مـن البديهيـات، وإنـكاره أكـبر الجهلات، ولكن صـدِئ قلبُك وغلُظ الحجـاب، فـردّدتْ وتقاذفتْ بك الأبواب، فلا تصغَى إلى العظات، ويؤذيك الحق كالكَلِم المحفِظات، وأرداك

यह है हमारे लेख और किताब जो हमने तुम्हारे लिए लिखी। अत: जब तुम्हें यह मिले तो इसका उत्तर लिखो। सारांश यह है कि हम मुक़ाबले के लिए तैयार हैं ताकि हम तुम्हें तुम्हारी धनुर्विद्या (तीर चलाना) का स्वाद चखाएं। जिसने सुशील लोगों को कष्ट दिया तो उसने स्वंय को तबाह और बरबाद कर लिया। मेरी बात सुनो! मैं इस प्रतीक्षा में हूं कि तुम इनाम की राशि जमा करो। जब तुम रक़म जमा कर लो और मांग पूरी कर लो तो फिर जान लो कि **अहमद** तुम पर आक्रमणकारी हो गया और तुम्हें वबाल और इब्रत (सीख) दिखा दी। हे कंगाल! ईसा की मौत स्पष्ट आदेशों में से है जिसके लिए प्रमाण की आवश्यकता नहीं। और इस से इन्कार करना बहुत बड़ी मुर्खता है। परन्तु तुम्हारे दिल को ज़ंग लग चुका है और पर्दे मोटे हो चुके हैं। तूने इन्कार किया और तुझ पर समस्त दरवाज़े बन्द हो गए जिसके कारण तुम नसीहतों पर कान नहीं धर रहे और क्रोध में लाने वाली बातों की भांति सच तुम्हें कष्ट देता है। तुम्हें तुम्हारी पुस्तक पर गर्व और अभिमान ने मारा तथा यही तुम्हारी तबाही का मूल कारण है। मैं तुम्हारे

تباهيك بكتابك وهو أصل تبابك. وإنى عرفت سرّك ومعمّاه، وإن لم يَدْرِ القوم معناه. وما تريد إلا أن تفتتن قلوب السفهاء، وتخدع الجهلاء، لتكون لك عزّةٌ فى الأشقياء، وتفوز فى الأهواء، وهذا خاتمة الكلام، فتدبّرْ كالعقلاء ولا تقعد كالعمين.

هداك الله هل تُرضى العواما　　لكى تستجلِبَنّ منهم حُطاما
وهل فى ملّة الإسلام أثرٌ　　من الكَلِمِ التى تَبرِى خِصاما
أعندك حُجّةٌ إجماعُ قومٍ　　أضاعوا الحق جهلا واهتضاما
ومثلك أُمّةٌ قتلتْ حسينا　　إذا وجدتْ كمنفرد إماما

تمّت

रहस्य (राज़) और उसकी पहेली को जान चुका हूं। चाहे दूसरे लोग इसके अर्थ (उद्‌देश्य) को न जान पाए हों। तुम्हारा उद्‌देश्य केवल मूर्खों के दिलों में फूट पैदा करना तथा अशिक्षित लोगों को चक्मा देना है ताकि तुझे दुर्भाग्यशाली वर्ग में सम्मान प्राप्त हो और तू अपनी इच्छाओं में सफल हो। हम अपनी बात समाप्त करते हैं। अत: बुद्धिमानों के समान सोच-विचार कर और अंधों के समान मत बैठ।

अल्लाह तुझे हिदायत दे क्या तुम जनता को प्रसन्न करना चाहते हो ताकि तुम इस प्रकार उनसे सांसारिक लाभ प्राप्त कर सको।

क्या मिल्लत-ए-इस्लामी में तुम्हारी उन बातों का कोई प्रभाव है जिन से तुम मुकाबला करना चाहते हो।

क्या तुम्हारे पास उस क़ौम के इज्मा का कोई सबूत है, जिसने मुर्खता और अन्याय से सच्चाई को नष्ट कर दिया।

वह उम्मत तुम जैसी थी जिसने हुसैन रज़ि. को उस समय क़त्ल कर दिया जब उन्होंने यह पाया कि वह अनुपम इमाम हैं।

समाप्त।

मौलवी रुसुल बाबा साहिब अमृतसरी की पुस्तक हयातुल मसीह पर एक और दृष्टि तथा एक हज़ार रुपए इनामी जमा कराने के लिए निवेदन

हम अभी वर्णन कर चुके हैं कि इन दिनों में उपरोक्त लिखित शीर्षक मौलवी साहिब ने एक पुस्तक हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को जीवित सिद्ध करने के लिए लिखी है जिसका नाम "हयातुल मसीह" रखा है। परन्तु यदि यह पूछा जाए कि उन्होंने इतनी मेहनत करने और समय नष्ट करने के बावजूद सिद्ध क्या किया है, तो एक न्यायकर्ता व्यक्ति यही उत्तर देगा कि कुछ नहीं। यदि कथित मौलवी साहिब की नीयत अच्छी होती और उनके इस कारोबार का मूल उद्देश्य वास्तविकता की छान-बीन होता न कि और कुछ तो वह इस पुस्तक के लिखने से पहले पवित्र क़ुर्आन की उन स्पष्ट आयतों को ध्यानपूर्वक पढ़ लेते जिन से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु (वफ़ात) इतनी स्पष्टता के साथ सिद्ध हो रही है कि जैसे वह हमारी आँखों के सामने मृत्यु पा गए और दफ्न किए गए। परन्तु अफ़सोस कि मौलवी साहिब इन सुदृढ़ एवं स्पष्ट आयतों से आंख बंद करके गुज़र गए तथा कुछ अन्य आयतों में परिवर्तन करके और अपनी ओर से उनके साथ अन्य वाक्य मिलाकर लोगों को यह दिखाना चाहा कि जैसे इन आयतों से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जीवित रहने का पता लगता है। किन्तु यदि मौलवी साहिब की इस झूठ बनाई हुई कार्रवाई से कुछ सिद्ध होता भी है तो केवल यही कि उनके स्वभाव में यहुदियों की विशेषताओं का ख़मीर भी मौजूद है अन्यथा यह किसी भाग्यवान व्यक्ति का कार्य नहीं है कि पवित्र क़ुर्आन की ज़ाहिरी तरकीब को तोड़-मरोड़ कर तथा आयतों के अलग न होने वाले संबंधो

को एक-दूसरी से अलग करके तथा कुछ वाक्य अपनी ओर बढ़ाकर कोई बात सिद्ध करना चाहे। यदि इसी बात का नाम सबूत है तो कौन सी बात है जो सिद्ध नहीं हो सकती बल्कि प्रत्येक नास्तिक और बेईमान अपने उद्देश्यों को इसी प्रकार सिद्ध कर सकता है। इस बात को कौन नहीं जानता कि एक किताब के मायने इसी स्थिति में उस किताब के मायने कहलाते हैं कि जब उसका क्रम और वाक्यों के संबंध और आगे-पीछे के प्रसंग सुरक्षित रख कर किए जाएं, परन्तु यदि उस पुस्तक के क्रम को ही अस्त-व्यस्त किया जाए और इबारत के भागों को एक-दूसरे से अलग कर दिया जाए तथा अत्यन्त बहादुरी के साथ कुछ वाक्य अपनी ओर से मिला दिए जाएँ तो ऐसी स्वयं बनाई हुई इबारत से यदि कोई उद्देश्य सिद्ध करना चाहें तो क्या यह वही यहुदियों वाला अक्षरान्तरण (तहरीफ़) नहीं है जिसके कारण पवित्र क़ुर्आन में ऐसे लोग सूअर और बन्दर कहलाए जिन्होंने इसी प्रकार तौरात में नस्तिक्तापूर्ण कार्रवाइयां की थीं। यदि ऐसे ही बेईमानी वाले परिवर्तनों और अक्षरांतरणों से हज़रत मसीह का जीवित होना सिद्ध हो सकता है तो फिर हमें तो इक़रार करना चाहिए कि हज़रत मसीह का जीवित रहना सिद्ध हो गया, किन्तु इस बात का क्या इलाज कि ख़ुदा तआला ने ऐसे अक्षरांतरण करने वालों का नाम सुअर और बन्दर रखा है। और उन पर लानत भेजी है तथा उनकी संगत से बचने और पृथक रहने का आदेश है। यह बात याद रखनी चाहिए कि हम ख़ुदा के कलाम को किसी आयत में परिवर्तन करने, बदलने, आगे-पीछे करने तथा वाक्य बनाने के लिए अधिकृत नहीं हैं परन्तु केवल इस स्थिति में कि जब स्वयं नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसा किया हो और यह सिद्ध हो जाए कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमने स्वयं ऐसा परिवर्तन और बदलाव किया है और अब तक ऐसा सिद्ध न हो तो

हम क़ुर्आन की तर्सीअ*और क्रम को अस्त-व्यस्त नहीं कर सकते और न उसमें अपनी ओर से कुछ वाक्य मिला सकते हैं। यदि ऐसा करें तो ख़ुदा के नज़दीक दोषी और पकड़ने योग्य हैं। अब दर्शकगण स्वयं आदरणीय मौलवी साहिब की पुस्तक को देख लें कि क्या वह ऐसी ही कार्रवाइयों से भरी हुई है या कहीं उन्होंने ऐसा भी किया है कि पवित्र क़ुर्आन की कोई आयत इस प्रकार से प्रस्तुत की है कि अपनी ओर से नहीं बल्कि सिद्ध करके दिखा दिया है कि स्वयं रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीस से उस आयत के अर्थ से हज़रत मसीह का जीवित रहना ही सिद्ध होता है और बनावटों एवं अक्षरांतरणों से काम नहीं लिया है। हमें न मौलवी रसूल बाबा साहिब से कुछ हठ और बैर है न किसी अन्य मौलवी साहिब से यदि वे यहुदियों जैसी पद्धति पर न चलें और सही संतुलन से काम लें तो फिर प्रमाणित बात को स्वीकार न करना बेईमानी है। यदि कोई पक्षपातों से पृथक होकर इस बात पर विचार करे कि वास्तविकताएं कैसे सिद्ध होती हैं और उनके सबूत के लिए नियम क्या है तो वह समझ सकता है कि ख़ुदा तआला ने ऐसा नियम केवल एक ही रखा है और वह यह है कि साफ, स्पष्ट और ऐसी स्पष्ट बातों को जिनके लिए प्रमाण की आवश्यकता न हो तो काल्पनिक बातों को सिद्ध करने के लिए बतौर तर्कों के प्रयोग किया जाए। और यदि ऐसी बात को बतौर दलील के प्रस्तुत करें कि वह स्वयं काल्पनिक और संदिग्ध बात है जो बनावटों, तावीलों तथा अक्षरांतरणों से बनाया गया है तो उसे दलील नहीं कहेंगे बल्कि वह एक अलग दावा है जो स्वयं तर्क का मुहताज है। अफ़सोस कि हमारे भोले भाले मौलवी दलील और दावे में

* **तर्सीअ -** इबारत के दो वाक्यों में या शे'र के दोनों चरणों को एक वज़न और एक क्रम में लाना। (अनुवादक)

भी अन्तर नहीं कर सकते, और यदि किसी दावे पर दलील मांगी जाए तो एक और दावा प्रस्तुत कर देते हैं और नहीं समझते कि वह दावा स्वयं ऐसा ही सबूत का मुहताज है जैसा कि पहला दावा। हमने अपने विरोधी मत रखने वाले मौलवियों से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के जीवित रहने एवं मृत्यु के बारे में केवल एक ही प्रश्न किया था। यदि ईमानदारी से उस प्रश्न पर विचार करते तो उनकी हिदायत (मार्ग दर्शन) के लिए एक ही प्रश्न पर्याप्त था। परन्तु किसी को हिदायत पाने की इच्छा होती तो विचार भी करता। प्रश्न यह था कि महा प्रतापी ख़ुदा ने पवित्र क़ुर्आन में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के बारे में दो स्थान पर تَوَفّٰى का शब्द प्रयोग किया है और यह शब्द हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बारे में भी पवित्र क़ुर्आन में आया है तथा ऐसा ही हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की दुआ में भी यही शब्द अल्लाह तआला ने वर्णन किया है तथा कितने अन्य स्थानों में भी मौजूद है। उन समस्त स्थानों पर दृष्टि डालने से एक न्यायप्रिय व्यक्ति पूर्ण सन्तोष से समझ सकता है कि تَوَفّٰى के मायने प्रत्येक स्थान पर रूह कब्ज़ करने और मारने के हैं न कि कुछ और। हदीस की पुस्तकों में भी यही मुहावरा भरा हुआ है। हदीस की पुस्तकों में تَوَفّٰى के शब्द को सैकड़ों स्थान पर पाओगे परन्तु क्या कोई सिद्ध कर सकता है कि मारने के अतिरिक्त किसी अन्य मायने में भी प्रयोग हुआ है? कदापि नहीं, बल्कि यदि एक अरब अनपढ़ व्यक्ति को कहा जाए कि تُوُفِّىَ زَيْد तो वह इस वाक्य से यही समझेगा कि ज़ैद मृत्यु पा गया। खैर अरबों का आम मुहावरा भी जाने दो स्वयं आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मुबारक प्रवचनों से भी यही सिद्ध होता है कि जब कोई सहाबी या आप के परिजनों में से मृत्यु पाता तो आप تَوَفّٰى के शब्द से ही उसकी मृत्यु प्रकट करते थे। और जब

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मृत्यु पाई तो सहाबा ने भी تَوَفّٰی के शब्द से ही आप की मृत्यु (वफ़ात) बयान की। इसी प्रकार हज़रत अबूबकर की मृत्यु, हज़रत उमर की मृत्यु, निष्कर्ष यह कि समस्त सहाबा की मृत्यु تَـوَفّٰی के शब्द से ही लिख-लिख कर वर्णन हुई, और मुसलमानों की मृत्यु के लिए यह शब्द एक सम्मान का शब्द ठहराया गया। तो फिर जब मसीह पर यही शब्द प्रयोग हुआ तो क्यों उसके स्वयं बनाए हुए मायने लिए जाते हैं। यदि यह आम मुहावरे का फैसला स्वीकार नहीं तो फैसले का दूसरा मार्ग यह है कि यह देखा जाए कि मसीह के बारे में जो क़ुर्आन की आयतों में تَـوَفّٰی का शब्द मौजूद है उसके मायने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आपके सहाबा ने क्या किए हैं। अत: हमने यह छान-बीन भी की तो छान-बीन के पश्चात् सिद्ध हुआ कि सही बुख़ारी में अर्थात किताबुत्तफ्सीर में आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِیْ के मायने आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर से मारना ही लिखा है।✶ और फिर इसी स्थान पर आयत اِنِّیْ مُتَوَفِّيْكَ के अर्थ हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि. से مُمِيْتُكَ लिखे हैं। अर्थात हे ईसा मैं तुझे मारने वाला हूं। अब इन मौलवियों से कोई पूछे कि पहला फैसला तो तुम ने स्वीकार न किया, परन्तु सहाबा का फ़ैसला और विशेष तौर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़ैसला स्वीकार न करना और फिर भी कहते रहना कि تَـوَفّٰی के और मायने हैं, ईमानदारी है या बेईमानी। ऐसे द्वेष पर भी हज़ार अफ़सोस कि एक शब्द के मायने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मुंह

✶**हाशिया :-** तिबरानी और मुस्तदरिक में हज़रत आइशा रज़ि. से यह हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपनी मृत्यु की बीमारी में फ़रमाया कि ईसा इब्ने मरयम एक सौ बीस वर्ष तक जीवित रहा।

से भी सुन कर स्वीकार न करें बल्कि कोई अन्य मायने बनाएं तथा उस फ़ैसले को स्वीकार न करें जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने स्वयं कर दिया है। अपने विवाद को अल्लाह और रसूल की ओर न लौटाएं बल्कि अरस्तु और अफलातून के तर्कशास्त्र से सहायता लें। यह सदाचारी लोगों का आचरण नहीं है, यद्यपि निर्दय और कठोर हृदय वाले सदैव ऐसा ही करते हैं। हमारे लिए आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की गवाही से बढ़कर अन्य कोई गवाही नहीं हमारा तो इस बात को सुनकर शरीर कांप जाता है कि जब एक व्यक्ति के सामने रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़ैसला प्रस्तुत किया जाए तो वह उसे स्वीकार नहीं करता और दूसरी ओर बहकता फिरता है। फिर न मालूम उन लोगों के ईमान किस प्रकार के हैं कि न पवित्र–क़ुर्आन का फैसला उनकी दृष्टि में कुछ चीज़ है न रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फ़ैसला, न सहाबा की तफसीर। यह कैसा समय आ गया है कि मौलवी कहला कर अल्लाह-रसूल को छोड़ते जाते हैं, और यदि बहुत तंग किया जाए और कहा जाए कि जिस हालत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने تَوَفِّیْ के अर्थ 'मारना' कर दिए हैं तो फिर आप लोग क्यों स्वीकार नहीं करते तो उन लोगों का अन्तिम उत्तर यह है कि हज़रत मसीह के जीवित रहने पर सर्वसम्मति हो चुकी है। फिर हम क्योंकर स्वीकार कर लें। परन्तु यह बहाना भी गुनाह से अधिक बुरा और अत्यन्त घृणित चालाकी तथा असभ्यता है क्योंकि जिस इज्मा (सर्वसम्मती) में हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सम्मिलित नहीं हैं बल्कि सर्वथा उसके विरोधी हैं वह इज्मा के साथ और क्या वास्तविकता रखता है, इसके अतिरिक्त इज्मा का दावा भी सरासर झूठ और इफितरा है। (देखो पुस्तक मज्मअ बिहारुल अनवर जिल्द-1, पृष्ट-286) जो उसमें

حَكَمًا के शब्द की व्याख्या में लिखा है-

ای حا کمابھٰذہ الشریعة حکما ای ینزل عیسی ینزل لانبیا والاکثر ا عیسی لم یمت وقال مالك ماتت وھو ابن ثلاث وثلاثین سنة۔

अर्थात ईसा ऐसी हालत में उतरेगा जो उस शरीअत के अनुसार आदेश करेगा न कि नबी होकर। और अधिकांश का यह कथन है कि ईसा नहीं मरा। **और इमाम मालिक ने कहा है कि ईसा मर गया और वह तैंतीस वर्ष का था जब निधन हुआ।**

अब देखो की इमाम मालिक रह. किस शान और श्रेणी का इमाम और खैरुलकुरून के युग का तथा करोड़ो लोग उनके अनुयायी हैं। जब उन्ही का यह मत हुआ तो जैसे यह कहना चाहिए कि करोड़ो प्रकाण्ड विद्वान (आलिम-फ़ाज़िल), मुत्तक़ी (संयमी) और वली जो हज़रत इमाम साहिब के सच्चे अनुयायी थे उनका यही मत था कि हज़रत ईसा की मृत्यु हो चुकी है क्योंकि संभव नहीं कि सच्चा अनुयायी अपने इमाम का विरोध करे विशेष तौर पर ऐसी बात में जो न केवल इमाम का कथन बल्कि ख़ुदा का कथन, रसूल का कथन, सहाबा रज़ि० का कथन, ताबिईन✶ का, तबअ ताबिईन✶ का कथन है। अब तोड़ी शर्म करनी चाहिए कि जब ऐसा महान इमाम जो हदीस के समस्त इमामों से पहले प्रकट हुआ और समस्त नबवी हदीसों को जैसे एक दायरे की तरह घेरे हुए था, जब उसी का यह मत हो तो यह कितनी शर्म के विपरीत बात है कि ऐसी समस्या में इज्मा (सर्वसम्मती) का नाम लें। अफ़सोस कि मौलवी लोग जन सामान्य को धोखा तो देते हैं परन्तु बोलने के समय यह नहीं सोचते

✶**ताबिईन –** वह मुसलमान व्यक्ति जिसने रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के किसी सहाबी को देखा हो। (अनुवादक)

✶**तबअ ताबिईन –** वे मुसलमान जिन्होंने ताबिईन को देखा। (अनुवादक)

कि समस्त संसार अंधा नहीं। पुस्तकों के देखने वाले और बेईमानी को सिद्ध करने वाले भी तो इसी क़ौम में मौजूद हैं। ये नाम के मौलवी जब देखते हैं कि क़ुर्आन और हदीस के स्पष्ट आदेशों के प्रस्तुत करने से असमर्थ हो गए और भागने का कोई स्थान शेष नहीं रहा तथा कोई तर्क हाथ में नहीं तो विवश हो कर कह देते हैं कि इस पर इज्मा है। किसी ने सच कहा है।

ملا آن باشد کہ بند نشود اگرچہ دروغ گوید

ये लोग यह भी जानते हैं कि स्वयं इज्मा के अर्थों में ही मत भेद है। कुछ सहाबा तक ही सीमित रखते हैं, कुछ लोग तीन युगों तक, कुछ इमामों तक। परन्तु सहाबा और इमामों का हाल तो ज्ञात हो चुका तथा इज्मा को तोड़ने के लिए एक सदस्य का बाहर रहना भी पर्याप्त होता है कहां यह कि इमाम मालिक रज़ि. जैसा महान इमाम जिसके कथन के करोड़ों लोग अनुयायी होंगे। हज़रत ईसा की मृत्यु का स्पष्ट तौर पर मानने वाला हो और फिर ये लोग कहें कि उनके जीवित रहने पर इज्मा है। शर्म, शर्म, शर्म। और इज्मा के बारे में इमाम अहमद रज़ि. का कथन बड़ी छान-बीन और न्याय पर आधारित है। वह कहते हैं कि जो व्यक्ति इज्मा का दावा करे वह झूठा है। इससे ज्ञात हुआ कि मुसलमानों के लिए सच्चा और पूर्ण दस्तावेज क़ुर्आन और हदीस ही है, शेष सब तुच्छ। परन्तु जो हदीस क़ुर्आन के स्पष्ट एवं शक्ति शाली तर्कों के विपरीत और उसके क़िस्सों के विरुद्ध कोई क़िस्सा वर्णन करेगी वास्तव में वह हदीस नहीं होगी कोई अक्षरों में परिवर्तन किया हुआ कथन होगा या सिरे से मन घड़त और बनावटी। ऐसी हदीस निस्सन्देह खण्डन करने योग्य होगी। किन्तु यह ख़ुदा तआला का फ़ज़्ल और करम (कृपा) है कि मसीह की मृत्यु के मामले में किसी स्थान पर हदीस ने पवित्र क़ुर्आन का विरोध नहीं किया

बल्कि पुष्टि की। क़ुर्आन में مُتَوَفِّيْكَ (मुतवफ्फीका) आया है, हदीस में مُمِيْتُكَ (मुमीतुका) आ गया है, क़ुर्आन में فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ (फ़लम्मा तवफ्फैतनी) आया, हदीस में रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वही शब्द 'फ़लम्मा तवफ्फैतनी' बिना किसी परिवर्तन तथा बदलने के स्वयं पर चरितार्थ करके प्रकट कर दिया कि इसके अर्थ मारना है न कि और कुछ। तथा नबी की शान से दूर है कि ख़ुदा तआला के अभिप्रेत अर्थों का अक्षरांतरण करे। पवित्र क़ुर्आन की एक आयत, जिसके अर्थ ख़ुदा तआला के नज़दीक जीवित उठा लेना हो उसी को अपनी ओर सम्बद्ध करके उसके अर्थ मार देना कर दे यह तो बेईमानी और अक्षरांतरण है और नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ओर इस गन्दी कार्रवाई को सम्बद्ध करना मेरे नज़दीक प्रथम श्रेणी का पाप बल्कि कुफ़्र के निकट-निकट है। अफ़सोस कि हज़रत ईसा को जीवित सिद्ध करने के लिए इन बेईमान पेशा मौलवियों की नौबत कहां तक पहुंची है कि नऊज़ुबिल्लाह आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी क़ुर्आन का अक्षरांतरण कर्ता ठहराया। इसके अतिरिक्त क्या कहें कि बेईमानों और झूठों पर ख़ुदा की लानत। यह बात बहुत सीधी और साफ थी कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आयत 'फ़लम्मा तवफ्फैतनी' को इसी प्रकार स्वयं के बारे में सम्बद्ध कर लिया, जैसा कि वह आयत हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ओर सम्बद्ध थी और सम्बद्ध करने के समय यह न कहा कि इस आयत को जब हज़रत ईसा की ओर सम्बद्ध करें तो इसके और अर्थ होंगे और जब मेरी ओर सम्बद्ध हो तो इसके और अर्थ हैं। हालांकि यदि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नियत में को मायनों में परिवर्तन होता तो फ़ित्न: दूर करने के लिए यह सर्वथा कर्तव्य था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस उपमा और

दृष्टांत (तम्सील) के अवसर पर कह देते कि मेरे इस बयान से कहीं यों न समझ लेना कि जिस प्रकार मैं क़यामत के दिन 'फ़लम्मा तवफ्फैतनी' कह कर यही कहेंगे कि मेरी मृत्यु के पश्चात बिगड़े। इसी प्रकार हज़रत मसीह भी 'फ़लम्मा तवफ्फैतनी' कह कर यही कहेंगे कि मेरी मृत्यु के पश्चात मेरी उम्मत के लोग बिगड़े। क्योंकि 'फ़लम्मा तवफ्फैतनी' से मैं तो अपना मृत्यु पाना अभिप्राय रखता हूँ परन्तु मसीह की ज़बान से जब 'फ़लम्मा तवफ्फैतनी' निकलेगा तो मृत्यु पाना अभिप्राय नहीं होगा बल्कि जीवित उठाया जाना अभिप्राय होगा। परन्तु आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह अन्तर करके नहीं दिखाया, जिससे अटल तौर पर सिद्ध है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दोनों अवसरों पर एक ही मायने अभिप्राय लिए हैं। अत: अब तनिक आंखे खोल कर देख लेना चाहिए कि जब 'फ़लम्मा तवफ्फैतनी' के शब्द में आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत ईसा दोनों सम्मिलित हैं जैसे यह आयत दोनों के बारे में आई है तो इस आयत के चाहे जो भी अर्थ करो दोनों उसमें सम्मिलित होंगे, तो यदि तुम यह कहो कि यहां "तवफ्फा" के मायने जीवित आकाश पर उठाया जाना अभिप्राय है तो तुम्हें इक़रार करना पड़ेगा कि इस जीवित उठाए जाने में हज़रत ईसा की कुछ विशेषता नहीं बल्कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं, क्योंकि आयत में दोनों की समान भागीदारी है। परन्तु यह तो ज्ञात है कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जीवित आकाश पर नहीं उठाए गए बल्कि मृत्यु पा चुके हैं और मदीना मुनव्वरा में आपकी मुबारक क़ब्र मौजूद है, तो फिर इससे तो बहरहाल स्वीकार करना पड़ा कि हज़रत ईसा भी मृत्यु पा चुके हैं और फिर मेहरबानी तो यह कि हज़रत ईसा की भी शाम (सीरिया) के देश में क़ब्र मौजूद है। हम अधिक सफाई के लिए हाशिए में बिरादरम

हुब्बी फ़िल्लाह सय्यद मौल्वी मुहम्मद अस्सईदी तराबिलसी की गवाही दर्ज करते हैं और वह तराबिलस शाम (सीरिया) देश के निवासी हैं और उन्हीं की सीमाओं में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र है।★ और यदि कहो कि वह क़ब्र नकली है तो इस नकली का प्रमाण देना चाहिए और सिद्ध करना चाहिए कि यह नकल किस समय बनाई गई है और इस स्थिति में दुसरे नाबियों की क़ब्रों के बारे में भी संतुष्टि नहीं रहेगी। और

★हाशिया :- जब मैंने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र के बारे में हज़रत सय्यद मौलवी मुहम्मद अस्सईदी तराबलसी अश्शामी से पत्र द्वारा पूछा तो उन्होंने मेरे पत्र के उत्तर में यह पत्र लिखा जिसको मैं अनुवाद सहित नीचे लिखता हूँ -

يا حضرة مولانا و امامنا السلام عليكم و رحمة الله و بركاته نسأل الله الشافی ان يشفيكم اما ما سألتم عن قبر عيسی عليه السلام و حالات اخری مما يتعلق به فابيّنه مفصّلا فی حضرتكم و هو ان عيسٰی عليه السلام ولد فی بيت لحم و بينه و بين بلدة القدس ثلثة اقواس و قبره فی بلدة القدس و الی الان موجود و هنالك كنيسة و هی اكبر الكنائس من كنائس النصاری و داخلها قبر عيسٰی عليه السلام كما هو مشهود و فی تلك الكنيسة ايضا قبر امه مريم و لكن كل من القبرين عليحدة و كان اسم بلدة القدس فی عهد بنی اسرائيل يروشلم و يقال ايضا اورشليم و سمّيت من بعد المسيح ايلياء و من بعد الفتوح الاسلامية الی هذا الوقت اسمها القدس و الاعاجم تسميها بيت المقدس و اما عدة اميال الفصل بينها و بين طرابلس فلا اعلمها تحقيقا نعم يعلم تقريبا نظرا علی الطرق و المنازل و تختلف الطرق الطريق الاول من طرابلس الی بيروت فمن طرابلس الی بيروت منزلين متوسطين و قدر المنزل عندنا من الصباح الی قريب العصر و من بيروت الی صيدا منزل واحد و من صيدا الی حيفا منزل واحد و من حيفا الی عكا منزل واحد و من عكا الی سور منزل واحد و يقال لبلاد الشام سوريه نسبةً الی تلك البلدة فی القديم ثم من سور الی يافا منزل كبير و هی علی ساحل البحر و منها الی القدس منزل صغير و الان صنع الريل منها الی القدس و يصل القاصد من يافا الی القدس

सुरक्षा जाती रहेगी तथा कहना पड़ेगा कि शायद वे समस्त क़ब्रें बनावटी (जाली) ही हों। बहरहाल आयत 'फ़लम्मा तवफ्फैतनी' से यही मायने सिद्ध हुए कि मार दिया। कुछ नाम के मौलवी मुर्ख कहते हैं कि यह तो सच है कि इस आयत फ़लम्मा तवफ्फैतनी के मायने मारना ही हैं न कि कुछ और परन्तु वह मृत्यु उतरने के पश्चात् घटित होगी और अब तक घटित नहीं हुई।

परन्तु अफ़सोस कि ये मूर्ख नहीं समझते कि इस प्रकार से आयत के मायने खराब हो जाते हैं। क्योंकि आयत के मायने तो यह हैं कि हज़रत ईसा ख़ुदा के सामने कहेंगे कि मेरी उम्मत के लोग मेरे मरने के बाद बिगड़े हैं। अर्थात् जब तक मैं जीवित था वे सब सीधे मार्ग पर क़ायम थे और मेरी मृत्यु के पश्चात् मेरी उम्मत बिगड़ गई न कि मेरे जीवित रहते।

فی اقل من ساعة فعدة المسافة من طرابلس الی القدس تسعة ایام مع الراحة والیها طرق من طرابلس واقربها طریق البحر بحیث لورکب الانسان من طرابلس بالمرکب النار ی یصل الی یافا بیوم ولیلة ومنها الی القدس ساعة فی الریل والسلام علیکم ورحمة اللہ و برکاته ادام اللہ وجود کم وحفظکم وایدکم ونصرکم علی اعدائکم اٰمین

کتبه خادمکم محمد السعیدی الطرابلسی عفا اللہ عنه

(हे हज़रत मौलाना और हमारे इमाम! अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाहे व बरकातुहू। मैं ख़ुदा तआला से चाहता हूं कि आपको शिफ़ा प्रदान करे (मेरी बीमारी की हालत में यह पत्र शामी साहिब का आया था) जो कुछ अपने ईसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र और दूसरी हालतों के संबंध में प्रश्न किया है, वह मैं आपकी सेवा में विस्तार पूर्वक वर्णन करता हूं और वह यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बैतुल्लहम में पैदा हुए। और बैतुल्लहम और बल्दह क़ुदुस में तीन कोस की दूरी है और हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की क़ब्र बल्दह क़ुदुस में है और अब तक मौजूद है और इस पर एक गिरजा बना हुआ है और वह गिरजा समस्त गिरजों से बड़ा है। और उसके अन्दर हज़रत ईसा की क़ब्र है और उसी गिरजे में

फिर यदि यह कहा जाए कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की अब तक मृत्यु नहीं हुई तो साथ ही यह भी इक़रार करना पड़ेगा कि उनकी उम्मत भी अब तक बिगड़ी नहीं। क्योंकि आयत अपने सन्दर्भ से स्पष्ट तौर पर बता रही है कि उम्मत नहीं बिगड़ेगी जब तक कि उनकी मृत्यु न हो जाए। और 'फौत' का शब्द या यों कहो कि मरने की वास्तविकता बहुत स्पष्ट है जिसको समस्त संसार जानता है। और वह यह कि जब एक मनुष्य को "फौतशुदा" (मृत्यु पाया हुआ) कहेंगे तो इस से यही अभिप्राय होगा कि मृत्यु के फ़रिश्ते ने उसकी रूह को क़ब्ज़ करके (निकाल कर) शरीर से अलग कर दिया है। अब इन्साफ़ करने वाले इन्साफ़ से बताएं कि हज़रत ईसा की मृत्यु पर इस से बढ़कर क्या प्रमाण होगा और क्या संसार में इस से बढ़कर तार्किक फ़ैसला संभव है जो इस आयत ने कर

हज़रत मरयम सिद्दीका की क़ब्र है। और दोनों क़ब्रें अलग-अलग हैं। बनी इस्राईल के युग में बल्दह-क़ुदुस का नाम यरोशलम था और उसे औरशलम भी कहते हैं। और हज़रत ईसा की मृत्यु हो जाने के पश्चात इस शहर का नाम एलिया रखा गया फिर इस्लामी विजयों के बाद इस समय तक इस शहर का नाम क़ुदुस के नाम से प्रसिद्ध है तथा ग़ैर अरब लोग इसे 'बैतूल मुक़द्दस' के नाम से पुकारते हैं। परन्तु तराबलस और क़ुदुस में जो दूरी है मैं निश्चित तौर पर उसे नहीं बता सकता कि कितनी है। हां मार्गों और मंज़िलों की दृष्टि से लगभग मालूम है तथा तराबलस से क़ुदुस की ओर जाने के कई मार्ग हैं। एक मार्ग यह है कि तराबलस से बैरूत को जाएं और तराबलस से बैरूत तक दो मध्यम श्रेणी के मंज़िल हैं। और हम लोग मंज़िल (पड़ाव) उसे कहते हैं जो सुबह से अस्र तक किया जाए। और फिर बैरूत से सैदा तक एक मंज़िल और सैदा से हैफ़ा तक एक मंज़िल और हैफ़ा से उका तक एक मंज़िल और उका से सूर तक एक मंज़िल और बिलाद-ए-शाम को सूरिया इसी संबंध के कारण कहते हैं। अर्थात् इस प्राचीन बल्दह की ओर सम्बद्ध करके सूरिया नाम रखते हैं। फिर सूर से याफा तक एक मंज़िल कबीर है और याफ़ा

दिया। फिर इसके मुकाबले पर यहुदियों की तरह ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम को अक्षरांतरण (अक्षरों में परिवर्तन करके) तथा गन्दे दिल के साथ अपनी ओर से उसमें मायने गढ़ना यदि पाप और नास्तिकता की पद्धति नहीं है तो और क्या है। इन्साफ़ यह था की यदि इस ठोस और निश्चित सबूत को मानना नहीं था तो उसका खण्डन करके दिखाते। परन्तु हमारे विरोधियों ने ऐसा नहीं किया और तुच्छ तावीलें करके तथा सच्चाई के मार्गों को पूर्णतया छोड़ कर हम पर सिद्ध कर दिया कि उन्हें सच्चाई की कुछ भी परवाह नहीं है।

उन्होंने ईसा के जीवित रहने के इन्कार को कुफ्र की बात तो ठहराया परन्तु आंख खोलकर न देखा कि क़ुर्आन और अन्तिम युग के नबी दोनों शब्द और भाषा में सहमत हज़रत ईसा की मृत्यु को मानते हैं। इमाम मालिक जैसे महान इमाम वफ़ात (मृत्यु) के कायल हो गए और इमाम बुख़ारी जैसे युग के मान्य हदीस के इमाम ने केवल मृत्यु को सिद्ध

समुद्र के किनारे पर है और याफ़ा से क़ुदुस तक एक छोटी सी मंज़िल है और अब याफ़ा से क़ुदुस तक रेल तैयार हो गई है। यदि एक यात्री याफ़ा से क़ुदुस की ओर सफर करे तो एक घंटे से पहले पहुंच जाता है। तो इस हिसाब से तराबलस से क़ुदुस तक नौ दिन का सफर आराम के साथ है। परन्तु समुद्र का मार्ग बहुत निकट है। यदि मनुष्य अग्नि बोट में बैठ कर तराबलस से क़ुदुस को जाना चाहे तो याफ़ा तक केवल एक दिन और एक रात में पहुंच जाएगा और याफ़ा से क़ुदुस तक केवल एक घंटे के अन्दर।

वस्सलाम-ख़ुदा आपको सुरक्षित रखे और संरक्षक तथा सहायक हो और शत्रुओं पर विजय प्रदान करे। आमीन

लेखक-आपका सेवक

(मुहम्मद अस्सईदी अत्तराबलसी अफल्लाहु अन्हो)

करने के लिए दो भिन्न-भिन्न स्थानों की आयतों को एक स्थान पर एकत्र किया, इब्ने क़य्यिम जैसे मुहद्दिस ने 'मदारिजुस्सादिक़ीन' में मृत्यु का इक़रार कर दिया। ऐसा ही अल्लामा शेख अली बिन अहमद ने अपनी पुस्तक सिराजे मुनीर में उनकी मृत्यु को स्पष्ट किया। मो'तज़िल: के बड़े-बड़े उलेमा मृत्यु को मानने वाले गुज़र गए। परन्तु अभी तक हमारे विरोधियों की दृष्टि में हज़रत ईसा के जीवित रहने पर इज्मा ही रहा। यह खूब इज्मा है। ख़ुदा तआला इन लोगों के हाल पर रहम करे यह तो हद से गुज़र गए। जो बातें अल्लाह और रसूल के कथन से सिद्ध होती हैं उन्हीं को कुफ्र की बातें ठहराया। اِنَّـا لِلّٰهِ وَاِنَّـا اِلَيْـهِ رَاجِعُـوْنَ

अब हम इस बात को अधिक लम्बा करना नहीं चाहते और न हम जतलाना चाहते हैं कि मौलवी रुसुल बाबा साहिब की पुस्तक 'हयातुलमसीह' कितनी निराधार और निरर्थक बातों से भरी है। किन्तु अत्यावश्यक बात जिसके लिए हमने यह पुस्तक लिखी है कि कथित मौलवी साहिब ने अपनी कथित पुस्तक में केवल जनता का दिल ख़ुश करने के लिए ये कुछ शब्द भी मुंह से निकाल दिए हैं कि यदि हमारे मसीह के जीवित रहने पर हमारे तर्कों का खण्डन करके दिखा दें तो हम हज़ार रुपया देंगे। यद्यपि तर्कों का हाल तो मालूम है कि कथित मौलवी साहिब ने अकारण कुछ पृष्ठ काले करके अपना एक पुराना पर्दा फाश किया और ऐसी निरर्थक बातें लिखी कि हम दो नामों के अतिरिक्त तीसरा नाम रख ही नहीं सकते अर्थात् या तो वे केवल दावे हैं जिनको तर्क कहना अनुचित और मूर्खता है और या यहुदियों की तरह पवित्र क़ुर्आन का अक्षरांतरण है इस से अधिक कुछ नहीं। और मालूम होता है कि उनके दिल में भी यह विश्वास जमा हुआ है कि मेरी पुस्तक में कुछ नहीं। इसलिए उन्होंने इसे छुपाने के लिए पुस्तक के अन्त में

कह भी दिया है कि मेरी पुस्तक समझ में नहीं आएगी जब तक कोई एक-एक पाठ मुझ से न पढ़े। यह क्यों कहा? केवल इसलिए कि उनको मालूम था कि उनकी पुस्तक सन्देहों का निवारण करने वाले प्रमाणों से रिक्तमात्र और खाली ढोल है। और जानने वाले अवश्य जान जाएंगे कि इसमें कुछ नहीं। इसलिए किसी बात को दूसरी असंभव बात पर निर्भर करने की तरह उन्होंने यह कह दिया कि वे तर्क जो मैंने लिखे हैं ऐसे छुपे हुए हैं कि वे हर एक को दिखाई नहीं देंगे और केवल मेरी ज़बान उनकी कुंजी रहेगी तथा जब तक कोई मेरे दरवाज़े पर एक समय तक ठहर कर और मेरा शिष्य बन कर इस बकवास के भण्डार का एक-एक पाठ मुझ से न पढ़े तब तक संभव ही नहीं कि उन अस्त-व्यस्त पृष्ठों से कुछ प्राप्त हो सके। हे व्यर्थ की बातें करने वाले मौलवी! यदि तेरे तर्क ऐसे ही गहराई में पड़े हुए और अंधकार में उतरे हुए हैं कि वे तेरी पुस्तक में एक ज़िन्दा सबूत की तरह अपना वजूद बता ही नहीं सकते तो ऐसी निरर्थक और बेकार पुस्तक के लिखने की आवश्यकता ही क्या थी जब तुझे स्वयं मालूम था कि तर्क अत्यन्त बेकार और निरर्थक हैं यहां तक कि तेरे मौखिक बकवास के अतिरिक्त बिना निशान हैं तो ऐसी पुस्तक का लिखना ही बेफायदा था बल्कि उनका तर्क नाम रखना ही अनुचित और शर्म का स्थान तथा डींगें मारने में सम्मिलित है।

यद्यपि इस उपद्रवपूर्ण संसार में हज़ारों प्रकार के छल हो रहे हैं परन्तु ऐसा छल किसी ने कम सुना होगा कि जो इस मौलवी रुसुल बाबा साहिब ने किया कि तर्कों को समझने के लिए शागिर्द होने तथा पुस्तक को एक-एक पाठ करके पढ़ने की शर्त लगा दी और दिल में विश्वास कर लिया कि यह तो किसी बुद्धिमान से हरगिज़ नहीं होगा कि एक मूर्ख एवं मंदबुद्धि व्यक्ति की शागिर्दी ग्रहण करे और उसकी शैतानी पुस्तक

उससे एक-एक पाठ पढ़े इस आशा के साथ कि हज़रत मसीह के जीवित रहने के तर्क ऐसे गुप्त तौर पर उसकी पुस्तक में छपे हुए हैं कि समस्त संसार उनको अपनी आंखों से देख नहीं सकता और न उनकी पुस्तक में उनका पता लगा सकता है। यद्यपि हज़ार या करोड़ बार पढ़े और न पुस्तक में उनका कुछ पता लग सकता है कि कहां हैं। केवल लेखक के मार्ग दर्शन से दिखाई दे सकते हैं अन्यथा क़यामत तक पता लगने से निराशा है।

हे दर्शक गण! क्या आप लोगों ने कभी इससे पहले भी कोई ऐसी पुस्तक सुनी है जिसके तर्क पुस्तक में दर्ज होकर फिर भी लेखक के पेट में ही रहें। अफ़सोस कि आजकल के हमारे मौलवियों में ऐसे ही व्यर्थ छल पाए जाते हैं, जिन से विरोधियों को हंसी ठट्ठा करने का अवसर मिलता है। इसका कारण यही है कि जो उलेमा और विद्वान तथा अहले इल्म हैं वे तो इन अदूरदर्शी और मूर्खों से अलग हो कर हमारी ओर आ जाते हैं। रहे नाम के मौलवी जो उर्दू भी अच्छी तरह नहीं लिख सकते, पवित्र क़ुर्आन तथा हदीसों से अपरिचित हैं। वे केवल बाप-दादों के अनुसरण के कारण हमारे ऐसे विरोधी हो गए हैं कि ख़ुदा जाने कि हम ने उनके किस बाप या दादे को क़त्ल कर दिया है। इन लोगों का रात-दिन का कोई नियमित धार्मिक कर्तव्य गालियां, ठट्ठा और काफ़िर ठहराना है जैसे कभी मरना नहीं, कभी पूछा नहीं जाएगा कि तुम ने मुसलमानों को क्यों काफ़िर कहा। ख़ुदा तआला से लड़ाई कर रहे हैं, हठधर्मी से नहीं रुकते। परन्तु अवश्य था कि आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की यह भविष्यवाणी भी पूरी होती कि महदी मा'हूद अर्थात् उसी मसीह मौऊद का जब प्रादुर्भाव होगा तो उस समय के मौलवी उस पर कुफ्र का फ़त्वा लिखेंगे और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैं कि

वे फ़त्वा लिखने वाले लोग सम्पूर्ण संसार के बुरे लोगों से भी अधिक बुरे होंगे और समस्त पृथ्वी पर ऐसा कोई भी पापी नहीं होगा जैसा कि वे। वे हरगिज़ स्वीकार नहीं करेंगे परन्तु कपट से। अफ़सोस इन बुद्धू लोगों को इतनी भी समझ नहीं कि जो व्यक्ति अल्लाह और रसूल के कथन के अनुसार कहता है वह कैसे काफ़िर हो जाएगा। क्या कोई व्यक्ति इस बात को स्वीकार कर लेगा कि वह हज़ारों बुज़ुर्गों और वलियों को जो तेरह सौ वर्ष तक अर्थात् इन दिनों तक हज़रत ईसा का मृत्यु पा जाना मानते चले आए वे सब काफ़िर ही हैं और नऊज़ुबिल्लाह इमाम मालिक रज़ियल्लाहु तआला अन्हो भी काफ़िर हैं जिन्होंने अपने करोड़ों अनुयायियों को यही शिक्षा दी और नऊज़ुबिल्लाह इमाम बुख़ारी भी काफ़िर जिन्होंने हज़रत ईसा की मृत्यु के बारे में अपनी सहीह में एक विशेष अध्याय (बाब) बांधा। इब्ने क़य्यिम भी काफ़िर जिन्होंने उनको हज़रत मूसा की तरह मुर्दों में शामिल किया इन बुज़ुर्गों के मुसलमान जानने वाले भी सब काफ़िर और मो'तज़िल: सब काफ़िर जिन की आस्था ही यही है कि हज़रत ईसा की वास्तव में मृत्यु हो चुकी है।

हे भलेमानस मौलवियों! क्या तुम्हें एक दिन मौत नहीं आएगी कि धृष्टता और चालाकी से समस्त संसार को काफ़िर बना दिया। ख़ुदा तआला तो फ़रमाता है कि जो तुम्हें अस्सलामो अलैकुम कहे उसे यह मत कहो कि لَسْتَ مُؤْمِنًا कि तू मोमिन नहीं है अर्थात् उसको काफ़िर मत समझो, वह तो मुसलमान है परन्तु तुमने उसे काफ़िर ठहराया जो समस्त ईमानी आस्थाओं में तुम्हारे भागीदार हैं, अहले क़िब्ल: हैं और शिर्क से पृथक तथा निजात (मुक्ति) का आधार रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अनुसरण को जानते हैं और अनुसरण से मुंह फेरने वाले को लानती, नरकी और अग्नि में डाले जाने वाला समझते हैं। हे

दुष्ट मौलवियों! तनिक मरने के पश्चात् देखना कि इस जल्द बाज़ी की दुष्टता का तुम्हें क्या फल मिलता है। क्या तुमने हमारा सीना फाड़ा और देख लिया कि अन्दर कुफ़्र है ईमान नहीं और सीना काला है साफ़ नहीं। थोड़ा सब्र करो इस संसार की आयु कुछ अधिक लम्बी नहीं।

तुम्हारे नज़दीक केवल कुछ उपद्रवी मौलवी जो इस्लाम के लिए शर्म का स्थान हैं, मुसलमान हैं और शेष समस्त संसार काफ़िर। अफ़सोस कि ये लोग कितने कठोर दिल हो गए, उनके दिलों पर कैसे पर्दे पड़ गए। हे ख़ुदा! इस उम्मत पर दया कर और इन मौलवियों की बुराई से इनको बचा ले और यदि ये हिदायत के योग्य हैं तो इनको हिदायत कर अन्यथा इन्हें पृथ्वी से उठा ले ताकि अधिक बुराई न फैले। ये लोग वास्तव में मौलवी भी तो नहीं हैं। तभी तो हमने इन लोगों के मुखिया और फ़ित्नों के इमाम एवं उस्ताद **शेख़ मुहम्मद हुसैन बत्तालवी** को अपनी पुस्तक 'नूरुल हक़' में सम्बोधित करके कहा है कि यदि उसको अरबी भाषा का कुछ ज्ञान प्राप्त है तो इस पुस्तक का सदृश बना कर प्रस्तुत करे और पांच हज़ार रुपया इनाम पाए, परन्तु शेख़ ने इस ओर मुंह भी नहीं किया। हालांकि कथित शेख इन समस्त लोगों के लिए बतौर उस्ताद है और उसी के उकसाने से ये मुर्दे हरकत कर रहे हैं।

हम बार-बार कहते हैं और बल देकर कहते हैं कि शेख और ये उसके समस्त चेले मात्र मूर्ख और अज्ञानी तथा अरबी विद्याओं से अपरिचित हैं! हमने सूरह फातिहा की तफसीर इन्हीं लोगों की परीक्षा के उद्देश्य से लिखी है, और 'नूरुल हक़' पुस्तक यद्यपि ईसाइयों की मौलवियत की परीक्षा लेने के लिए लिखी गई। परन्तु ये कुछ विरोधी अर्थात् **शेख़ मुहम्मद हुसैन बत्तालवी** और उसके पद-चिह्नों पर चलने वाले मियां रुसुल बाबा इत्यादि जो काफ़िर कहने वाले, गालियां देने वाले

और निन्दा करने वाले हैं इस वार्ता से बाहर नहीं हैं। इल्हाम से यही सिद्ध हुआ है कि कोई काफ़िर और काफ़िर कहने वालों में से पुस्तक 'नूरुल हक़' का उत्तर नहीं लिख सकेगा। क्योंकि वे झूठे, काज़िब और मुफ्तरी, मूर्ख एवं अज्ञानी हैं।

यदि ये हमारे इल्हाम को इल्हाम नहीं समझते और अपनी दूषित प्रकृति के कारण उसे बीमारी, बनावट या शैतानी भ्रम समझते हैं तो पुस्तक 'नूरुल हक़' का उत्तर निर्धारित समय सीमा में लिखें और यदि नहीं लिख सकते तो हमारा इल्हाम प्रमाणित। फिर जिन लोगों ने अपनी अयोग्यता और अज्ञानता दिखा कर हमारा इल्हाम स्वयं ही सिद्ध कर दिया तो वे एक प्रकार से हमारे दावे को स्वीकार कर गए। फिर विरोधात्मक बल्वास सुनने योग्य नहीं। हमारी ओर से समस्त पादरियों, **शेख़ मुहम्मद हुसैन बत्तालवी और मौलवी रुसुल बाबा अमृतसरी तथा उनके अन्य साथी इस मुक़ाबले के लिए आमंत्रित हैं और मुक़ाबले के निवेदन के लिए उन सब को जून 1894 के अन्त तक छूट दी है तथा मुक़ाबले पर पुस्तक प्रकाशित करने के लिए निवेदन के दिन से तीन महीने की समय सीमा है।**

फिर यदि जून 1894 ई. के अन्त तक निवेदन न करें तो इसके बाद कोई निवेदन नहीं सुना जाएगा और उनकी नादानी हमेशा के लिए सिद्ध हो जाएगी और मौलवियत का शब्द उनसे छीन लिया जाएगा परन्तु यदि वे जून 1894 ई. के अन्दर मुक़ाबले पर पुस्तक बनाने के लिए निवेदन कर दें तो समस्त निवेदन कर्ताओं का एक ही निवेदन समझा जाएगा और केवल पांच हज़ार रुपया जमा करा दिया जाएगा न कि अधिक और उनमें से जो लोग मुक़ाबले पर पुस्तक बनाने में सफल समझे जाएँगे चाहे वे ईसाई होंगे या ये सत्य के विरोधी नाम के मौलवी और या

दोनों, वे इन पांच हज़ार रुपयों को आपस में बांट लेंगे। उन्हें अधिकार होगा। कि सब सामूहिक तौर पर पुस्तक बना दें। संभवत: इस प्रकार से उनको आसानी होगी, परन्तु उनके लिए अन्तिम परिणाम यही होगा कि خسر الدنیاوالاخرۃوسـوادلوجہ فـہ الداریـن और यदि हम उनका यह निवेदन आने के पश्चात् जिस पर कम से कम दस प्रसिद्ध रईसों की गवाहियां अंकित होनी चाहिए और जो किसी अख़बार में छापकर हमारे पास रजिस्ट्री द्वारा पहुंचानी चाहिए। तीन सप्ताह तक किसी बैंक में पांच हज़ार रुपए जमा न कराएं तो हम झूठे और हमारा सारा दावा झूठा समझा जाएगा, क्योंकि मौखिक इनाम देने का दावा कुछ चीज़ नहीं। एक झूठा बुरी नियत रखने वाला भी ऐसा कर सकता है। सच्चा वही है कि जो उसकी जीभ से निकले कर दिखाए अन्यथा झूठों पर ख़ुदा की लानत। किन्तु यदि हमने रुपया जमा करा दिया और फिर कपट पेशा लोग मुक़ाबले पर आने से भाग गए तो इस वचन भंग करने के कारण जो कुछ खर्च हम पर पड़ेगा वह सब सीधे तौर पर या अदालत द्वारा उनसे लिया जाएगा तथा इस स्थिति में भी जब कि वे उत्तर लिखने में दायित्व पूरा न कर सकें तो इस का इक़रार भी उनके निवेदन में होना चाहिए।

अब हम मौलवी रुसुल बाबा के हज़ार रुपए इनाम का वर्णन करते हैं। हम वर्णन कर चुके हैं कि मौलवी रुसुल बाबा साहिब ने अपनी पुस्तक 'हयातुलमसीह' को हज़ार रुपए इनाम की शर्त से प्रकाशित किया है कि जो व्यक्ति उनके तर्कों का खण्डन कर दे उसे हज़ार रुपया इनाम दिया जाए। परन्तु कथित मौलवी साहिब ने इसी पुस्तक में यह भी वर्णन कर दिया है कि कथित पुस्तक में वे तर्क एक मुअम्मा या पहेली की तरह गुप्त रखे गए हैं, वे किसी को मालूम ही नहीं हो सकते जब तक कोई उन्हीं से उस पुस्तक को एक-एक पाठ करके न पढ़े। बुद्धिमान को ज्ञात

हो गया होगा कि ये बातें किस भय ने उनके मुंह से निकलवाई हैं और दिल में कौन सा धड़का था जिससे इन छल-कपटों की आवश्यकता हुई। हम तो इन बातों के सुनते ही डाइन के अढाई अक्षर (चुड़ैल की करतूत) मालूम कर गए और समझ गए कि किस दर्द से यह मातम किया गया है तथा किस भय से तर्कों का हवाला अपने पेट की ओर दिया गया है।

बहरहाल हम उनको इस पुस्तक द्वारा अवगत करते हैं कि वे जून 1894 ई. के अन्त तक हज़ार रुपए ख्वाजा यूसुफ शाह साहिब और शेख़ ग़ुलाम हुसैन साहिब और मीर महमूद शाह के पास अर्थात् तीनों की सहमति के साथ जमा करा के उनके हस्तलिखित पत्र के साथ हमें सूचित करें जिसमें उनका यह इक़रार हो कि हमने हज़ार रुपया वसूल कर लिया और हम इक़रार करते हैं कि मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद अर्थात् इस लेखक के विजयी सिद्ध होने के समय यह हज़ार रुपया हम अविलम्ब कथित मिर्ज़ा को दे देंगे और रुसुल बाबा का इससे कुछ संबंध न होगा। इस पत्र की इसलिए आवश्यकता है ताकि हमें पूर्णतया सन्तोष हो जाए और समझ लें कि रुपया मध्यस्थों के क़ब्ज़े में आ गया है और ताकि हम इसके बाद मौलवी रुसुल बाबा की पुस्तक के उन्मूलन के लिए व्यस्त हो जाएं और हम बात को संक्षिप्त करने के लिए इस बात पर सहमत हैं कि **शेख़ मुहम्मद हुसैन बत्तालवी** या ऐसा ही कोई ज़हरीला माद्द: रखने वाला फैसला करने के लिए नियुक्त हो जाए। फैसले के लिए यही पर्याप्त होगा कि शेख़ मुहम्मद बत्तालवी मौलवी रुसुल बाबा साहिब की पुस्तक को पढ़कर और इसी प्रकार हमारी पुस्तक को आदि से अन्त तक देख कर एक सार्वजनिक जल्से में क़सम खा जाएं और क़सम की इबारत यह हो कि हे दर्शकगण! ख़ुदा की क़सम मैंने प्रारंभ से अन्त तक दोनों पुस्तकों को देखा और मैं ख़ुदा तआला की क़सम

खाकर कहता हूँ कि वास्तव में मौलवी रुसुल बाबा साहिब की पुस्तक निश्चित और अटल तौर पर हज़रत ईसा का जीवित रहना सिद्ध करती है और जो विरोधी की पुस्तक निकली है उसके उत्तरों से उसके तर्कों का उन्मूलन नहीं हुआ। यदि मैंने झूठ कहा है या मेरे दिल में उसके विरुद्ध कोई बात है तो मैं दुआ करता हूँ कि मुझे एक वर्ष के अन्दर कोढ़ हो जाए या अंधा हो जाऊँ या किसी अन्य बुरे अज़ाब से मर जाऊँ। बस। तब समस्त दर्शकगण तीन बार ऊँची आवाज़ से कहें कि आमीन, आमीन, आमीन और जल्सा समाप्त हो।

फिर यदि एक वर्ष तक वह क़सम खाने वाला इन विपत्तियों से सुरक्षित रहा तो नियुक्त कमेटी मौलवी रुसुल बाबा का हज़ार रुपया सम्मान पूर्वक उसे वापस दे देगी। तब हम भी इक़रार प्रकाशित करेंगे कि वास्तव में मौलवी रुसुल बाबा ने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम का जीवित रहना सिद्ध कर दिया है। परन्तु एक वर्ष तक बहरहाल वह रुपया नियुक्त की गई कमेटी के पास जमा रहेगा और यदि मौलवी रुसुल बाबा साहिब ने इस पुस्तक के प्रकाशित होने से दो सप्ताह तक हज़ार रुपया जमा न करा दिया तो उनका झूठ सिद्ध हो जाएगा। तब प्रत्येक को चाहिए ऐसे झूठ बोलने वाले लोगों की बुराई से ख़ुदा तआला की शरण मांगें और उन से अलग रहें। स्पष्ट रहे कि इस विरोधी गिरोह से हमें सामान्य तौर पर कष्ट पहुंचा है और कोई तिरस्कार तथा अपमान और गाली-गलौच नहीं जो उन से प्रकट नहीं हुआ। जब काफ़िर कहने तथा गालियों से कोई हानि न पहुंचा सके तो फिर बद्-दुआओं की ओर ध्यान दिया और दिन-रात बद्-दुआएं करने लगे। परन्तु ऐसे कंजूसों और बेरहमों की अत्याचार पूर्ण बद्-दुआएं उसके दरबार में क्यों कर स्वीकार हों जो दिलों की गुप्त हालतों को जानता है। अन्ततः जब बद्-दुआओं से भी काम न निकल

सका तो ख़ुदा तआला से निराश होकर अंग्रेज़ी सरकार की ओर झुके और झूठी जासूसियाँ की तथा मनगढ़त पुस्तकें लिखी कि इस व्यक्ति के अस्तित्व से फ़साद की आशंका और जिहाद का भय है। परन्तु यह दक्ष, कुशाग्र बुद्धि तथा वास्तविकता को पहचानने वाली सरकार इतनी नासमझ नहीं थी कि इन चालाक ईर्ष्यालुओं के धोखे में आ जाती। सरकार भली भांति जानती है कि ऐसी आस्थाएं तो इन्हीं लोगों की हैं तथा यही लोग हैं जो सैकड़ों वर्षों से कहते चले आए हैं कि इस्लाम को जिहाद से फैलाना चाहिए। और न केवल इतना ही बल्कि यह भी उनका कथन है कि जब उनका काल्पनिक महदी प्रकट होगा या किसी गुफा में से निकलेगा और उसी समय में उनका काल्पनिक ईसा भी आकाश से उतर कर काफिरों के क़त्ल के लिए तेज़ हथियार अपने साथ ही आकाश से लाएगा। तो दोनों मिलकर संसार के समस्त काफिरों को क़त्ल कर डालेंगे और जिस ने इस्लाम से इन्कार किया चाहे वह यहुदियों में से हो अथवा ईसाइयों में से वह तलवार से क़त्ल कर दिया जाएगा। ये उन लोगों की पक्की आस्थाएं हैं यदि सन्देह हो तो किसी मौलवी का अदालत में शपथ पूर्वक बयान लिया जाए ताकि अदालत पर स्पष्ट हो जाए कि क्या वास्तव में इन लोगों की यही आस्थाएं हैं। या हम ने वर्णन करने में ग़लती की है।

परन्तु हम सरकार को बुलन्द आवाज़ से सूचना देते हैं कि इस युग में युद्ध और जिहाद से इस्लाम को फैलाना हमारी आस्था नहीं है और न यह आस्था कि जिस सरकार की छत्र-छाया में रहे और उसकी सहायता की छाया में अमन और सुरक्षा का लाभ प्राप्त करें और उसकी शरण में रहकर दिल की प्रसन्नता के साथ प्रचार कर सकें उसी से विद्रोहियों के समान लड़ना आरंभ कर दें। क्या इस अंग्रेजी सरकार में हम अमन

और कुशलतापूर्वक जीवन व्यतीत नहीं करते? क्या हम अपनी इच्छानुसार धर्म का प्रसार नहीं कर सकते? क्या हम धार्मिक आदेशों को पूर्ण करने से रोके गए हैं? हरगिज़ नहीं बल्कि सच और बिल्कुल सच यह बात है कि हम जिस कोशिश (प्रयास) और आज़ादी से इस्लामी उपदेश और नसीहतें बाज़ारों में, कूचों में, गलियों में, इस देश में कर सकते हैं और प्रत्येक क़ौम को सच्चाई पहुंचा सकते हैं ये समस्त सेवाएं पवित्र मक्का में भी पूर्ण नहीं कर सकते, कहाँ यह किसी अन्य स्थान पर। तो क्या इस नेमत का धन्यवाद करना हम पर अनिवार्य है या यह कि ग़दर और विद्रोह आरंभ कर दें।

फिर यद्यपि हम धर्म की दृष्टि से इस सरकार को बड़ी ग़लती पर समझते और एक लज्जाजनक आस्था में ग्रस्त देख रहे हैं फिर भी हमारे नज़दीक यह बात बड़े गुनाह (पाप) और व्यभिचार में सम्मिलित है कि ऐसे उपकारी के मुक़ाबले पर विद्रोह का विचार भी दिल में लाएं। हाँ निस्सन्देह हम धर्मानुसार इस क़ौम को स्पष्ट ग़लती पर और एक मानवीय बनावट में ग्रस्त देखते हैं। तो इस स्थिति में हम दुआ और ध्यान से उसका सुधार चाहते हैं और ख़ुदा तआला से मांगते हैं कि इस क़ौम की आँखें खोले और इनके दिलों को प्रकाशमान करे तथा इन्हें ज्ञात हो कि इन्सान की उपासना करना बहुत बड़ा अन्याय है। हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम क्या हैं केवल एक निराश्रय मनुष्य। यदि ख़ुदा तआला चाहे तो एक क्षण में ऐसे करोड़ों बल्कि उनसे हज़ारों गुना उत्तम पैदा कर दे, वह हर चीज़ पर सामर्थ्यवान है जो चाहता है करता है और कर रहा है। मुठ्ठी भर मिट्टी को प्रकाशमान करना उसके नज़दीक कुछ वास्तविकता नहीं। जो व्यक्ति साफ दिल और पूर्ण प्रेम से उसकी ओर आएगा निस्सन्देह वह

उसे अपने विशेष बन्दों में शामिल कर लेगा। मनुष्य सानिध्य (क़ुर्ब) की श्रेणियों में कहां तक पहुंच सकता है इसका कुछ अन्त भी है। हरगिज़ नहीं। हे मुर्दों के उपासको ख़ुदा मौजूद है यदि उसे ढूंढोगे पाओगे। यदि सच्चाई के अनुयायियों के साथ चलोगे तो अवश्य पहुंचोगे। यह नामर्दों और नपुंसकों का काम है कि मनुष्य होकर अपने जैसे मनुष्य की उपासना करना। यदि एक को गुणवान समझते हो तो कोशिश करो कि वैसे ही हो जाओ न यह कि उसकी उपासना करो। किन्तु वह इन्सान जिसने अपने अस्तित्व से, अपनी विशेषताओं से, अपने कार्यों से और अपनी रूहानी एवं पवित्र शक्तियों के शक्तिशाली दरिया से पूर्ण कमाल का नमूना ज्ञान, कर्म, सच्चाई और दृढ़ता की दृष्टि से दिखलाया और पूर्ण इन्सान (इन्सान-ए-कामिल) कहलाया ख़ुदा तआला की क़सम वह मसीह इब्ने मरयम नहीं है। मसीह तो केवल एक मामूली सा नबी था। हाँ वह भी करोड़ों सानिध्य प्राप्त (मुकर्रबों) में से एक था। परन्तु उस सामन्य गिरोह में से एक था और मामूली था इस से अधिक न था। अत: इस से देख लो कि इंजील में लिखा है कि वह यह्या नबी का मुरीद था और शिष्यों की तरह बपतस्मा पाया।

वह केवल एक क़ौम विशेष के लिए आया और अफ़सोस कि उसके अस्तित्व से संसार को कोई भी रूहानी लाभ न पहुंच सका। संसार में एक ऐसी नुबुव्वत का नमूना छोड़ गया जिसकी हानी उसके लाभ से अधिक सिद्ध हुई। उसके आने से आज़मायश और उपद्रव बढ़ गया और संसार के एक बड़े भाग ने तबाही का भाग ले लिया। परन्तु इसमें सन्देह नहीं कि वह सच्चा नबी तथा ख़ुदा तआला के सानिध्य प्राप्त (लोगों) में से था। किन्तु वह इन्सान जो सर्वाधिक पूर्ण और कामिल इन्सान था तथा कामिल नबी था और कामिल (पूर्ण) बरकतों के साथ आया,

जिस से रूहानी अवतरण और प्रलय में मुर्दों का जी उठने के कारण पहली क़यामत प्रकट हुई और उस के आने से एक मरा हुआ संसार जीवित हो गया। **वह मुबारक नबी हज़रत ख़ातमुल-अंबिया इमामुल अस्फ़िया खतमुल मुर्सलीन फ़ख़रुन्नबिय्यीन जनाब मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।** हे प्यारे ख़ुदा! इस प्यारे नबी पर वह रहमत और दरूद भेज जो संसार के प्रारंभ से तूने किसी पर न भेजा हो। यदि यह महान नबी संसार में न आता तो फिर जितने छोटे-छोटे नबी आए जैसे कि यूनुस, अय्यूब, मसीह इब्ने मरयम, मलाकी यह्या और ज़करिया इत्यादि-इत्यादि उनकी सच्चाई पर हमारे पास कोई भी प्रमाण नहीं था यद्यपि सब सानिध्य प्राप्त (मुक़र्रब), रूपवान और ख़ुदा तआला के प्रिय थे। यह उस नबी का उपकार है कि ये लोग भी संसार में सच्चे समझे गए।

اللھم صل وسلم وبارك علیه وآله
واصحابه اجمعین
وآخر دعوانا ان الحمدلله رب العلمین

★ ★ ★

اَلْوَصِيَّةُ لِلّٰهِ لِقَوْمٍ لَا يَعْلَمُوْنَ

أيها العلماء والمشايخ والفقهاء إنى رأيت تَعاميَكم فى مصنّفاتكم، فتأجج قلبى لجهلا تكم إنكم تسيرون فى المَعامى، ولا تخافون جَوْبَ الحوامىْ وإنى عِفْتُ أن أفصّل حالاتكم، وأبيّن مقالاتكم أتعاميتم مع سلامة البصر، وتجاهلتم مع العلم والخبر؟ كان عندكم العقل والفهم الصافى، ولكن النفس صارت ثالثة الإثافى إنّ حبّ العَين سلَب عينَيكم، والطمع فى كرم الناس محَق كريمتَيكم أَقَرَأْتم العلومَ للقِرى، وتعلّمتم

अज्ञानियों के लिए ख़ुदा की ख़ातिर नसीहत

हे उलेमा, शेख़ और धर्म शास्त्र के विद्वानों! मुझे तुम्हारी लिखी हुई पुस्तकों में तुम्हारा अंधापन दिखाई दिया तो तुम्हारी मूर्खतापूर्ण बातों के कारण मेरे दिल में आग भड़क उठी तुम अंधे मार्गों पर चलते हो और खतरों में घुसने से नहीं डरते हो। मैं तुम्हारा कच्चा चिट्ठा खोलने तथा तुम्हारी बातों को विस्तारपूर्वक वर्णन करने से रुका रहा। क्या तुम सही और सुरक्षित आँखें रखते हुए भी अंधे बन रहे हो और जान-बूझ कर अनजान बनने से काम ले रहे हो। तुम्हारे पास साफ और पारदर्शी बुद्धि और समझ मौजूद थी परन्तु दिल है कि हर प्रकार की बुराई का लक्ष्य स्थान बन गया है। धन-दौलत के प्रेम ने तुम्हें अंधा कर दिया तथा तुम्हारी आंखों को बेनूर कर दिया। क्या तुमने दावतें उड़ाने के लिए

لرُغفان القُرىٰ؟ وباعدتم عن الإخلاص الذى هو شعار الانبياء وحلية الاولياء تركتم الشريعة واتّبعتم النفس الدنيّة، وصرتم قوما خاسرين أكلتم الدنيا بأنواع الدقاقير، وما نجا مِن فخّكم أحدٌ من القبيل والدبير طورًا تلدغون فى حلل العِظات، وأخرى بالكَلِم المحفِظات وأَجِدُ فيكم ما يَسِمُ بالإخلاق، وما أجد شيئا من محاسن الاخلاق فإنّا لله على مصيبة الإسلام، وإمحالِ رياض خير الانام وإنّا نكتب قصّتكم متجرّعًا بالغصص، ومتورّعا من مبالغات القِصص إنكم جعلتم الإسلام مَصْطَبة المقيّفين، أو خانَ المدروزين

विद्याएं पढ़ी थीं? और गांव की रोटियों के टुकड़ों की खातिर शिक्षा प्राप्त की थी? तुम उस इख्लास (निष्कपटता) से दूर जा पड़े हो जो नबियों का आचरण और वलियों का ढंग है। तुम ने शरीअत छोड़ दी और घटिया नफ्स का अनुकरण करने लग गए तथा एक घाटा पाने वाली क़ौम बन गए। विभिन्न प्रकार के झूठ बोलकर तुम ने संसार को खाया और कोई छोटा-बड़ा तुम्हारे जाल से बच न सका। कभी तुम नसीहतों का लिबास पहन कर और कभी गुस्सा दिलाने वाली बातें करके (लोगों को) डसते हो। मैं तुम में वे (आदतें) पाता हूँ जो शिष्टाचार को धब्बा लगाती हैं परन्तु मैं उनमें उत्तम शिष्टाचार की थोड़ी सी संभावना तक नहीं पाता। अत: इस्लाम के इस कष्ट और (हज़रत) खैरुल अनाम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के उद्यान की वीरानी (उजाड़) पर केवल इन्ना लिल्लाह ही कहा जा सकता है। शोक के गला पकड़ने वाले घूंट पीकर और बढ़ा चढ़ा कर वर्णन किए हुए क़िस्सों से बचते हुए हम तुम्हारी

والمُشَقْشِقين اتقوا الله ويوم الاهوال، وحلولَ الآفات وتغيُّرَ الاحوال، واذكروا الحِمام ومساورة الإعلال، وفضوح الآخرة وسوء المآل واتركوا الكِبر والعُجب والخيلاء، فإنها لا يزيدكم إلا الغطاء ولا تصحّ صفة العبودية إلا بعد ذوبان جذبات الحيّة، أعنى هوى النفس الذى هو على بحر السلوك كزبدٍ، فلا تُطيعوا الزبد كعبد، واطلبوا بحر ماء معين

واعلم يا طالِبَ الحقّ الاهمّ أن علماء السوء ما يخرجون من الفم هو أضرّ على الناس من السمّ، ومِن كلّ بلاء يوجد على وجه الارضين، فإن السموم

कहानी लिख रहे हैं। तुम ने इस्लाम को चेहरा देखकर हाल बता देने वालों का लक्ष्य और घटिया तथा डींगे मारने वालों की सराय बना दिया है। इसलिए भयंकर घड़ी से, आपदाओं के उतरने से और परिवर्तित होती परिस्थितियों में अल्लाह से डरो। मौत और बीमारी के हमले तथा आख़िरत के अपमान और बुरे परिणाम को याद रखो। अभिमान, स्वयं को सबसे अच्छा समझना और अहंकार को त्याग दो क्योंकि ये चीज़ें तुम्हें अंधेरों में ही बढ़ाएंगी। बन्दगी की विशेषता, शैतानी भावनाएं अर्थात् काम वासना संबंधी इच्छाओं के पिघलने के बाद ही पूर्ण होती है। कामवासना संबंधी इच्छाएं साधना रूपी समुद्र पर झाग के समान है। तुम एक दास की तरह इस झाग के आज्ञाकारी न बनो और एक मधुर एवं शुद्ध पानी के समुद्र की खोज में रहो।

हे अहम सच्चाई की खोज करने वाले! याद रख कि बुरे उलेमा के मुंह से निकली हुईं बातें लोगों के लिए ज़हर और पृथ्वी पर पाई

إذا أضرّت فلا تضرّ إلا الاجسام، وأما كلامهم فيضرّ الارواح ويُهلك العوام، بل ضررهم أشد وأكثر من إبليس اللعين يلبسون الحق بالباطل، ويسلّون سيوف المكر كالقاتل، ويُصرّون على كلمات خرجت من أفواههم وإن كانوا على خطأ مبين فاستعِذْ بالله منهم ومن كلماتهم، واجتنِبْهم وجهلاتهم، وكن مع العلماء الصادقين ولا تضحك على مواجيد الاولياء، والاسرار التى كُشفت على تلك الاصفياء، فإنهم مظاهر نور الله وينابيع ربّ العالمين واعلم أنهم قوم صادقون فى الاحوال، والمحفوظون فى الافعال والاعمال، ويُعلَّمون

जाने वाली हर विपदा से अधिक हानिप्रद है। क्योंकि ज़हर जब भी हानि पहुंचाते हैं तो केवल शरीरों को हानि पहुंचाते हैं परन्तु इनका कलाम रूहों को हानि पहुंचाता और जनसामान्य को मारता है बल्कि इनकी हानि लानती इबलीस से भी अधिक दुष्कर और बढ़कर होती है। वे सत्य को असत्य से मिलाते हैं और एक क़त्ल करने वाले की तरह छल की तलवारें सूंतते हैं और अपने मुंह से निकली हुई बातों पर हठ करते हैं चाहे वे स्पष्ट ग़लती पर हों। अत: उनसे और उनकी बातों से ख़ुदा की शरण (पनाह) मांग तथा उनसे और उनकी मूर्खतापूर्ण बातों से अलग रह। और सच्चे उलेमा के साथ हो जा तथा वलियों की अन्तरात्मिक अवस्था (विज्दानी कैफ़ियत) और उन रहस्यों पर जो उन वालियों पर प्रकट किए जाते हैं हंसी-ठट्ठा न कर, क्योंकि ये लोग अल्लाह के प्रकाश के द्योतक और समस्त लोकों के रब्ब के झरने होते हैं। जान लो कि ये लोग समस्त परिस्तिथियों में सच्चे और समस्त कार्यों

مـن أشـياء لا يعلمهـا عقـل العلمـاء، و يُعطَـون مـن علـم لا يُعطَـى مثـله أحـدٌ مـن العقـلاء فـلا يُنكرهـم إلا الذى فيـه بقيّـة مـن مـسّ الشـيطان، و أثـرٌ مـن آثـار الجـانّ، و لا يكفّرهـم إلا الاعمـى الذى ليـس همّـه إلا تكفـير الصالحـين ألا إن لله عبـادًا يحبّـهم و يحبّونـه، آثرَهـم و مـلاء قلوبـهم مِـن حبّـه و حـبّ مرضاتـه، فنسـوا أنفسـهم اسـتغراقا فى محبّـة ذاتـه و صفاتـه، فـلا تُعلِّـق همّتـك بإيـذاء قـومٍ لا تعرفـهم و منازلـهم، و إنّـك لا تنظـر إليـهم إلا كعمـين إنـهم خرجـوا مِـن خلـقٍ كان مشـابِهَ خلـقِ و جـودِك، و سـعوا إلى مقـام أعـلى

एवं कर्मों में मासूम होते हैं। इन्हें चीज़ों (के मर्म) का ऐसा ज्ञान दिया जाता है जिसे उलेमा की बुद्धि ज्ञात नहीं कर सकती। इन्हें वह ज्ञान प्रदान किया जाता है कि किसी बुद्धिमान को वैसा ज्ञान प्रदान नहीं किया जाता। उनका इन्कार केवल वही व्यक्ति कर सकता है जिसमें शैतान के स्पर्श का कुछ भाग तथा जिन्नों के प्रभावों में से कोई प्रभाव हो, और वही अंधा उन्हें काफ़िर ठहराता है जिसका काम उन सदाचारी लोगों को केवल काफ़िर ठहराना है। सुनो! कि अल्लाह तआला के ऐसे बन्दे हैं जिनसे वह प्रेम करता है और वे उससे प्रेम करते हैं। अल्लाह ने उन्हें श्रेष्ठता दी है और उनके दिलों को अपने प्रेम तथा अपनी प्रसन्नता के प्रेम से भर दिया है। अत: स्रष्टा (खालिक़) के अस्तित्व और उसकी विशेषताओं में आसक्त होने के कारण वे स्वयं को बिल्कुल भुला बैठे हैं। इसलिए तू ऐसे लोगों को कष्ट पहुंचाने का प्रयत्न न कर कि जिनके इर्फान और महत्व का तुझे ज्ञान नहीं। और तू तो वह है जो उनकी तरफ केवल अंधों के समान देखता है। वे ऐसे सृजन (उत्पत्ति)

وتباعدوا عن حدودك، ووصلوا مكانا لا تصل إليها أنظارك، ولا تدركها أفكارك، ونزلوا بمنزلة لا يعلمها إلا ربّ العالمين فلا تدخل فی أقوالهم كمجترئين، ولا تتحرك بسوء الظنون وقلة الادب معهم كالمعتدين، فيعاديك ربك وتلحق بالخاسرين فإيّاك يا أخی أن تقع فی ورطة الإنكار، وتلحق بالاشرار، وتهلك مع الهالكين واعلم أن كتاب الله الرحمٰن، كسبعةِ أبحرٍ من أنواع نكات العرفان، يشرب منها كل طير بوسع منقاره، ويختار حقيرًا ولا يشرب إلا قدرا يسيرا والّذين وسَّع مَداركَهم

से श्रेष्ठ हैं जो तेरे अस्तित्व की उत्पत्ति के समान है। वे उच्चतम स्थान की ओर प्रयासरत रहे और तेरी सीमाओं से ऊपर हो गए और ऐसे स्थान पर जा पहुंचे जहां तेरी नज़रों की पहुंच नहीं और न ही तेरे विचारों को उसकी समझ है। वे ऐसे बुलंद मुक़ाम पर आसीन हैं जिसको केवल समस्त लोकों का प्रति पालक ही जानता है। इसलिए तू उनकी बातों में धृष्ट लोगों के समान हस्तक्षेप न कर और न ही उनके साथ सीमा से बाहर जाने वालों के समान कुधारणा एवं असभ्यता का व्यवहार कर अन्यथा तेरा रब्ब तेरा शत्रु हो जाएगा और तू हानि उठाने वालों में सम्मिलित हो जाएगा। इसलिए हे मेरे भाई! इन्कार के भंवर में पड़ने और बुरे लोगों में सम्मिलित होने तथा तबाह होने वालों के साथ तबाह होने से बच और जान ले कि रहमान ख़ुदा की किताब (पवित्र क़ुर्आन) भिन्न-भिन्न प्रकार के इर्फान के रहस्यों के साथ समुद्रों के समान है जिसमें से हर पक्षी अपनी चोंच की क्षमता के अनुसार सैराब होता है और मामूली सा लेता है और थोड़ी सी मात्रा में पीता है। परन्तु वे लोग

عنايـاتُ ربـهم، فيشـربون مـائً كثـيرا وهـم أوليـاء الرحمٰـن وأحبّـاء أحسـن الخالقـين يهُـبُّ عـلى قلوبـهم نفحـاتٌ إلٰهيـة، فيتعـالىٰ كلامـهم، فيجهـله عقـول الذيـن ليسـوا مـن العارفـين والذيـن يُعطَـون أفعـالا خارقـة للعـادة، وأعمـالا متعاليـةً عـن طـور العقـل والفكـر والإرادة، فـلا تعجـب مـن أن يُعطـوا كلمـاتٍ، ورُزقـوا مـن نـكات تعجـز العلمـاء عـن فهمهـا، فـلا تنهَـضْ كالمسـتعجلين وإن كنـت مـن الذيـن أراد الله بـهم خـيرًا، فبـادِرْ و سِـرْ إليـهم سـيرًا،

जिनकी योग्यताओं को उनके रब्ब की अनुकंपाओं (इनायत) ने विस्तार प्रदान किया है तो वे यह पानी प्रचुरता से पीते हैं। वे रहमान (ख़ुदा) के वलियों और स्रष्टाओं में सर्वश्रेष्ठ स्रष्टा के प्रिय हैं उनके दिलों पर अल्लाह की सुगंधित हवाएं चलती हैं जिससे उनका कलाम (वाणी) महान हो जाता है अत: वे लोग जो आरिफ़ (अध्यात्म ज्ञानी) नहीं होते उनकी अक्लें उससे अपरिचित कार्यों तथा बुद्धि एवं विचार और विवेक से श्रेष्ठ कार्य प्रदान किए जाते हैं। यदि उन्हें ऐसे (हिकमत के) वाक्य और (मारिफ़त के) रहस्य प्रदान किए जाएं जिनके समझने से उलेमा असमर्थ हो जाएँ तो उन पर तू आश्चर्य न कर। तू जल्दबाज़ों की तरह मुक़ाबले के लिए खड़ा न हो। और यदि तू उन लोगों में से है जिनसे अल्लाह भलाई का इरादा रखता है तो तू तुरन्त उनके पास चल कर जा और झूठ और कष्ट देने को छोड़ तथा सतर्कता और सावधानी करने वालों में से हो जा और कितने ही अद्भुत बल्कि क्रोधित करने वाले वाक्य हैं जो ख़ुदा के वलियों के मुंह से इल्हाम के तौर पर जारी होते हैं उस ख़ुदा की ओर से जो मुल्हमों का समर्थक है वे केवल अल्लाह

ودَعْ زورًا وضيرًا، وكن من الحازمين وكم من كلمات نادرات بل محفظات، تخرج من أفواه أهل الله إلهامًا من الله الذى هو مؤيّد الملهَمين، فينهضون لله ويُبلّغونها ويُشيعونها، فتكون سببَ مرضاة الله كهفِ المأمورين ثم تلك الكلمات بعينها بغير تغيير وتبديل تخرُج مِن فمٍ آخر، فيصير قائلها من الذين تركوا الأدب واجترء واوصاروا من الفاسقين فتأدَّبْ مع أهل الله ولا تعجَلْ عليهم ببعض كلماتهم وإن لهم نيّاتٍ لا تعرفها، وإنهم لا

के लिए कमर कस लेते हैं। और उन बातों को प्रचार और प्रसार करते हैं। अत: वे बातें ख़ुदा तआला को प्रसन्न करने के कारण मामुरों की शरण होती हैं फिर बिल्कुल यही बातें बिना किसी परिवर्तन के दूसरे व्यक्ति के मुंह से निकलती हैं तो उन बातों का कहने वाला उन लोगों में से हो जाता है, जिन्होंने सम्मान की सीमा को त्याग दिया है और धृष्टता धारण करता और पापियों में से हो जाता है। अत: ख़ुदा के वलियों के साथ सम्मान पूर्वक व्यवहार कर और उनकी कुछ बातों के कारण उनके विरुद्ध जल्दी मत कर। क्योंकि उन (ख़ुदा के वलियों) की नीयतें ऐसी हैं जिन से तू अपरिचित है। वे केवल और केवल अपने रब्ब के संकेत से बातचीत करते हैं। तू अपने आप को धृष्ट लोगों की तरह तबाह न कर। उनकी वह महान प्रतिष्ठा होती है जिसे सामन्य मनुष्य समझ नहीं सकता। फिर भला तेरे जैसा उपद्रवी मनुष्य क्या समझेगा? उन्हें तो वही समझ सकता है जो उनके पंथ पर चला हो और उसने वही स्वाद चखा हो जो उन्होंने चखा हुआ है और उनके कूचों में प्रवेश कर चुका हो। तू इस्लाम के शेखों और युग के प्रमुख

ينطقون إلا بإشارة ربّهم، فلا تُهلك نفسك كالمجترئين لهم شأن لا يفهمه إنسان، فكيف مِثلك فتّان، إلا مَن سلك مسلكهم، وذاق مذاقهم، ودخل فى سِككهم، فلا تنظرْ إلى وجوه مشايخ الإسلام و كبراء الزمان، فإنهم وجوه خالية من نور الرحمٰن، ومِن زىّ العاشقين ولا تحسب كلمات المحدَّثين المكلَّمين ككلماتك أو كلمات أمثالك من المتعسّفين فإنها خرجت من أنفاس طيّبة، ونفوس مطهَّرة مُلهَمة، وهى قريب العهد من الله تعالٰى كثمرٍ غضٍّ طريٍّ أُخذ الآن من شجرة مباركة للآكلين

लोगों के चेहरों को न देख, क्योंकि वे चेहरे कृपालु ख़ुदा के प्रकाश और प्रेमियों के आचरण से ख़ाली हैं। और तू ख़ुदा से वार्तालाप एवं संबोधन का सम्मान पाने वाले मुहद्दसों की बातों को अपने और अपने जैसे गुमराह लोगों की बातों की तरह मत समझ। क्योंकि उनकी बातें पवित्र सांसों और इल्हाम प्राप्त पवित्र दिलों से निकलती हैं। अल्लाह की ओर से नई-नई मिलने वाली ये बातें उन तरोताज़ा फलों के समान हैं जो खाने वालों के लिए मुबारक वृक्ष से अभी-अभी प्राप्त किए गए हों। लोग जब इनकी कोमल, बारीक और बुद्धिमत्ता पूर्ण ख़ुदाई बातों को समझ नहीं पाते तो वे इन (ख़ुदा के वलियों) को पापियों, नास्तिकों, काफ़िरों तथा कामवासना संबंधी इच्छाएं रखने वालों से सम्बद्ध कर देते हैं। अत: अफ़सोस है उनपर और उनकी रायों पर। यदि इस (आचरण) से रुकते हुए उन्होंने तौबा और रुजू न किया तो वे अवश्य तबाह होंगे। सुशील लोग क़ालीब (प्रत्यक्ष) से क़ल्ब (आन्तरिक) की ओर स्थानांतरित होते हैं परन्तु ये लोग तो क़ल्ब से क़ालिब की ओर स्थानांतरित हो चुकें

والقوم لما لم يفهموا كلمات لطيفة دقيقة حِكَميّة إلٰهيّة، فعزَوا أهلها إلى الفُسّاق والزنادقة والكفّار وأهل الاهواء فياحسرة عليهم وعلى تلك الآراء، إنهم قد هلكوا إن لم يتوبوا ولم يرجعوا منتهين والاحرار ينتقلون من القالب إلى القلب، وهم انتقلوا من القلب إلى القالب، ونبذوا كل ما علموا وراء ظهورهم للبخل الغالب، فأصبحوا كقِشرٍ لا لُبَّ فيه وأكلوا الجيفة كالثعالب، وكفّروني ولعنوني من غير علم ليستروا الامر على الطالب، وقالوا كافر كذّاب، واتبعوا دأب

हैं और उन्होंने अपनी अत्यधिक कंजूसी के कारण अपने ज्ञान को पीठ-पीछे डाल दिया है। तो वे उस छिलके की तरह हो गए जिसमें गूदा न हो और उन्होंने लोमड़ियों के समान मुर्दार (मरा हुआ पशु) खाया। और उन्होंने बिना जानकारी के मुझे काफ़िर ठहराया, मुझे लानती ठहराया ताकि वे इस मामले पर सत्याभिलाषी के लिए पर्दा डाल दें। और उन्होंने कहा काफ़िर है, महा झूठा है। उन्होंने अपने से पहले गुज़रे हुए तबाहशुदा लोगों का आचरण अपनाया। इस से पूर्व वे यह कहा करते थे कि कोई व्यक्ति उन मतभेदों के कारण जिनमें क़ुर्आन की शिक्षा का इन्कार न हो, ईमान के दायरे से बाहर नहीं होता और कुफ़्र का आदेश केवल उस पर चरितार्थ होता है जो स्पष्ट तौर पर कुफ़्र को व्यक्त करे और कुफ़्र को बतौर धर्म अपनाए, सामर्थ्यवान ख़ुदा के धर्म का इन्कार करे तथा कलिमा-ए-शहादत का कमीने शत्रुओं की तरह इन्कार करे और वह इस्लाम धर्म से निकल गया हो तथा मुर्तद हो गया हो। उन लोगों ने यह कहा कि यदि हम इस व्यक्ति में कोई भलाई देखते या धर्म की

الذين خلوا من قبلهم من أهل التباب و كانوا يقولون من قبل إنّ رجلا لا يخرج من الإيمان باختلافاتٍ ليس فيها إنكار تعليم القرآن، و إنما الحُكم بالتكفير لمن صرّح بالكفر و اختاره دينا، و أنكر دين الله القدير و جحد بالشهادتين كالاعداء اللئام، و خرج عن دين الإسلام، و صار من المرتدّين و قالوا لو رأينا في هذا الرجل خيرا أو رائحةً من الدّين ما كفّرنا و ما كذّبنا و ما تصدّينا للتوهين كلا، بل قسَتْ قلوبهم من الإصرار على الإنكار، و دعاوى الرياء و فتاوى الاستكبار، فطبع عليها طابع و ما وُفِّقوا أن يرجعوا مع الراجعين و لو

थोड़ी सी जान पाते तो हम उसे काफ़िर न ठहराते और न ही झुठलाते और उसके अपमान के पीछे न पड़ते। हरगिज़ नहीं बल्कि उनके दिल इन्कार पर हठ करने और दिखावे के दावों तथा अहंकारपूर्ण फ़त्वों के कारण कठोर हो चुके हैं। अत: मुहर लगाने वाले ने उनके दिलों पर मुहर लगा दी और उन्हें यह तौफ़ीक़ न मिली कि वे लौटने वालों के साथ लौटते। और यदि अल्लाह की इच्छा होती तो वह उनकी स्थितियों को ठीक कर देता और उनके कलाम को पवित्र बना देता तथा उन्हें अपनी ओर खींचता और उन्हें उनकी गुमराही दिखा देता, किन्तु वे टेढ़ी चाल चलने लगे और अपने दोषों को प्रिय जाना, जिसके कारण उन पर अल्लाह का प्रकोप उतरा। उसने उनके दिलों को टेढ़ा कर दिया और उन्हें अंधकारों में छोड़ दिया, उन्हें बहरों और अंधों की तरह कर दिया। हे जल्दबाज़! अल्लाह का संयम धारण कर और अत्यधिक प्रेम करने वाले ख़ुदा के वलियों से डर। तेरा डर ऐसा न हो जो शेरों से

شاء الله لإصلاح بالهم وطهّر مقالهم، وجذبهم وأراهم ضلالهم، ولكنهم زاغوا وأحبّوا عيوبهم، فغضب الله عليهم وأزاغ قلوبهم، وتركهم في ظلمات، وجعلهم كصُمٍّ وعمين أيها العَجول، اتق الله وخَفْ أولياء الله الودود، ولا خَوْفَك من الاسود، وإذا رأيتَ رجلا تبتّلَ إلى الله، وما بقي له شيء يشغله عن ربّه، فلا تتكلم فيه ولا تجترء على سبّه، أتحارب الله يا مسكين، أو تقتل نفسك كالمجانين؟ واعلم أن أولياء الرحمن يُطرَدون ويُلعنَون ويُكفَّرون في أوائل الزمان، ويقال فيهم كل كلمة شرّ، ويسمعون من قولهم كل الهذيان، ويسمعون أذًى كثيرا

होता है। जब तू किसी संसार से विरक्त व्यक्ति को ख़ुदा की ओर देखे जिसे कोई चीज़ अपने रब्ब से लापरवाह न करे तो उसके बारे में बाल की खाल न निकाल और उसे गाली देने का साहस न कर। हे विवश इन्सान! क्या तू अल्लाह से युद्ध करेगा या पागलों की तरह स्वयं को मारेगा? जान ले कि आरंभ में ख़ुदा के वलियों को धिक्कारा जाता है, उन पर लानतें डाली जाती हैं, उनको काफ़िर कहा जाता है और उनके बारे में हर प्रकार की बुरी बातें की जाती हैं तथा यह उन लोगों से हर प्रकार की बकवास और अपनी क़ौम तथा शत्रुओं से कष्ट दायक बातें सुनते हैं। और ये उनको सब लोगों से अधिक मूर्ख और सर्वाधिक गुमराह (प्रथभ्रष्ट) नाम रखते हैं हालांकि वे अध्यात्म ज्ञानी और अहले इर्फान होते हैं। वे उनका नाम दज्जाल और शैतान के बन्दे रखते हैं। फिर अल्लाह परस्थितियों को उनके पक्ष में पलटा देता है और उनकी सहायता एवं समर्थन किया जाने लगता है तथा जो कुछ उनके बारे में

من قومهم ومن أهل العدوان، ويسمّونهم أجهلَ الناس وأضلّ الناس، مع كونهم من أهل العارفة والعرفان، ويسمّونهم دجّالين وعَبَدة الشيطان؛ ثم يجعل الله الكرّةَ لهم، ويُؤيَّدون ويُنصَرون ويُبرَّأون مما يقولون، ويأتيهم الدولةُ والنصرة من عند الله في آخر أمرهم من الله المنّان، وكذلك جرت عادة الله الديّان، أنه يجعل العاقبة للمتّقين وإذا جاء نصره فترى قلوب الناس كأنها خُلقت خلقًا جديدا، وبُدِّلت تبديلا شديدا، وترى الارض مخضرّة بعد موتها، والعقول سليمة بعد سخافتها، والاذهان صافية والصدور مطهّرة بإذن قادرٍ قيّومٍ ومُعين فيسعون إليهم

कहा जाता है उससे वे बरी किए जाते हैं और बहुत उपकारी ख़ुदा की ओर से अन्तत: उनके पास विजय और ख़ुदा की सहायता आती है इसी प्रकार न्याय करने वाले अल्लाह की सुन्नत जारी है कि वह संयमियों का अंजाम अच्छा करता है। और जब उसकी सहायता आएगी तो तू देखेगा कि जैसे लोगों के दिलों को एक नया जन्म दिया गया है और उनमें स्पष्ट परिवर्तन पैदा कर दिया गया है और तू सामर्थ्यवान, सदैव क़ायम रहने वाले तथा सहायता करने वाले ख़ुदा के आदेश से पृथ्वी को बंजर होने के बाद हरी भरी और तरोताज़ा, अक़्लों को कमज़ोरी के बाद सही-स्वस्थ और मस्तिष्कों को साफ़ और दिलों को पवित्र होते देखेगा। इस पर विरोध करने वाले अपने शत्रुपूर्ण दौर पर लज्जित होते हुए प्रेम और मुहब्बत से उनकी ओर दौड़े चले आते हैं और रो-रो कर उनकी प्रशंसा करते हैं यह कहते हुए कि हमने तौबा की। अत: हे हमारे रब्ब! तू हमें क्षमा कर दे, हम निस्सन्देह गुनाहगार थे और उसके

بالمحبّة والوداد، نادمين من أيام العناد، ويُثنون عليهم باكين قائلين إنّا تُبنا فاغفر لنا ربّنا إنّا كنّا خاطئين، ومن يرحم إلا هو وهو أرحم الراحمين هذا مآل الذين سُعدوا وفُتحت أعينهم وجُذبوا، وأمّا الذين شقوا فلا يرون حتى يُرَدّون إلى عذاب مهين رب أَرِنا أيامَك، وصدِّقْ كلامك، وفرِّجْ كرباتِنا، واغفِرْ زلّاتِنا، وارْضَ عنّا وتعال على ميقاتنا، وانصرنا على القوم الكافرين وصلِّ وسلِّمْ وبارِكْ على رسولكَ خاتم النبيين آمين ربنا آمين

★ ★ ★

अतिरिक्त कौन दया करता है और वही समस्त दयालुओं से अधिक दयालु है, यह अंजाम है उन लोगों का जो भाग्यशाली हैं और जिनकी आँखें खोल दी हैं और वे (अल्लाह की ओर) खींचे गए। हां यद्यपि वे लोग जो अभागे ठहराए गए वे उस समय तक (वास्तविकताओं को) देख नहीं पाएंगे यहां तक कि वे अपमानजनक अज़ाब की ओर न लौटाए जाएं। हे हमारे रब्ब! तू हमें अपने दिन दिखा और अपने कलाम को सच्चा कर तथा हमारे कष्टों को दूर कर और हमारी ग़लतियों को क्षमा कर दे और हम से प्रसन्न हो जा और हमारे साथ किए हुए वादे पूरे करने के लिए आ और काफ़िर क़ौम के विरुद्ध हमारी सहायता कर और दरूद तथा सलामती भेज और अपने रसूल ख़ातमुन्नबिय्यीन पर बरकतें भेज। आमीन हे हमारे रब्ब आमीन।

★ ★ ★